क़ुरआन का रास्ता

ख़ुर्रम मुराद

आपकी ज़िन्दगी के लिए

क़ुरआन का मार्ग

ख़ुर्रम मुराद

अल हसनात बुक्स प्रा० लि०

Aapki Zindaki Ke Liye

QURAN KA MARG

(Khurram Murad)

ISBN: 978-93-80352-09-1

संस्करण 2013

प्रकाशक:

ए० एम० फ़हीम

अल हसनात बुक्स प्रा० लि०

3004/2, सर सय्यद अहमद रोड
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

TeL: 011-23271845,011-41563256

E-mail:alhasanatbooks@rediffmail.com
faisalfaheem@rediffmail.com

मुद्रक
एच० एम० ऑफसेट प्रेस
दरिया गंज नई दिल्ली-2

मूल्य:
₹ 100/-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَنِ اشْكُرْلِىْ وَلِوَالِدَيْكَ ط (لقمان ۱۴:۳۱)

मेरे शुक्रगुज़ार रहो और अपने मां-बाप के

'अम्माँ' के नाम!

उन के क़दमों में बैठ कर, मैं ने कुरआन पढ़ना सीखा, उनका कहना था कि मुझे अरबी सीखनी चाहिए, इस लिए मुझे स्कूल के मोलवी साहब के पास भेजा गया जिन्होंने मेरे लिए ज्ञान की वे बुनियादें उपलब्ध कराईं जिन पर मैं आइंदा इमारत बना सका। उनका कुरआन से बेहद लगाव और घण्टों समझ-समझ कर पढ़ते हुए देखने से मेरे दिल में वह रौशनी पैदा हुई जिस ने मेरा रास्ता हमेशा रोशन रखा है।

और आख़िरकार उन की मिसाल और ख़ामोश मदद से, मैं ने अल्लाह की राह में जिद्दो जेहद की ज़िन्दगी का रास्ता पाया।

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىْ صَغِيْرًا (بنی اسرائیل ۲۴:۱۷)

'रब'! जिस तरह उन्होंने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया है, तू भी उन पर दया कर।

अनुक्रम

प्रस्तावना

पहले ही क़दम पर मुझे यह मानना चाहिए कि मेरे अन्दर यह किताब लिखने की बिल्कुल योग्यता नहीं है, इस लिए कि मैं कोई ज्ञानी नहीं हूं और ईमान और अमल के लिहाज़ से भी कमज़ोर हूं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'यदि हम इस 'कुरआन' को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उस (पहाड़) को देखते कि दबा हुआ है और फटा जाता है अल्लाह के भय से।' (अल-हश्र 59:21)

यह किस तरह हो सकता है कि एक इंसान जो इल्म में कमज़ोर और रूहानी तौर पर कच्चा हो कुरआन की अज़्मत व रहमत और ख़ूबसूरती व समझ की तरफ़ रहनुमाई करे? बहरहाल, जिस चीज़ ने मेरे अन्दर इस की हिम्मत पैदा की वह बहुत से दोस्तों की तरफ़ से दिलाई जाने वाली बार-बार की तवज्जुह थी, जो समझते थे कि उन्होंने मेरे साथ मिल-जुल कर जो कुछ पाया है, वह दूसरों तक भी पहुंचना चाहिए। लेकिन हक़ीक़ी अर्थों में ताक़त और हौसला इस से पैदा हुआ: 'जो हमारे रास्ते में जिद्दो जहद करते हैं, यक़ीनन हम उन्हें अपने रास्तों की तरफ़ रहनुमाई करेंगे।'

रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के फ़रमान: मेरी तरफ़ से पहुंचा दो चाहे एक जुम्ला (वाक्य) ही क्यों न हो और तुम्हारे बेहतरीन वें हैं जो कुरआन सीखते सिखाते हैं" ने उसे एक ऐसा फ़र्ज़ बना दिया जिसे अदा करने की आरज़ू करना चाहिए।

इस किताब को लिखने से मेरा मक़सद बहुत आम सा है। यह कोई इल्मी तहक़ीक़ नहीं है। मैं मुफ़्ती नहीं हूं और न यह किताब उलमा के लिए है। मैं नहीं समझता कि मैं उस्ताद की तरह पढ़ा रहा

हूं या कोई रहनुमाई कर रहा हूं, इस लिए कि मुझे इस तरह के किसी पद का कोई दावा नहीं है। मैं यह किताब क़ुरआन के उन आम, बे पढ़े लिखे, अपरिचित चाहने वालों, ख़ासतौर से विद्यार्थियों के लिए लिख रहा हूं जो क़ुरआन को समझने, अपने अन्दर समाने और इस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए सख़्त संघर्ष (जिद्दो जहद) कर रहे हैं जैसे कि मैं ख़ुद कर रहा हूं । मैं विद्यार्थियों के लिए इन चीज़ों के बारे में लिख रहा हूं जो मैं अभी ख़ुद सीख रहा हूं। इस लिए, इस किताब में गोया एक हमसफ़र, अपने साथी से बातचीत में व्यस्त है। मेरी कोशिश है कि क़ुरआन की तरफ़ और क़ुरआन के अन्दर सफ़र की आसान और नफ़ा देने वाली शाहराह पर अपनी ख़ामियों के साथ अटकते रहने के दौरान, मैं ने जो कुछ फ़ायदेमन्द पाया और इख़्तियार किया है, इस मे साथियों को भी शरीक करूं। मुझे यक़ीन है कि जो कुछ मैं ने पेश किया है, वह अपने अधिक सच्चाई, लगन और योग्यता से इसे बहुत ज़्यादा बेहतर बना लेंगे।

यह किताब एक लम्बी कोशिश का नतीजा है। इस की सामग्री कई सालों के अध्ययन के दौरान जमा की गई है। इस लिखने की शुरूआत आज से तीस साल पहले उस समय हुई थी जब मैं ने क़ुरआन के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की संघर्ष शुरू ही की थी। उस समय मुझे मक़सद से लगन रखने वाले अपने ही जैसे कुछ नौजवानो के एक ग्रुप को यह बताने की ज़िम्मेदारी सुपुर्द की गई थी कि क़ुरआन का अध्ययन किस तरह किया जाए। उस समय मैं ने .जो कुछ बताया उस का अधिकतर हिस्सा इन चन्द किताबों से लिया गया है: हमीदुद्दीन फ़राही 'तफ़ासीर फ़राही', अबुल4आला मौदूदी 'तफ़हीमुल क़ुरआन', अमीन अहसन इस्लाही 'तदब्बुरे क़ुरआन', इमाम ग़ज़ाली 'इहया-उ-उलूमिद्दीन', शाह वलियुल्लाह 'हुज्जतुल्लाह अल-बालिग़ा' और 'अल-फ़ौज़ुल कबीर', जलालुद्दीन सुयूती 'अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन'।

इस किताब में जो कुछ भी है, उस के लिए मैं उनका आज भी

शुक्रगुज़ार हूं। इस बात को मानते हुए मैं यह कहना भी ज़रूरी समझता हूं कि ये लेखक, समझने और पेश करने की मेरी ख़ामियों के बिल्कुल ज़िम्मेदार नहीं हैं। अपने ख़यालात को लिखने का पहला मौक़ा मुझे 1977 ई० में इस समय मिला जब मैं ने अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली के तरजुमा कुरआन (प्रकाशक: इस्लामिक फ़ाउंडेशन) का छोटा सा परिचय Way to the Quran लिखा।

यह किताब कुछ मानी हुई हकीक़तों का नतीजा है। किताब में उन की व्याख्या की गई है, लेकिन उन में से कुछ का यहां खुलासा करना फ़ायदेमन्द होगा।

1. हमारी ज़िन्दगियां बेमक़सद रहेंगी और तबाह हो जाएंगी अगर उन्हें अल्लाह के कलाम, कुरआन पाक की रहनुमाई में न गुज़ारा गया।
2. क़ुरआन खुदा-ए-हय्यु व क़य्यूम की हमेशा के लिए हिदायत की हैसियत से आज भी हमारी ज़िन्दगी से उतना ही सम्बंधित है जितना 1400 साल पहले था और हमेशा रहेगा।
3. कुरआन की बरकात किसी न किसी अर्थ में और किसी न किसी मात्रा में आज भी हमें इसी तरह हासिल होने का हक़ होना चाहिए, जिस तरह इस के पहले मुख़ातबों को हासिल हुआ, इस शर्त के साथ कि हम भी इस तरह इस की तरफ़ आएं और इस के अन्दर सफ़र करें कि इस की क़ीमती फ़स्ल में हिस्सा पाने का हमें वाक़ई हक़ हासिल हो।
4. हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह कुरआन पाक की तिलावत करने, हिफ़्ज़ करने और समझने के लिए दिल व जान से वक़्त दे।
5. कुरआन जो कुछ भी कहे, एक व्यक्ति को अपने चाल-चलन, हर लिहाज़ से अपने आपको इस के आगे समर्पित कर देना चाहिए। अपनी बड़ाई का एहसास, अहंकार, कोई संरक्षण या ऐसा नयापन जिससे ग़लत अर्थ निकले, कुरआन की समझ हासिल करने की कोशिशों के लिए घातक (बहुत नुक़सानदेह) है। इस तरह इस की बरकतों का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।

6. कुरआन का रास्ता अपने आपको उसके आगे डाल देने का, और जो वह बताए उस पर अमल करने का रास्ता है, चाहे किसी ने एक आयत ही सीखी हो। एक आयत जिस को सीख कर उस पर अमल किया जाए, ऐसी हज़ार आयतों से बेहतर है जिनकी ख़ूबसूरती से व्याख्या की गई हो, लेकिन जिसने पढ़ने वाले की ज़िन्दगी को कोई ख़ूबसूरती न दी हो। वास्तव में कुरआन को समझने की मास्टरकुंजी (Master Key), इताअत व फ़रमाबरदारी है।

इस किताब के 7 अध्याय हैं। हर एक में इस सफ़र के किसी एक पहलू को बयान किया गया है। पहला: हमारी ज़िन्दगियों के लिए इस सफ़र का क्या अर्थ है। दूसरा: सफ़र की शुरूआत से पहले, दिल व दिमाग़ में क्या ज़ाद-ए-सफ़र जमा करें। तीसरा: अपनी ज़ात की मुकम्मल शुमूलियत के लिए दिल व दिमाग़ और जिस्म के क्या तौर-तरीक़े अनिवार्य हैं। चौथा: तिलावत के लिए किन आदाब का लिहाज़ रखना चाहिए। पांचवाँ: कुरआन की समझ क्यों और कैसे? छटा: कुरआन का सामूहिक अध्ययन किस तरह किया जाए? सातवां: कुरआन के मिशन को पूरा करने के लिए अपनी ज़िन्दगियां पेश करने की ज़रूरत।

एक ज़मीमा (परिशिष्ट) में कुरआन के कुछ ख़ास हिस्सों के बारे में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के इरशादात जमा कर दिए गए हैं। दूसरे ज़मीमे में व्यक्तिगत और सामूहिक अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम पेश किए गए हैं जिस से बहुत से लोग फ़ायदा उठाएंगे। अध्ययन की कुछ सहायताएं भी शामिल की गई हैं।

यह इस प्रकार की किताब नहीं कि जल्दी-जल्दी पढ़ कर एक तरफ़ रख दी जाए, सिवाए यह कि जो इसमें कहा गया है किसी को वह पसन्द न हो, या वह उसे फ़ायदेमन्द महसूस न करे। मुझे उम्मीद है कि जो इस किताब की ज़रूरत महसूस करें और उसे फ़ायदेमन्द पाएं गे, वे ज़रूर इसके हर हिस्से के लिए काफ़ी समय निकालेंगे और

इसे बार-बार पढ़ेगें, इन से मेरा कहना यह होगा: इसे अपने मुस्तक़िल (स्थायी) साथी की हैसियत से अपने काम आने दीजिए।

आप को कुछ चीज़ों का सावधानी से अध्ययन करना होगा, कुछ को अपनी याददाश्त में सुरक्षित रखना होगा, कुछ का आप को बार-बार हवाला देने की ज़रूरत पड़ेगी, लेकिन आप के लिए वही चीज़ फ़ायदेमन्द होगी जिसे आप अमलन (व्यवहारिक रूप में) इख़्तियार करेंगे।

यह किताब जो कुछ करती है वह यह है कि रास्ते की हदबन्दी करती है, रास्ते के ज़रूरी निशानों का निर्धारण करती है और जैसी जहां ज़रूरत हो मार्गदर्शन करती है, सचेत करती है, चेतावनी देती है या निषेध करती है। इसके बावजूद आपको सवारी का इंतिज़ाम करना होगा, इसमें पैट्रोल भरवाना होगा, सड़क पर आना होगा, और गाड़ी को चलाना होगा। किताब की कोई बात आपकी अन्दरूनी तमन्ना, इरादा और संकल्प लगातार कोशिश का बदल उपलब्ध नहीं कर सकती।

पूरी किताब में जगह-जगह आपको किताब में बयान की हुई बातों को कुबूल करने और उन्हें काम में लाने के बारे में चेतावनी और सावधानियों के मशवरे मिलेंगे। यह बहुत अहम है और ख़ुसूसी (विशेष) ख़ासतौर से तवज्जह चाहते हैं। आप कुरआन को ख़ुद से समझने की कोशिश कर रहे हों, या पाठ्यक्रमों के तहत पढ़ रहें हों या किसी और चीज़ के अनुसार कर रहे हों, इन बातों को हमेशा अपने सामने रखिए।

मेरा सारा ज़ोर इस बात पर है कि हर मुसलमान को कुरआन समझने के लिए ख़ुद ज़ाती कोशिशें करने की सख़्त ज़रूरत है। मेरे नज़दीक यह कुरआन का सब से ज़्यादा बुनियादी मुतालबा (मांग) है। मैं इस सड़क के गढ़ों से परिचित हूं जिनका ज़िक्र मैं ने यहां कर दिया है। इस हवाले से आप सय्यदना अबुबकर (र.त.अ.) का यह कथन (कौ़ल) हमेशा सामने रखें: अगर कुरआन का अर्थ बताते हुए मैं अपनी तरफ़ से कोई बात कहूं तो कौनसी ज़मीन मुझे पनाह देगी

और कौनसा आसमान मेरे ऊपर साया करेगा। इस क़ौल (कथन) का मुझ पर हमेशा बहुत अच्छा असर रहा है। आप को भी इस से फ़ायदा उठाना चाहिए।

हम एक ऐसे दौर में रह रहे हैं जिस में अपनी ज़िन्दगियां क़ुरआन की रोशनी में गुज़ारने की ज़रूरत बहुत अहम और अनिवार्य हो गई है। इसके बिना हम मुसलमान न अपने आपको फिर से अविष्कार कर सकते हैं, न अपनी ज़िन्दगी को बामक़सद बना सकते हैं और न दुनिया में इ़ज़्ज़त और वक़ार हासिल कर सकते हैं, और महत्वपूर्ण बात यह कि न अपने ख़ालिक़ व मालिक को राज़ी कर सकते हैं। मानवता भी क़ुरआन के बग़ैर तबाही की गहराईयों में गिरती चली जा रही है।

आज मुसलमानों में इस ज़रूरत का एहससा तेज़ी से बढ़ रहा है। क़ुरआन को समझने और उस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की इच्छाएं आम हो रही हैं। एहया-ए-इस्लाम की लहर इस बेदारी और आरज़ू का फल और इसे तेज़ तर करने का साधन है।

इस नाज़ुक दौर में अगर यह मामूली कोशिश चन्द दिलों में क़ुरआन के सफ़र पर, जो ज़िन्दगी भर का सफ़र है, रवाना होने की तमन्ना पैदा कर दे और यह इनके साथी का काम करे, तो मैं समझुंगा कि मेरी महनत का फल मुझे मिल गया है। अगरचे मेरा असल फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह तआला मेरी नीयत और समझ की तमाम ग़लतियों को माफ़ फ़रमा दे और दिल व जान से की जाने वाली इस कोशिश को अपनी क़ुबूलियत से नवाज़े।

जो भी इस किताब से फ़ायदा उठाए, उस से मेरी प्रार्थना है: मुझे अपनी दुआओं में न भूले।

ख़ुर्रम मुराद

15 शअबान 1405 / 6 मई 1985 ई०

(1)

ज़िन्दगी का सफ़र

चिरन्तन और जीवन्त हक़ीक़त

कुरआन ख़ुदा-ए-हय्यु व क़य्यूम का कलाम है। यह तमाम आने वाले समय में इंसान को रास्ता दिखाने के लिए उतारा गया है। कोई किताब इस की जैसी नहीं हो सकती। जैसे-जैसे आप कुरआन की तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं, आप अल्लाह तआला के साथ बात करने के क़रीब होते जाते हैं। कुरआन पढ़ने का मतलब अल्लाह तआला को सुनना, उस से बातें करना और उसके रास्ते पर चलना है। यह जीवन दाता के साथ जीवन का मुठभेड़ है। "अल्लाह - जिसके सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं - वह सजीव (और) चिरस्थायी है। उसने तुम पर हक के साथ 'किताब' उतारी, ... लोगों के लिए मार्ग-दर्शन बना कर ......" (आले इमरान 3:2-4)

जिन लोगों ने इसे सब से पहले अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) से सुना, उन के लिए कुरआन एक चलती फिरती हक़ीक़त थी। उन्हें इस बारे में ज़रा सा भी शक न था कि रसूल (स.अ.व.) के ज़रिए, ख़ुद अल्लाह तआला उन से बातचीत कर रहा है। इस लिए वे जब इसे सुनते थे तो यह उनके दिल और दिमाग़ पर छा जाता था। उनकी आंखों से आंसू बहते थे, उनके जिस्म कांपने लगते थे। वे इस के हर शब्द को ज़िन्दगी के मुआमलात और तजरबों से बिल्कुल संबंधित पाते थे और इसे मुकम्मल तौर पर अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बना लेते थे। इस कुरआन ने उन को व्यक्तिगत और समाज की दोनों हैसियतों से एक बिल्कुल नए, ज़िन्दा और मुबारक वुजूद में मुकम्मल तौर पर

बदल दिया था। जो भेड़ बकरियां चराते थे, ऊंटों को पालते थे, मामूली कारोबार करते थे, मानवता के रखवाले बन गए।

आज हमारे पास वही कुरआन है। इस के लाखों नुस्ख़े गर्दिश में हैं। घरों में, मस्जिदों में, मिंबरों से दिन रात लगातार इस की तिलावत (पढ़ना) की जाती है। इसका अर्थ जानने के लिए तफ़सीरों के ढेर मौजूद हैं। इस की शिक्षाओं को बयान करने के लिए और हमें इस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने पर राज़ी करने के लिए, तक़रीरों का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला जारी है। लेकिन आंखें ख़ुश्क रहती हैं, दिलों पर असर नहीं होता, दिमाग़ों तक बात नहीं पहुंचती, ज़िन्दगियों में कोई बदलाव नहीं होता। ऐसा लगता है कि ज़िल्लत और पस्ती (निचाई) कुरआन को मानने वालो के लिए लिख दी गई है। ऐसा क्यों है? इस लिए कि अब हम कुरआन को ज़िन्दा हक़ीक़त के तौर पर नहीं पढ़ते। यह एक पवित्र किताब ज़रूर है, मगर हमारा ख़याल है कि यह हमें सिर्फ़ बीते ज़माने की बातें बताती है – काफ़िरों के बारे में, मुसलमानों के बारे में, ईसाईयों और यहूदियों के बारे में, मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के बारे में – वे जो किसी ज़माने में होते थे!

क्या आज, सदियां गुज़रने के बाद भी, कुरआन हमारे लिए इसी तरह ताक़त बख़्श हो सकता है जैसा वह उस समय था? यह एक महत्वपूर्ण सवाल है जिस का हमें जवाब देना है – अगर हम कुरआन की रहनुमाई में अपनी तक़दीर (क़िस्मत) को नए सिरे से बनाना चाहते हैं तो!

इस में कुछ मुश्किलें (कठिनाईयां) नज़र आती हैं, जिन में एक यह एहसास भी है कि कुरआन जिस ख़ास ज़माने में उतारा गया था, हम उस से बहुत आगे निकल चुके हैं। टैक्नोलॉजी के मैदान में बड़ी-बड़ी छलांगें लगाई हैं, और मानव समाज में बड़ी-बड़ी तबदीलियां हो चुकी हैं। इसके अलावा, आज कुरआन के मानने वालों में से ज़्यादातर अरबी नहीं जानते और जो जानते हैं वे कुरआन की ज़िन्दा ज़बान को कम ही समझते हैं। उन से उम्मीद नहीं की जा

सकती कि वे कुरआनी मुहावरों और इस्तिआरों (रूपकों) को समझेंगे, जो कुरआन के अर्थ की गहराईयों को तलाश करने और ज़ज़्ब करने के लिए बेहद ज़रूरी है।

लेकिन इस के अपने दावे के अनुसार, इस का मार्गदर्शन, तमाम मानवजाति और तमाम ज़मानों के लिए हमेशा के लिए है, इस लिए कि यह हमेशा रहने वाले खुदा की तरफ़ से है।

अगर यह दावा सच्चा है, और बेशक सच्चा है, तो मेरे ख़याल में, हमारे लिए यह मुम्किन होना चाहिए कि किसी न किसी दर्जे में, किसी न किसी हद तक, हम कुरआन को उसी तरह जानें, समझें और तजरबा करें, जैसा कि इस के पहले मुख़ातबों ने किया था। यह बात कि अल्लाह तआला के मार्गदर्शन हमें अपनी मुकम्मल शान, कमालात और इनामों के साथ मिले, हमारा हक़ है। दूसरे शब्दों में, कुरआन के समय व सथान के एक ख़ास लम्हे में एक ख़ास ज़बान में नाज़िल होने के ऐतिहासिक घटना के बावजूद हमें कुरआन को अब इसी समय नाज़िल होता हुआ महसूस करना चाहिए (क्योंकि उसका संदेस हमेशा के लिए है), और हमारे लिए यह मुम्किन होना चाहिए कि इस के संदेश को अपनी ज़िन्दगियों का उसी तरह हक़ीक़ी हिस्सा बना लें, जिस तरह कि इस पर ईमान लाने वाले शुरू के लोगों ने बनाया था, और अपने तमाम मौजूदा हालात और परेशानियों में तुरन्त और मुकम्मल रहनुमाई उसी तरह इस से पाएं।

मगर यह हम किस तरह करें?

अगर बिल्कुल साफ़-साफ़ कहा जाए तो इस का सिर्फ़ एक ही रास्ता है: कुरआन की दुनिया में इस तरह दाख़िल हों जैसे कि अल्लाह तआला इस के ज़रिए अब और आज हम से मुख़ातिब है, और इस हालत से होश के साथ गुज़रने के लिए जो शर्तें ज़रूरी हैं, उन्हें पूरा करें।

सबसे पहले, हमें यह महसूस करना चाहिए कि अल्लाह का

कलाम होने की हैसियत से कुरआन कितना महान है, और हमारे लिए इस की क्या अहमियत है, और फिर उस के लिए श्रृद्धा, अभिरूचि, लगाव और काम करने के इरादे को उसी तरह काम में लाएं, जो इस एहसास का तक़ाज़ा है।

दूसरी बात, हमें कुरआन को इस तरह पढ़ना चाहिए जिस तरह यह चाहता है कि इसे पढ़ा जाए। जिस तरह पढ़ना अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने हमें सिखाया है। जिस तरह आप (स.अ.व.) खुद और आप (स.अ.व.) के सहाबा-ए-किराम (र.त.अ.) इसे पढ़ते थे।

तीसरी बात, हमें चाहिए कि ज़मान व मकान, सभ्यता व संस्कृति और बदलाव की तमाम रुकावटों को पार करते हुए कुरआन के हर शब्द की रोशनी में अपनी मौजूदा हकीकतों और समस्याओं को समझें।

अपने पहले मुख़ातबों के लिए, कुरआन उन के ज़माने का वाकिया था। इसकी ज़बान और तर्ज़, इसका बयान और दलीलें इसके मुहावरें और इसतिआरें (रूपक) मिसालें, इसके वाकिआत व लमहात सब उन के अपने माहोल में जुड़े हुए थे। ये लोग कुरआन के नाज़िल होने के पूरे अमल के गवाह भी थे, जो उनकी पूरी ज़िन्दगी में दर्जा-ब-दर्जा मुकम्मल हुआ और एक लिहाज़ से शरीक भी। हमें यह मकाम हासिल नहीं है, लेकिन किसी न किसी हद तक यह हमारे लिए भी सच्चा होना चाहिए। अपने हालात में कुरआन को समझने और उस पर अमल करने से, हम बड़ी हद तक आज भी इसी तरह अपने ज़माने की चीज़ समझेंगे, जैसा कि यह उस समय था।

इस लिए कि इंसान के जौहर (सार) नहीं बदला है। यह बदलने वाला नहीं है। इंसान के सिर्फ़ ज़ाहिर – शकलें, तरीके, टेक्नोलॉजी तबदील हुए हैं। मक्का के मुश्रिक, मदीने के यहूदी, नजरान के ईसाई और मदीना की आबादी के मौमिन और ग़ैर-मौमिन, चाहे अब न पाए जाते हों, मगर यह किरदार हमारे चारों तरफ़ मौजूद हैं। हम ठीक इसी तरह इंसान हैं जिस तरह कुरआन के पहले मुख़ातब इंसान थे, चाहे इस सादा सच्चाई के गहरे तात्पर्यों से निपटना हमें बेहद मुश्किल लगे।

एक बार आप इन हक़ीक़तों को समझें, और उनकी पैरवी करें, एक बार क़ुरआन की तरफ़ इस तरह आएं जिस तरह पहले के मुसलमान आए थे, तब यह आप के लिए भी इसी तरह नाज़िल होगा जिस तरह उन पर नाज़िल हुआ था, आपको उसी तरह अपना शरीक बनाएगा जिस तरह उनहें बनाया था। फिर यह सिर्फ़ एक इज़्ज़त के योग्य किताब, एक पवित्र दस्तावेज़, या जादू की तरह बरकत के स्रोत के बजाए एक ऐसी महान ताक़त में बदल जाएगा जो हम को अपनी पकड़ में लेकर हिलाए और हरकत देकर ऊंचे कारनामों की प्राप्ती की तरफ़ रहनुमाई करे, जैसा उसने पहले किया।

नई दुनिया आपकी मुन्तज़िर है

आप क़ुरआन की तरफ़ आते हैं तो एक नई दुनिया की तरफ़ आते हैं। आपकी ज़िन्दगी का कोई भी कार्य, क़ुरआन की तरफ़ और क़ुरआन के अन्दर सफ़र से ज़्यादा महान, अहम, नाज़ुक, बाबरकत और फ़ायदेमन्द नहीं हो सकता।

यह सफ़र आपको इस कलाम की न ख़त्म होने वाली ख़ुशियों और उन बे इंतिहा ख़ज़ानों के अन्दर ले जाएगा, जो आपके ख़ालिक व मालिक ने आप के लिए, और सारी मानवता के लिए भेजें हैं। यहां आप को इल्म व हिकमत के नाक़ाबिले बयान ख़ज़ानों का एक दुनिया मिलेगी, जो ज़िन्दगी की शाहराहों पर आप की रहनुमाई करेगा और आपकी फ़िक्र व अमल को सही रूप देगा। यहां वह गहरी बसीरत (दानाई) मिलेगी जो आपको मालामाल कर देगी और सही रास्ते पर चलाएगी। आपको इस से ऐसी रोशनी मिलेगी जो आपकी रूह की गहराईयों को रोशन कर देगी। यहां आपको जज़्बात की ऐसी गर्मी मिलेगी जो आपके दिल को पिघला देगी और आप के गालों पर आंसू बहने लगेंगे।

यह बात आप के लिए बेहद महत्व रखती है। इस लिए कि जैसे जैसे आप क़ुरआन की दुनिया में सफ़र करेंगे, हर क़दम पर आप

से तक़ाज़ा होगा कि एक रास्ते का चुनाव करें और अल्लाह के हो जाएं। कुरआन की तिलावत करना (पढ़ना), खुशी से, सच्चे दिल से, निष्ठा से और पूरी तरह से कुरआन के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने के मुक़ाबले में कुछ भी कम नहीं है।

आपके पूरे जीवन का फल इस बात पर निर्भर करता है कि आप खुदा की इस पुकार का किस तरह जवाब देते हैं। इस लिए यह सफ़र आपके वजुद के लिए, मानवता के लिए और मानव सभ्यता के भविष्य के लिए निर्णायक अहमियत रखता है।

इस की आयात में सैकड़ों नई दुनियाएं आबाद हैं।

इसके लम्हात में कई-कई सदियां पिनहां हैं।

(इक़बाल: जावेदनामा)

जान लीजिए कि यह कुरआन – और सिर्फ़ कुरआन ही है, जो आपको इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी सफ़लता की मंज़िलों की तरफ़ आगे ही आगे ले जाता है।

कुरआन क्या है?

कुरआन में मानव के लिए जो कुछ है, उसकी अज़मत और अहमियत को समझना या उसे बयान करना इन्सान के बस में नहीं है। लेकिन शुरूआत करने के लिए, आपको कुछ न कुछ अन्दाज़ा होना चाहिए कि यह क्या है, आपके लिए इस की क्या अहमियत है, ताकि आप के अन्दर, अपने सारे वुजूद के साथ, कुरआन के अन्दर डूबने का जज़्बा पैदा हो – पूरी प्रतिबद्धता, पूरा समर्पण (सुपुर्दगी) और लगातार कोशिश के साथ, जैसा कि इस का तक़ाज़ा है।

कुरआन आपके लिए अल्लाह की सब से बड़ी नेमत है। यह हज़रत आदम अलैहि० और उनकी नसलों से अल्लाह तआला के इस वादे की तकमील है: यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कई मार्ग-दर्शन पहुंचे; तो जो लोग मेरे मार्ग-दर्शन का अनुसरण करेंगे, तो उनके के लिए न कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे। (अल-बक़रा 2:38)

इस दुनिया में बुराई और गुमराह ताक़तों के विरूद्ध संघर्ष के लिए यह आपके कमज़ोर वुजूद की मदद के लिए एकमात्र हथियार है। आपके ख़ौफ़ और परेशानी को क़ाबू में करने के लिए यही एकमात्र साधन है। जब आप अंधेरों में भटक रहे हों तो सफ़लता और नजात (मुक्ति) का रास्ता तलाश करने के लिए यही एकमात्र नूर है। आपके नफ़्स के रोगों के लिए, और आपके चारों तरफ़ जो सामूहिक ख़राबियां हैं, उन के लिए एकमात्र शिफ़ा है। यह आपकी फ़ितरत और तक़दीर, आपके पद और दायित्व, आपके ख़तरों और इनामों के लिए लगातार याददिहानी और ज़िक्र है।

जब जिबराईल अलैहि० की वह हस्ती उसे लेकर आई जो आसमानों में ताक़तवर और भरोसे के योग्य है, तो उसका पहला ठिकाना वह पवित्र और सर्वश्रेष्ठ दिल था जो मानवता के इतिहास में बिल्कुल अलग था और वह था – हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) का क़ल्बे (दिल) मुबारक!

किसी भी चीज़ से ज़्यादा अपने ख़ालिक़ से क़रीबतर और नज़दीकतर होने का सिर्फ़ यही रास्ता हैं। यह आपको उस हस्ती के बारे में, उस के गुणों के बारें में, कायनात पर और इतिहास पर उसकी बादशाहत के बारे में, उसके आप से सम्बंध के बारे में, आपके उस से, खुद अपने आप से, दूसरे इंसानों से और दूसरी हर मौजूद चीज़ों से सम्बंध के बारे में बताता है।

आपके लिए जो इनामात यहां मुन्तज़िर हैं, यक़ीनन वे बहुत हैं, मगर आख़िरत में इस से कई गुना बढ़ जाएंगे, लेकिन सफ़र के ख़ात्मे पर, आपके लिए जो कुछ मुन्तज़िर हैं, हदीसे क़ुदसी के अनुसार: वह न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल में उनका ख़याल आया।" हज़रत अबू हुरेरा (र.त.अ.) इस पर इज़ाफ़ा करते हैं: अगर चाहो तो सूरह अल-सजदा (32:17) में पढ़ो: फिर जैसी कुछ आंखों की ठण्डक (की सामग्री) उनके कर्मों के बदले में उनके लिए छुपा रखी है उसकी किसी जीव को ख़बर नहीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

बे हिसाब रहमत और अज़मत

सब से अधिक महत्वपूर्ण यह बात याद रखना है कि हम कुरआन में जो कुछ पढ़ते हैं, यह अल्लाह रब्बुल-आलमीन का कलाम है, जो उस ने सिर्फ़ अपनी मेहरबानी और रहमत व रबूबियत की बिना पर इंसानी ज़बान में आप के लिए नाज़िल किया है: اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ (الرحمٰن ۵۵:۱-۲) बहुत मेहरबान (ख़ुदा) ने इस कुरआन की शिक्षा दी है। (الدخان ۴۴:۶) رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ط तुम्हारे रब की रहमत के तौर पर।

कुरआन की अज़मत व शान इतनी पुरजलाल है कि कोई इंसान उसको समझ नहीं सकता, इस हद तक कि अल्लाह ने फ़रमाया: यदि हम इस 'कुरआन' को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उस (पहाड़) को देखते कि दबा हुआ है और फटा जाता है अल्लाह के भय से। (अल-हश्र 59:21)

अल्लाह तआला की रहमत व अज़मत का यह ज़ुहूर आप पर इसकी हैबत और जलाल के छा जाने के लिए और आप के अन्दर कुरआन की दुनिया में दाख़िले के लिए शुक्र, आरज़ू और कोशिशों की नई बुलंदियों के हासिल होने का जज़्बा जगाने के लिए काफ़ी है। सच यह है कि कोई भी ख़ज़ाना आपके लिए कुरआ से ज़्यादा क़ीमती और क़द्र के क़ाबिल नहीं है। जैसा कि कुरआन ख़ुद अपने बे इन्तिहा करम का ज़िक्र करता है:

हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से नसीहत आ गई है, सीनों में जो कुछ (बीमारी) है उसके लिए शिफ़ा और ईमान वालों के लिए रहनुमाई और रहमत है। (ऐ नबी) कह दो: यह अल्लाह का फ़ज़्ल और महरबानी है कि यह ख़बर उसने भेजी। इस पर तो लोगों को ख़ुशी मनाना चाहिए। (यूनुस10: 57-58)

ख़तरे और रूकावटें

आपको अल्लाह तआला की रहमत और बरकत और बख़्शिश व

इनायतों पर ज़रूर खुशी मनाना चाहिए। उन ख़ज़ानो को ज़रूर प्राप्त करना चाहिए जो इसके अन्दर आपकी तलाश के मुन्तज़िर हैं। मगर कुरआन अपने दरवाज़े सिर्फ़ उनके लिए खोलता है जो मक़सद के लिए इख़्लास, आरज़ूमन्दी की कैफ़ियत और विशेष ध्यान के साथ जो इसकी अहमियत और उसकी शान व अज़मत के मुताबिक़ हो, इस पर दस्तक देते हैं। सिर्फ़ उन्ही को इस के बीच चलते हुए इस के ख़ज़ाने ज़मा करने की इजाज़त दी जाती है जो इसकी हिदायत के आगे अपने आपको मुकम्मल तौर पर डालने के लिए और इसे जज़्ब करने के लिए अपनी बेहतरीन कोशिश करने के लिए तैयार हैं।

इस लिए ऐसा होना बिल्कुल मुमकिन है कि आप कुरआन की लगातार तिलावत करें, इसके पृष्ठों को बड़े एहतिमाम से उलटें, इसके शब्दों को सुरीली आवाज़ से पढ़ें, इसका अध्ययन बहुत ही सूझ-बूझ के साथ करें – लेकिन फिर भी इसके साथ वह सम्बंध पैदा करने में असफ़ल रहें जो आपकी शख़्सियत को मालामाल करता और बदल देता है। क्योंकि वे सब लोग जो कुरआन पढ़ते हैं, इससे यक़ीनन वह फ़ायदा हासिल नहीं करते जो उन्हें हासिल करना चाहिए। कुछ तो बरकत से महरूम रहते हैं, कुछ लानत तक के हक़दार क़रार दिए जाते हैं।

इस सफ़र के जिस तरह के क़ीमती और बे इंतिहा इनामात हैं उसी तरह के इसमें ख़तरे भी हैं और ऐसा होना भी चाहिए। बहुत से लोग इसे बिल्कुल हाथ नहीं लगाते, चाहे यह किताब कहीं क़रीब ही रखी हो और बहुत से इसके दरवाज़ों से वापिस कर दिए जाते हैं। बहुत से इसे अकसर पढ़ते हैं, लेकिन ख़ाली हाथ रह जाते हैं, जबकि बहुत से दूसरे इसका अध्ययन करते हैं, फिर भी हक़ीक़त में इसकी दुनिया में कभी दाख़िल नहीं होते। कुछ लोग कुछ नहीं पाते, लेकिन खुद गुम हो जाते हैं। वे खुदा की आवाज़ खुदा के अपने कलाम में नहीं सुन पाते। वे इसके बजाए अपनी आवाज़ सुनते हैं, या खुदा के अलावा, दूसरों की।

कुछ दूसरे ख़ुदा की आवाज़ सुन तो लेते हैं, लेकिन अपने अन्दर वह इरादा, वह संकल्प और वह हौसला पाने में असफ़ल रहते हैं, जो इस का जवाब देने और इस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। कुछ वह भी खो देते हैं जो उन के पास होता है और क़ीमती जवाहिरात जमा करने के बजाए, पत्थरों का कमर तोड़ बोझ ले आते हैं जो उनको हमेशा तकलीफ़ देता रहता है।

यह कितनी बड़ी दुख और बदक़िस्मती होगी कि आप क़ुरआन की तरफ़ आएं और ख़ाली हाथ लौट जाऐं। आपकी रूह के तार में कम्पन हो, न दिल में कोई लहर उठे, न ज़िन्दगी में कोई तबदीली आए, जैसे दाख़िल हुए थे, वैसे के वैसे ही बाहर निकल गए।

क़ुरआन की बरकतें गिनी नहीं जा सकतीं, मगर आप उन में से कितनी लेंगे, इसकी निर्भर्ता उस पात्र की क्षमता और योग्यता पर है जिसे लेकर आप इसके पास आए। इस लिए बिल्कुल शुरू में ही, अपने आपको ख़ूब अच्छी तरह एहसास दिला दीजिए कि क़ुरआन आप के लिए क्या हैसियत रखता है और आप से क्या तक़ाज़े करता है। दृढ़ संकल्प कीजिए कि क़ुरआन की उसकी शान के अनुसार तिलावत करेंगे, ताकि आपकी गिनती उन लोगों में हो:

जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे इस तरह पढ़ते हैं जैसा कि उसे पढ़ने का हक़ है। (अलबक़रा 2:121)

तिलावत (पढ़ना)

क़ुरआन अपने पढ़ने के अमल के लिए शब्द 'तिलावत' इस्तेमाल करता है। कोई एक शब्द इसके मुकम्मल अर्थ बयान नहीं कर सकता। पैरवी करना, इसके बुनियादी अर्थ से क़रीबतरीन है। पढ़ना, दूसरी हैसियत रखता है। पढ़ने में भी शब्द एक दूसरे के पीछे आते हैं, एक के बाद एक, क़रीब-क़रीब, जुड़े हुए और बा माना (अर्थपूर्ण) तरतीब में। अगर एक शब्द दूसरे शब्द के पीछे न आए, या अगर नज़्म व तरतीब का लिहाज़ न रखा जाए तो अर्थ उलझ कर रह जाता है।

इस लिए, बुनियादी तौर पर तिलावत का अर्थ है: पीछे, क़रीब ही हरकत करना, आगे बढ़ना, एक तरतीब में बहना, तलाश मे जाना, किसी नमूने को अपना रहनुमा, उस्ताद और क़ाइद मानना, किसी को साहब-ए-इख़्तियार मानना, किसी मक़सद को अपनाना, किसी बात पर अमल करना, किसी के पीछे चलना, ज़िन्दगी के किसी रास्ते को इख़्तियार करना, किसी सिलसिला-ए-फ़िक्र को समझना और उसकी पैरवी करना – या पीछे-पीछे चलना। जो लोग क़ुरआन पर ईमान का कोई दावा रखते हैं, वे इस से अपना सम्बंध पढ़ने, समझने और इस पर अमल करने के हवाले से क़ायम करते हैं।

तिलावत एक ऐसा अमल है जिसमें आपकी पूरी शख़्सियत, रूह, दिल, दिमाग़, ज़बान और जिस्म सब हिस्सा लेते हैं। मुख़्तसर यह कि आपका पूरा वुजूद इसमें शरीक हो जाता है। क़ुरआन की तिलावत में जिस्म व दिमाग़, अक़्ल व एहसास की तमीज़ (भेद) ख़त्म हो जाती है, वे एक हो जाते हैं। ज़बान तिलावत करती है, और होंटों से शब्द अदा होते हैं, ज़हन ग़ौर व फ़िक्र करता है, दिल पर असर होता है, रूह जज़्ब करती है, आंसू आंखों में उमड आते हैं, दिल लरज़ता है, खाल कांपती है और दिल की तरह नर्म पड़ जाती है, दोनों का अलग वुजूद नहीं रहता, यहां तक कि आपके बाल भी खड़े हो जाते है:

> वह अपने रब की ओर से आये हुए प्रकाश पर है। ......
> यह अल्लाह का मार्ग-दर्शन है, जिससे वह (सीधे) मार्ग पर ले आता है जिसे वह चाहता है। (अज़-ज़ुमर 39:22-23)

क़ुरआन की इस तरह तिलावत, जैसा कि उसे तिलावत करने का हक़ है, आसान काम नहीं है। मगर यह बहुत मुश्किल या नामुमकिन भी नहीं है। अगर यूं होता तो क़ुरआन हम जैसे आम आदमियों के लिए न होता, न यह वह रहमत व हिदायत होता, जो कि यह यक़ीनन है। मगर ज़ाहिर है कि इस में दिल व दिमाग़ को, जज़्बा व अक़्ल को और जिस्म व रूह को कुछ मेहनत करनी पड़ती है, और इसका तक़ाज़ा होता है कि कुछ शर्तें पूरी की जाएं, कुछ फ़र्ज़ अदा किए जाएं। कुछ अन्दरूनी और कुछ बाहरी तौर पर।

आपको इन सब का ज्ञान होना चाहिए और कुरआन की आलीशान (शानदार) दुनिया में दाख़िल होने से पहले उन्हें पूरा करने की कोशिश करना चाहिए।

इसी सूरत (स्थिति) में आप बरकात और इनामात की वह पूरी फ़सल हासिल कर सकते हैं जो कुरआन में आप की मुन्तज़िर है। तब ही कुरआन अपने दरवाज़े आपके लिए खोलेगा। तब ही यह आपको अपने अन्दर रहने देगा और आपके अन्दर रहेगा। अपनी मां के गर्भ में गुज़रने वाले 9 महीनों ने एक पानी के क़तरे को 'आप' बना दया: सूनने वाला, देखने वाला और सोचने वाला वुजूद। क्या आप तसव्वुर (कल्पना) कर सकते हैं कि कुरआन के साथ गुज़रने वाली एक पूरी ज़िन्दगी – तलाश करते हुए, सुनते हुए, देखते हुए, सोचते हुए, कोशिश करते हुए – आपको क्या बना देगी? यह कुरआन आपको एक बिल्कुल नई हस्ती में बदल देगा जिस के आगे झुकने में फ़रिश्ते भी फ़ख़्र (गर्व) महसूस करें।

कुरआन की दुनिया के अन्दर उठने वाला हर क़दम और उसके साथ गुज़रने वाला हर लम्हा आप को एक महान बुलन्दी की तरफ़ ले जाएगा, आप उस ताक़त और हुस्न की पकड़ में आ जाएंगे जो कुरआन में ज़िन्दगी की तरह दौड़ता है

हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र बिन अल-आस (र.त.अ.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया: कुरआन के साथी से कहा जाएगा: तिलावत करो और बुलन्दी की तरफ़ जाओ, उतनी ही सुहूलत से, जितनी सुहूलत से तुम दुनिया में कुरआन की तिलावत किया करते थे। तुम्हारा आख़िरी ठिकाना वह बुलन्दी है जहां तुम आख़िरी आयत की तिलावत के वक़्त पहुंच जाओगे। (अबू दाऊद, तिरमिज़ी, अहमद, निसाई)

(2)

बुनियादी शर्तें

कुरआन के साथ किसी फलदायक सम्बंध के लिए दिल व दिमाग़ के कुछ बुनियादी रवैये और हालतें ज़रूरी शर्तें हैं। आप इनका जितना विकास कर सकते हैं, कीजिए। उनको अपने चेतना (शऊर) का जीता जागता हिस्सा बना लीजिए, उनको हमेशा ज़िन्दा और सक्रिय करने वाला बनाईए। उनको अपने आमाल से जोड़ लीजिए। उन्हें अपने वुजूद की गहराईयों में दाख़िल होने दीजिए। इन अन्दरूनी साधनों की सहायता के बग़ैर आप कुरआन की बरकतों और रहमतों से अपना मुकम्मल हिस्सा नहीं पा सकेंगे। यह आपके सफ़र में आपके लाज़िमी साथी भी होंगे।

इन अन्दरूनी साधनों का हासिल करना न मुश्किल है न नामुमकिन। आप लगातार आगाही और ग़ौर व फ़िक्र और मुनासिब किरदार के ज़रिए उन्हें हासिल कर सकते हैं और विकास कर सकते हैं। आप जितना ज़्यादा यह करेंगे, कुरआन के उतने ही क़रीब आने के क़ाबिल हो जाएंगे। जितना आप कुरआन के क़रीब आएंगे, उतनी ही ज़्यादा आप के हिस्से में फ़सल आएगी।

ईमान: ख़ुदा का कलाम

पहला: कुरआन की तरफ़ इस गहरे और मज़बूत विश्वास के साथ आईए कि यह उस ख़ुदा का कलाम है, जो आपका ख़ालिक़ और मालिक है।

इस तरह का विश्वास ज़रूरी और अनिवार्य शर्त क्यों हो? निसन्देह कुरआन की कशिश (आकर्षण) और ताक़त ऐसी है कि

अगर कोई व्यक्ति इसे आम किताब की तरह पढ़ना शुरू कर दे तब भी, अगर वह खुले ज़हन से अध्ययन करे तो इससे फ़ायदा उठाएगा। मगर यह किताब कोई आम किताब नहीं है। इसकी शुरूआत इस ज़ोरदार जुम्ले से होती है: (البقرہ ۲:۲) ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ यह अल्लाह की किताब है, इस में कोई शक नहीं।

इसको पढ़ने और अध्ययन करने में आपका कोई आम मक़सद नहीं है। आप इस से उस हिदायत के तालिब (अभिलाषी) हैं जो आपकी पूरी शख़्सियत को बदल दे, आपको सिरातें मुस्तक़ीम पर लाए और उस पर जमाए रखे। (الفاتحہ ۱:۵) اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ हम को सीधा रास्ता दिखा, आपके दिल की पुकार है जिस का जवाब कुरआन है।

आप कुरआन की तारीफ़ कर सकते हैं, इस से मालूमात हासिल कर सकते हैं, लेकिन यह उस समय तक आपके अन्दर तबदीली नहीं ला सकता जब तक इसके शब्द आपको जगाने, आपको अपनी पकड़ में लेने, आपको शिफ़ा देने और बदलने के लिए आपके अन्दर न उतर जाएं और यह उस समय तक मुमकिन नहीं, जब तक कि आप इसके शब्दों को इसके वाक़ई मक़ाम न दें, यानी अल्लाह के शब्द!

इस अक़ीदे के बग़ैर, आप वह हक़ीक़ी अन्दरूनी ताक़त हासिल नहीं कर सकते जिसकी कुरआन के क़ल्ब (दिल) तक पहुंचने और इसके पैग़ाम को अपने अन्दर जज़्ब करने के लिए आपको ज़रूरत है। एक बार यह आपके दिल में घर कर ले, मुमकिन नहीं है कि ये गुण और रवैये – जैसे मक़सद में सच्चाई, विश्वास और श्रृद्धा, मोहब्बत और शुक्र, भरोसा, सख़्त मेहनत के लिए रज़ामंदी, इस की सच्चाई पर यक़ीन, इसके मक़ाम के आगे सर झुका देना, इस के आदेशों की सही पैरवी और उन ख़तरों के ख़िलाफ़ चोकस रहना जो इसके ख़ज़ानों से महरूम करने के लिए आपकी घात में लगे रहते हैं – आपकी शख़्सियत का हिस्सा न बन जाएं।

अल्लाह तआला की शान व शौकत और जलाल का तसव्वुर (कल्पना) कीजिए, आप उसके कलाम के लिए रूअब व एहतिराम

(सम्मान) और श्रद्धा महसूस करेंगे। उसकी रबूबियत, रहम और हमदर्दी के बारे में सोचिए, आपका दिल कृतज्ञता, मोहब्बत और उस के पैग़ाम के लिए बेक़रारी से भर जाएगा। इसकी हिकमत, इल्म और महरबानी का इल्म हासिल कीजिए आप उसके अहकामात की पैरवी करने के लिए रज़ामन्द, आमादा और बेताब हो जाएंगे।

यही वजह है कि क़ुरआन यह अहम हक़ीक़त बार-बार याद दिलाता है। बिल्कुल आग़ाज़ में, बहुत सी सूरतों की प्रारंभिक आयतों में भी, और अकसर बीच में भी। यही कारण है कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को हिदायत दी जाती है कि वह अपने अक़ीदे का एलान करें।

कहो, अल्लाह ने जो किताब भी नाज़िल की है उस पर ईमान लाया।
(अश-शूरा 42:15)

आप (स.अ.व.) के इस अक़ीदे में मौमिनीन भी एक आवाज़ हो जाते हैं:

'रसूल' उस चीज़ उस चीज़ पर ईमान लाया जो उसके 'रब' की ओर से उस पर उतारी गई। और 'ईमान' वाले भी 'ईमान' लाये।
(अल-बक़रह 2:285)

इस लिए आपको हमेशा सचेत रहना चाहिए कि हर शब्द जो आप पढ़ रहे हैं तिलावत कर रहे हैं, सुन रहें हैं, या समझने की कोशिश कर रहे हैं, अल्लाह तआला ने आपके लिए नाज़िल किया है।

क्या आप वाक़ई यह यक़ीन रखते हैं?

जवाब तलाश करने के लिए, दूर जाने की ज़रूरत नहीं। अपने दिल को टटोलिए, अपने बरताव का जाइज़ा लीजिए। अगर आपको यह यक़ीन हासिल हैं तो क़ुरआन का साथी बनने की आरज़ू और ख़्वाहिश कहां है? इसको समझने के लिए कोशिश और सख़्त मेहनत कहां है? इसके पैगाम के लिए तसलीम व रज़ा और इताअत कहां है?

हम यह यक़ीन कैसे हासिल करें और कैसे इसे ज़िन्दा रखें? इसके बहुत से तरीक़े हैं, मैं यहां सिर्फ़ एक का ज़िक्र करूंगा। सब से

कारगर (प्रभावी) तरीक़ा खुद कुरआन की तिलावत है। शायद ऐसा नज़र आए कि हम एक दायरे में चक्कर लगा रहें हैं, मगर ऐसा नहीं हैं, इस लिए कि जैसे-जैसे आप कुरआन पढ़ेंगे, आपका यह यक़ीन ताज़ा होता जाएगा और आप बेहतर तौर पर पहचानेंगे कि यह अल्लाह का कलाम है। यूं आप के यक़ीन की शिद्दत (तीव्रता) और गहराई में इज़ाफ़ा (वृद्धि) होता चला जाएगा।

'ईमान' वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाए तो उनके दिल कांप उठें और जब उनके सामने उसकी 'आयतें' पढ़ी जायें तो वे उनके 'ईमान को और बढ़ा दें, ओर वे अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं। (अनफ़ाल 8:2)

इरादा और उद्देश्य की पवित्रता

दूसरा: कुरआन को सिवाए इस मक़सद के और किसी लिए न पढ़िए कि अपने मालिक से हिदायत हासिल करना है, उसके क़रीब आना है, उसकी रज़ा (खुशी) हासिल करनी है।

कुरआन से आप क्या हासिल करते हैं? इसकी निर्भर्ता इस पर है कि आप इसके पास किस लिए आते हैं। आपकी नीयत (इरादा और उद्देश्य) फ़ैसलाकुन (निर्णायक) अहमियत रखती है। यक़ीनन कुरआन आपकी हिदायत के लिए आया है। अगर आप ग़लत हरकतों और बुरे मक़ासिद से इसके क़रीब आएं तो आप इसके पढ़ने से गुमराह भी हो सकते हैं।

> अल्लाह इस चीज़ से बहुतों को पथ-भ्रष्ट करता है, और इससे बहुतों को मार्ग दिखाता है; और इससे पथ-भ्रष्ट वह केवल उन्हीं लोगों को करता है जो अवज्ञाकारी होते हैं।
>
> (अल-बक़रह2:26)

कुरआन अल्लाह का कलाम है। यह नीयत का उतना ही इख़्लास (पवित्रता) और मक़सद के लिए उतनी ही एकाग्रता चाहता है जितनी कि अल्लाह तआला की इबादत व बन्दगी। इसे सिर्फ़ ज़ेहनी तफ़रीह

के लिए न पढ़िए, बल्कि कुरआन को समझने का मक़सद हासिल करने के लिए अपनी अक्ल को अधिक से अधिक इस्तेमाल कीजिए। कितने ही लोग कुरआन की ज़बान, तर्ज़ (शैली), तारीख़, जुग़राफ़िया, क़ानून और अख़लाक़ियात (नैतिकता) का अध्ययन करने में पूरी की पूरी ज़िन्दगी ख़र्च कर देते हैं, लेकिन उनकी ज़िन्दगी पर इसके पैग़ाम का कोई असर नहीं होता। कुरआन अकसर ऐसे लोगों का हवाला देता है जो इल्म रखते हैं लेकिन उससे फ़ायदा नहीं उठाते।

आपको कुरआन की तरफ़ इस तै शुदा (निर्धारित) इरादे से नहीं आना चाहिए कि अपने दृष्टिकोण, विचार और सिद्धांतों के लिए हिमायत हासिल करनी है। अगर आप ऐसा करेंगे तो अल्लाह की नहीं खुद अपनी आवाज़ की गुंज (प्रतिध्वनि) इस में सुनेंगे। कुरआन को समझने और इसका अर्थ जानने का यही वह अन्दाज़ है जिस की अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने मज़म्मत (निंदा) की है। "जो कोई कुरआन की ताबीर (व्याख्या) अपनी ज़ाती (निजी) राय से करे, उसे अपनी जगह जहन्नम की आग में बना लेनी चाहिए।" (तिरमिज़ी)

इस से बड़ी बदनसीबी (बदक़िस्मति) क्या हो सकती है कि कुरआन को अपनी ज़ात के लिए नाम, इज़्ज़त, शोहरत, हैसियत या माल व दौलत जैसी दुनियावी चीज़ें कमाने के लिए इस्तेमाल किया जाए। हो सकता है कि आपको यह सब कुछ मिल जाए, लेकिन इस तरह आप न सिर्फ़ एक बहुत ही क़ीमती ख़ज़ाने का बहुत ही हक़ीर (छोटी) चीज़ से सौदा कर रहे होंगे, बल्कि अपने को हमेशा के नुक़सानात और तबाही में डाल रहे होंगे। अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने फ़रमाया: अगर कोई कुरआन का अध्ययन इस लिए करे कि इस तरह लोगों से अपने लिए रोज़ी हासिल करे, तो क़यामत के दिन वह इस तरह उठाया जाएगा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं, सिर्फ़ हड्डियां होंगी। (बेहक़ी)

आप (स.अ.व.) ने यह भी फ़रमाया कि जो व्यक्ति दुनिया में तारीफ़ और प्रशंसा के लिए कुरआन सीखता है और उसकी तिलावत करता या सिखाता है, वह आग में डाला जाएगा। (मुस्लिम)

आप क़ुरआन के शब्दों से दूसरे कमतर फ़ायदे भी हासिल कर सकते हैं, जैसे जिस्मानी बीमारी से शिफ़ा, नफ़्सियाती सुकून (शांति) या ग़रीबी से छुटकारा। इन चीज़ों को हासिल करने पर कोई पाबन्दी नहीं है, लेकिन यही वह सब कुछ न हो जाए, जो आप क़ुरआन से हासिल करते हैं और न यह आप की नीयत के असल लक्ष्य होने चाहिएं। इस लिए कि चन्द घूंटों को हासिल करने में आप वह सारा समुंदर खो सकते हैं, जो आपका हो सकता था।

क़ुरआन का एक-एक शब्द पढ़ने के बड़े इनामात हैं। इन तमाम इनामों से वाक़िफ़ रहिए और उन्हें अपनी नीयत का मक़सद बनाइए, इस लिए कि इस से आपको वह मज़बूत प्रेरणा मिलेगी जो सारी ज़िन्दगी क़ुरआन के साथ गुज़ारने के लिए चाहिए। मगर यह कभी न भूलिए कि क़ुरआन समझने, जज़्ब करने (समा लेने) और उस पर अमल करने पर (इस दुनिया में और बाद की दुनिया में) इस से बहुत ज़्यादा इनामात का आप से वादा किया गया है। यह आपका असल मक़सद होना चाहिए।

न सिर्फ़ यह कि आपका मक़सद साफ़ होना चाहिए, बल्कि जब एक बार क़ुरआन आपके हाथ आ जाए – इसका मतन (मूलपाठ) भी और सुन्नत की शक्ल में इसका ज़िन्दा नमूना भी – तो फिर आप को रहनुमाई के लिए किसी और मर्कज़ की तरफ़ नहीं देखना चाहिए। यह तो सराबों (मरीचिका) के पीछे दोड़ना होगा। इसका अर्थ तो यह होगा कि आपको क़ुरआन पर विश्वास नहीं है, यह तो क़ुरआन की बेइज़्ज़ती होगी। यह वफ़ादारीयों को बटवारा करने के मुतरादिफ़ होगा।

इन लम्हों के मुक़ाबले में, जो आप कलामे इलाही के साथ गुज़ारते हैं, कोई भी चीज़ आपको अपने मालिक से क़रीबतर लाने वाली नहीं, इस लिए सिर्फ़ क़ुरआन ही में आप अपने पैदा करे वाले की आवाज़ सुनने की ख़ास बरकत का मज़ा लेते हैं। इस लिए आप जब भी क़ुरआन पढ़ें तो आपका एकमात्र उद्देश्य अल्लाह की तरफ़ आने की तेज़ ख़्वाहिश हो।

आख़िरी बात यह कि आपकी नीयत यह होनी चाहिए कि अपने दिल व दिमाग़ और वक़्त को उस हिदायत के लिए लगा कर, जो अल्लाह ने आपके लिए भेजी है, अपने मालिक की रज़ा (ख़ुशी) हासिल करना है। जब आप अपने आपको अल्लाह के आगे डाल देते हैं, तो इस सौदे में आप को अल्लाह की रज़ा हासिल होती है:

> और लोगों में कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की ख़ुशी के निमित्त कारणों की चाह में अपनी जान को खपा देता ह।
>
> (अल-बक़रह 2:207)

मक़सद और नीयत किसी जिस्म के लिए रूह या बीज की अन्दरूनी ताक़त की तरह हैं। बहुत से बीज एक जैसे नज़र आते हैं, लेकिन जब उनका विकास होता है और फल देते हैं तो उनके फ़र्क़ स्पष्ट हो जाते हैं। जितनी साफ़ और आला नीयत होगी, उतना ही अधिक आपकी कोशिशों की क़द्र व क़ीमत और उसका हासिल होगा।

हमेशा अपने आप से पूछिए कि मैं क़ुरआन क्यों पढ़ रहा हूं? बराबर अपने आपको बताते रहिए कि क़ुरआन क्यों पढ़ना चाहिए। मक़सद और नीयत को साफ़ रखने के लिए यह बेहतरीन तरीक़ा है।

शुक्र और हम्द की कैफ़ियत

तीसरा: हमेशा अपने अन्दर अपने मालिक के लिए इंतिहाई शुक्र और हम्द के जज़्बात को ताज़ा रखिए कि उस ने आपको अपने सब से बड़े तोहफ़े – क़ुरआन – से नवाज़ा है और उस के अध्ययन और समझ के लिए आपकी रहनुमाई की है। एक बार आपको एहसास हो जाए कि आपके हाथों में कितना क़ीमती ख़ज़ाना है, तो मुमकिन नहीं कि आपका दिल ख़ुशी की ज़्यादती से जोश में न आए, और आपकी ज़बान यूं साथ न दे:

> प्रशंसा अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें इसका मार्ग दिखाया। और यदि अल्लाह हमें मार्ग न दिखाता, तो हम मार्ग नहीं पा सकते थे। (अल-आराफ़ 7:43)

अल्लाह तआला ने आपको जिन इनामों से नवाज़ा है, उनमें से कोई भी कुरआन जैसा नहीं। अगर आपके जिस्म का हर बाल ज़बान बन जाए और उसकी हम्द व शुक्र करे, अगर आप के जिस्म का हर क़तरा ख़ून मसर्रत (ख़ुशी) का आंसू बन जाए, तब भी आपकी तारीफ़ और शुक्र कुरआन जैसी बे-पाया (बे इन्तिहा) दानशीलता का हक़ अदा नहीं कर सकेंगे।

अगर कुरआन हमारे लिए न उतारा गया होता, तब भी इसका कमाल व जमाल और इसकी शान व शौकत, हमारी तारीफ़ व प्रशंसा के हक़दार होते। लेकिन यह बात कि यह मुकम्मल और आलीशान तोहफ़ा, जिसको यह ख़ास एज़ाज़ (सम्मान) हासिल है कि यह अल्लाह का कलाम है, सिर्फ़ हमारे लिए भेजा गया है, अल्लाह तआला के लिए हमारे जज़्बा-ए-शुक्र को बे हद व हिसाब कर देता है।

हम्द (अल्लाह की तारीफ़) की यह शदीद (तेज़) हालत ला महाला (अनिवार्य रूप से) शुक्र के एहसास में तबदील हो जाती है और शुक्र से लबरेज़ इस तारीफ़ का "हम्द" से बेहतर शब्दों में इज़हार नहीं हो सकता:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰنَا اللّٰهُ ج (الاعراف ۷:۴۳).

कुरआन अता (प्रदान) करने पर हम अल्लाह का शुक्र क्यों अदा करें? इस लिए कि इस तरह उसने ज़िन्दगी के मक़सद व अर्थ की तरफ़ आपकी रहनुमाई की है और आपको सिराते मुस्तक़ीम पर ले आया है। आपके लिए इस दुनिया में इज़्ज़त व वक़ार का रास्ता खोल दिया गया है। कुरआन में आप अल्लाह से बातें कर सकते हैं। इस दुनिया में कुरआन की पैरवी करके ही आप उस दुनिया में अल्लाह की मग़फ़िरत, जन्नत और रज़ा (ख़ुशी) हासिल कर सकते हैं।

शुक्र और ख़ुशी, विश्वास, उम्मीद और उस से भी बड़े इनामों की तरफ़ ले जाते हैं, वह हस्ती जिस ने आपको कुरआन अता (प्रदान) किया है, वही यक़ीनन इसके पढ़ने, समझने और अमल

करने में आपकी मदद करेगी।

शुक्र और ख़ुशी हर दम ऐसी ताज़ा ताक़त पैदा करते हैं जो आपको हमेशा एक नए जोश और जज़्बे से क़ुरआन के अध्ययन के लिए आमादा (रज़ामंद) करती है। जितना ज़्यादा आप शुक्रगुज़ार होते हैं, उतना ही ज़्यादा अल्लाह तआला आपको क़ुरआन से मिलने वाले ख़ज़ाने प्रदान करता है।

दानशीलता से शुक्र का एहसास जागता है, शुक्र आपको ज़्यादा दानशीलता का योग्यता प्रदान करता है। यूं एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला शुरू हो जाता है। यही ख़ुदा का वादा है:

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ (ابراہیم ۱۴:۷)

अगर शुक्र गुज़ार बनोगे तो में तुम्हें और ज़्यादा दूंगा।

आप के पास क़ुरआन हो और आप इस नेमत पर शुक्र की कैफ़ियत महसूस न करते हों, तो इसके दो ही अर्थ हो सकते हैं। या तो आप क़ुरआन की बरकतों से अंजान हैं, या आप उन्हें कोई अहमियत नहीं देते। दोनों सूरतों में आपको क़ुरआन से अपने सम्बंध की कैफ़ियत के हवाले से हक़ीक़त में परेशान हो जाना चाहिए।

शुक्र के जो जज़्बात आपके दिल व दिमाग़ के हर गोशे पर छाए हुए हों, उनका इज़हार शब्दों से भी होना चाहिए, जो लगातार जारी हों और अधिक हों। आपके इस सफ़र के हर क़दम पर अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए – क़ुरआन के लिए समय मिलने पर, उसे सही पढ़ने पर, उसे ज़बानी याद करने पर, उसके अर्थों तक पहुंच पर, उसके अहकाम पर अमल की तौफ़ीक़ पर। शुक्र का इज़हार आमाल से भी होना चाए। शुक्र को आमाल की शक्ल इख़्तियार करना चाहिए।

क़बूलियत और भरोसा

चौथा: क़ुरआन आपको जो इल्म और हिदायत पहुंचाता है, उसे किसी शक और हिचकिचाहट के बग़ैर क़बूल कीजिए और उस पर भरोसा रखिए।

आपको यह सवाल करने की आज़ादी है कि कुरआन अल्लाह का कलाम है या नहीं और अगर संतुष्ट न हों तो इसके दावे को रद् करने की आज़ादी है। लेकिन जब आप एक बार इसे अल्लाह का कलाम मान लें, तो फिर इसके किसी एक शब्द पर भी शक करने की कोई आधार (बुनियाद) आपके पास नहीं है। ऐसा करना आपके पहले क़बूल करने का इन्कार होगा।

कुरआनी शिक्षाओं के सामने सर झुका देना चाहिए और अपने आपको बिल्कुल उसके सुपुर्द कर देना चाहिए। आपके अपने अक़ीदे, विचार, फ़ैसले, राय और भावना, किसी को इसकी किसी बात पर ग़ालिब न होना चाहिए।

कुरआन उन लोगों की मज़म्मत करता है जो किताब को एक वरासत समझते हैं और फिर शक व शुबा करने वाले हैरान व परेशान "मुसलमानों" जैसा रवैया इख़्तियार करते हैं:

हक़ीक़त यह है कि अगलों के बाद जो लोग किताब के वारिस बनाए गए वह इसकी तरफ़ से बड़े इज़्तिराब अंगेज़ शक में पड़े हुए हैं। (अश-शूरा 42:14)

कुरआन बार-बार इस बात पर ज़ोर देता है कि इसे किसी मिलावट के बग़ैर नाज़िल करने और पहुंचाने के लिए मुकम्मल एहतमाम किया गया है।

> और इस (कुरआन) को हमने सत्य के साथ उतारा है, और सत्य ही कि साथ यह उतरा है। (बनी इस्राईल 17:105)
>
> और तुम्हारे 'रब' की बात सच्चाई और इन्साफ़ में पूरी है। (अल-अनआम 6:115)

कुरआन को सच और मुकम्मल सच मानने और उस पर भरोसा करने का अर्थ अन्धा भरोसा, बन्द ज़हन और तजस्सुस (जिज्ञासा) न करने वाली अक़्ल नहीं है। जो कुछ कुरआन में है, उसके बारे में तहक़ीक़ करने का, ग़ौर करने का, सवाल करने का और समझने का

हर हक़ आपको हासिल है, मगर जिस बात को आप मुकम्मल तौरपर समझ नहीं सकते लाज़ीमन वह ग़लत या ग़ैर-अक़्ली नहीं है। एक ऐसी कान में जहां आप यक़ीन रखते हों कि हर पत्थर एक क़ीमती हीरा है – और ऐसा साबित भी हो चुका हा – आप उन चन्द पत्थरों को फैंक नहीं देंगे जिन की क़द्र व क़ीमत आपकी नज़र निर्धारित न कर सके, या आपके पास जो औज़ार उपलब्ध हैं वे इसकी क़ीमत न लगा सके, या लगाने के लिए ना काफ़ी हों।

बिल्कुल इसी तरह क़ुरआन के किसी हिस्से को यह कह कर रद्द नहीं किया जा सकता है कि यह बेकार है, पुराने फ़ैशन का है, अगले वक़्तों की कहानियां हैं। अगर अल्लाह तआला हर ज़माने का मालिक है, तो उसका पैग़ाम 14 सदियों बाद के लिए भी है।

क़ुरआन के किसी हिस्से को मानना और किसी को न मानना, पूरे क़ुरआन को न मानने के बराबर है। क़ुरआन से आपके सम्बंध में इसे आंशिक रूप से मानने की कोई गुंजाइश नहीं है। न मन्तिक़ी तौर पर ऐसा हो सकता है। (अल-बक़रह 2:85)

दिल व दिमाग़ के बहुत से रोग हैं। ये क़ुरआन के पैग़ाम को क़बूल करने और उसके आगे सर झुकाने में रुकावट होते हैं। इन सब को क़ुरआन में बयान कर दिया गया है। हसद, तअस्सुब, नफ़्सानी ख़्वाहिशात, समाज के रस्म व रिवाज की अन्धी तक़लीद इन में से कुछ हैं। लेकिन इनमें सब से बड़ा रोग ग़ुरूर (अहंकार) और घमन्ड हैं जो आपको अपनी राय छोड़ने, अल्लाह के कलाम को पहचानने और विनम्रता के साथ उसे मानने में रुकावट साबित होते हैं।

> जो लोग धरती मे नाहक़ बड़े बनते हैं मैं अपनी निशानियों से उन (की निगाहों) को फेर दूंगा, वे चाहे कोई निशानी देख लें उस पर 'ईमान' नहीं लायेंगे, और यदि (चेतनता का) सीधा मार्ग देख लें तो भी उसे मार्ग नहीं बनायेंगे, और यदि गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे मार्ग बना लेंगे। (अल-आराफ़ 7:146)

निस्सन्देह जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ गये, उनके लिए आकाश (स्वर्ग) के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वे 'जन्नत' में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़रे। और ऐसे ही हम अपराधियों को बदला देते हैं। (अल-आराफ़ 7:40)

इताअत और तबदीली

पांचवा: क़ुरआन जो कुछ कहता है उसकी पैरवी के लिए इरादा, संकल्प और आमादगी पैदा कीजिए और जिस तरह वह चाहता है उसके अनुसार ज़ाहिरी तौर पर भी, और बातिनी (भीतरी) तौर पर भी, अपनी ज़िन्दगी को, व्यवहारों और बरतावों को तबदील कीजिए।

जब तक आप अपने ख़यालात और आमाल को क़ुरआन की हिदायतों के अनुसार ढालने के लिए तैयार न हों और उसकी शुरूआत न करदें, आपकी सारी मेहनत और ख़ुलूस (सच्चाई) बे फ़ायदा रहेगा। सिर्फ़ ज़हनी मश्क़े (अभ्यास) और विजदानी तजरबे आपको हरगिज़ क़ुरआन के हक़ीक़ी ख़ज़ानों के क़रीब नहीं लाएंगे।

इन्सानी कमज़ोरियों, क़ुदरती मुश्किलों और बाहरी रुकावटों की वजह से क़ुरआन की पैरवी और ज़िन्दगी में बदलाव लाने में असफ़लता एक बात है, और इस लिए असफ़लता कि आपका ऐसा इरादा ही नहीं है, या इसके लिए किसी क़िस्म की कोशिश न करें, बिल्कुल दूसरी बात है। आप क़ुरआन के एक आलिम की हैसियत से शोहरत हासिल कर सकते हैं लेकिन यह आप पर अपने हक़ीक़ी अर्थों को ज़ाहिर नहीं करेगा।

क़ुरआन ने उन लोगों की सख़्त निन्दा की है जो ख़ुदा की किताब पर ईमान का इक़रार करते हैं, लेकिन जब उनको अमल के लिए कहा जाता है, या फ़ैसला करने की सूरतेहाल सामने आती है तो वे इसकी हिदायत को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं या इसकी तरफ़ से पीठ फेर लेते हैं। उन्हें काफ़िर, फ़ासिक़ और ज़ालिम क़रार दिया गया है।

रूकावटें और मुश्किलात

छठा: हमेशा ख़बरदार रहिए कि जैसे ही आप कुरआन पढ़ने के काम का आग़ाज़ करेंगे शैतान कुरआन के ख़जानों की तरफ़ आपके रास्ते में हर मुमकिन रूकावट और मुश्किल पैदा करेगा।

कुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ जाने वाली सिराते मुस्तक़ीम का एकमात्र यक़ीनी रहनुमा है। इस रास्ते पर चलना इंसना की तक़दीर है। जब हज़रत आदम अलैहि० पैदा किए गए तो उन्हें इन रुकावटों और मुश्किलों से आगाह किया गया जो इंसान को अपनी तक़दीर को पूरा करने के लिए पार करना पड़ेंगी। इसकी सब कमज़ोरियां खोल-खोल कर सामने रख दी गई, ख़ासतौर से इरादे की कमज़ोरी और निसयान (भूल जाना)(ताहा 20:115)। यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि सफ़र के हर क़दम पर शैतान उसके रास्ते में रूकावट पैदा करेगा। शैतान ने अल्लाह से कहा:

जैसा तूने मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर इनकी घात में बैठूंगा। फिर इनके आगे और पीछे, दायें और बायें, हर ओर से इन पर आक्रमण करूंगा और तू इनमें से बहुतों को कृतज्ञ न पायेगा। (अल-आराफ़ 7:16,17)

ज़ाहिर है कि शैतान के ख़िलाफ़ सारी ज़िन्दगी की लड़ाई में, और अल्लाह की हिदायत के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश में कुरआन – (مِنّی هدی मेरी तरफ़ से हिदायत) – तुम्हारा सबसे ज़्यादा ताक़तवर साथी है। इस लिए कुरआन के अध्ययन के इरादे के पहले क़दम से, इसके अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के आख़िरी क़दम तक शैतान आपके सामने बहुत सी चालें, मकर (छल), बहाने, धोके, फ़रेब और रुकावटें लाएगा जिन पर आपको हावी होना होगा और रद्द करना होगा।

शैतान आपकी नीयत में फ़ुतूर (ख़राबी) पैदा कर सकता है। आपको कुरआन के अर्थों और पैग़ाम से बेख़ब रख सकता है, ज़हन में शक पैदा कर सकता है, अल्लाह के कलाम और आपकी रूह के

बीच पर्दा डाल सकता है, बुनियादी शिक्षाओं के बजाए सतही बातों में उलझा सकता है, कुरआन की पैरवी करने से दूर ले जा सकता है, या कुरआन पढ़ने को नज़रअन्दाज़ करने और आइन्दा पर टालने पर आमादा कर सकता है। यह सब ख़तरात और अन्देशे खुद कुरआन में व्याख्या कर दिए गए हैं।

सिर्फ़ एक सादा सी मिसाल लीजिए। रोज़ाना तिलावते कुरआन और उसका अर्थ समझना बहुत आसान लगता है। आप कोशिश कर के देख लीजिए, अन्दाज़ा हो जाएगा कि यह कितना मुश्किल हो जाता है। वक़्त गुज़र जाता है, दूसरे अहम काम सामने आ जाते हैं, तवज्जुह और ज़हन को एक जगह करने से आप परहेज़ करना चाहने लगते हैं – क्यों न सिर्फ़ बरकत के लिए जल्दी-जल्दी पढ़ लिया जाए!

इन ख़तरों और अन्देशों को ज्ञान के साथ, आप की ज़बान पर कुरआनी हुक्म: जब तुम कुरआन पढ़ने लगो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो (अल-नहल 16:98) के अनुसार ये शब्द जारी हों:

اعوذ بالله من الشيطن الرجيم. (आऊज़ू बिल्लाही मिनश्शैतानिर रजीम)

विश्वास और भरोसा

सातवा: सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा रखिए कि वह कुरआन के अध्ययन के भरपूर फ़ायदों की तरफ़ आपकी रहनुमाई करेगा। जिस तरह यह अल्लाह की रहमते बे पायां (बे इन्तिहा) है कि वह कुरआन के ज़रिए अपना कलाम आप तक लाया है और आपको कुरआन तक लाया है। इस तरह उसकी रहमत ही है जो इस अहम और नाजुक काम में आपकी मददगार हो सकती है। आपको बहुत क़ीमती और मैयारी चीजें दरकार हैं, उनको हासिल करना आसान नहीं है। आपको ब इन्तिहा ख़तरे दरपेश हैं जिन पर हावी होना मुश्किल है। आप अल्लाह तआला के अलावा किस की तरफ़

देख सकते हैं कि आपका हाथ पकड़े और आपके रास्ते पर आपकी रहनुमाई करे।

आपकी इच्छा और कोशिश लाज़मी साधन हैं लेकिन अल्लाह की मदद और तौफ़ीक़ यक़ीनी ज़मानत हैं जिन से आप अपना रास्ता सफ़लता और फ़ायदे के साथ तय कर सकते हैं। सच्चे मौमिन की हैसियत से आपको ज़िन्दगी के हर मुआमले में सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए। ज़िन्दगी की हर चीज़ के लिए सिर्फ़ उसकी तरफ़ रूख़ करना चाहिए और कुरआन से ज़्यादा अहमतरीन कौन सी चीज़ है! कुरआन के लिए जो कुछ आप कर रहे हैं, उस पर फ़ख़ का एहसास न कीजिए। हमेशा अपनी कमज़ोरियों और सीमाओं का ज्ञान रखिए, एक ऐसे काम के लिए जिसकी कोई मिसाल नहीं।

इस लिए कुरआन की तरफ़ जाते हुए मिन्नत और खुदा पर मुकम्मल एतिमाद और भरोसे के एहसास के साथ, हर क़दम पर उसकी मदद और सहारा तलब करते हुए तवक्कुल, हम्द और शुक्र के एहसासात के साथ, ज़बान और दिल आपस में मिला कर तिलावत का आग़ाज़ कीजिए:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرحيم बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह आयत, 114 में से एक के सिवा तमाम सूरतों के आग़ाज़ में मौजूद है। साथ ही दुआ कीजिए, अल्लाह ही से पनाह चाहते हुए:

हमारे 'रब'! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इसके पश्चात हमारे दिलों को टेढ़ा न कर, हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निससन्देह तू बड़ा दाता है। (आले इमरान 3:8)

(3)

अपने क़ल्ब की शिर्कत

क़ुरआन की तिलावत में आपकी पूरी शख़्सियत को शामिल होना चाहिए। इस तरह आप क़ुरआन से अपने सम्बंध को बुलन्दी की इस सतह तक ले जा सकेंगे कि आप को क़ुरआन पर सच्चा ईमान रखने वाला क़रार दिया जाए। "वे इसकी इस तरह तिलावत करते हैं (पढ़ते हैं) जिस तरह तिलावत करने का हक़ है। वे इस पर सच्चे दिल से ईमान ले आते हैं।" (अल-बक़रह 2:121)

क़ल्ब क्या है?

आपकी शख़्सियत का अहमतर हिस्सा आपका नफ़्स है। क़ुरआन इसको क़ल्ब कहता है। रसूलुलाह (स.अ.व.) का क़ल्बे मुबारक वही-ए-इलाही का पहला मस्कन (रहने की जगह) था।

> और निससन्देह यह (क़ुरआन) सारे संसार के 'रब' का उतारा हुआ है। जिस लेकर एक विश्वसीय आत्मा उतरी है। (उतरी है) तेरे दिल पर, ताकि तू सचेत करने वालों में से हो।
>
> (अश-शूअरा 26:192-194)

आपको तिलावते क़ुरआन की बरकतें और ख़ुशियां मुकम्मल तौरपर उस समय हासिल होंगी जब आप इस काम में अपने क़ल्ब को मुकम्मल तौर पर शामिल करेंगें।

क़ुरआनी शब्दावली में क़ल्ब आपके जिस्म का लोथड़ा नहीं, बल्कि आपके एहसासात, जज़्बात, प्रेरणाओं, तमन्नाओं, आरज़ुओं,

यादों और तवज्जुहात का केन्द्र है: ये कुलूब हैं जो नर्म पड़ जातें हैं (अज़्-ज़ुमर 39:23)। या सख़्त होकर पत्थर जैसे हो जाते हैं (अल-बक़रह 2:74)। ये अन्धे हो जाते हैं और हक़ को पहचानने से इंकार कर देते हैं (अल-हज 22:46)। इनका काम समझना और तर्क करना होता है (अल-आराफ़ 7:179, अल-हज 22:46, क़ाफ़ 50:37)। तमाम रोगों की जड़ कुलूब में होती हैं (अल-बक़रह 2:10)। कुलूब ईमान का मस्कन (रहने की जगह) होते हैं (अल-मायदा 5:41)। और निफ़ाक़ का भी (अत-तोबा9:77)। ये कुलूब ही हैं जो हर अच्छी और बुरी बात का केन्द्र होते हैं, चाहे वह सब्र और सुकून हो (अर-रअद 13:28)। आज़माईशों के मुक़ाबले की ताक़त (अत-तग़ाबुन 64:11), रहम (अल-हदीद 57:27), भाईचारे की मोहब्बत (अल-अनफ़ाल 8:63)। तक़वाह (अल-हुजुरात 49:3, अल-हज 22:32)। या शक और हिचकिचाहट (अत-तोबा 9:45)। पछतावा (आले-इमरान 3:156) और गुस्सा (अत-तोबा 9:15) हा। आख़िरि बात यह है कि हम हक़ीक़त में दिल के मुआमलात के लिए जवाबदेह होंगे। जो अल्लाह के हुज़ूर क़ल्बे सलीम ले कर आएगा, निजात का हक़दार क़रार पाएगा।

> अल्लाह तुम्हारी (बे सोचे-समझे खाई हुई) क़समों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा। परन्तु तुम्हें उस पर पकड़ेगा जो तुम्हारे दिलों के निश्चय का फल है। (अल-बक़रह 2:225)

> जिस दिन न माल काम आयेगा और न औलाद। सिवाय इसके कि कोई भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास आये। (अश-शूअरा 26:88-89)

आपको यह यक़ीनी बनाना चाहिए कि जब तक आप क़ुरआन के साथ हैं, आपका दिल आपके साथ रहे। वह दिल नहीं, जो गोश्त का टुकड़ा है, बल्कि वह जिसे क़ुरआन क़ल्ब कहता है। अगर आप कुछ बातों की समझ रखें और क़ल्ब व जिस्म के कुछ कामों का

ख़याल रखें तो जो सात शर्तें पहले बयान की गई हैं वे कुरआन के अध्ययन में आपकी अन्दरूनी शख़्सियत की मुकम्मल शिर्कत की बुनियाद रखती हैं। इसके अलावा 'कुछ दूसरे इक़दामात' दिल की इस शिर्कत की कैफ़ियत और तेज़ी मे ख़ासा इज़ाफ़ा कर देंगे।

क़ल्बी दाख़िली कैफ़ियात

आपको अन्दूरूनी शिर्कत की मरहला-ब-मरहला कैफ़ियतों को अच्छी तरह समझना चाहिए। किस तरह हक़ आपके क़ल्ब पर छा जाता है?

पहला: आपको हक़ का पता चलता है।

दूसरा: आप उसे पहचानते हैं और मानते हैं कि यह हक़ है और आपकी ज़िन्दगी से सम्बंधित है।

तीसरा: आप इस हक़ को जितना ज़्यादा और जितना अधिकता से याद रख सकते हैं याद रखते हैं।

चौथा: आप इसे जज़्ब करते हैं यहां तक कि यह आपकी अन्दरूनी शख़्सियत की गहराईयों में रच बस जाता है। हक़ सदाबहार सूझ-बूझ में ढल जाता है। क़ल्ब मुस्तक़िल इस अवस्था में रहता है। जब कोई हक़ आप के अन्दर की दुनिया में इस तरह रच बस जाता है, तो फिर अमली दुनिया में बाहर निकल पड़ता है।

यहां यह याद रखना भी अहम है कि आप ज़ाहिरी तौरपर अपनी ज़बान और हाथ पांव से जो कुछ करते हैं, वह आपकी दाख़िली शख़्सियत पर असर अन्दाज़ होता है। किसी के अक़वाल (कथन) और आमाल इसकी अन्दरूनी अवस्था के झूटे गवाह हो सकते हैं, लेकिन चाहा यह जाता है कि अन्दर की अवस्था ईमान की तरह किरदार में अपना इज़हार पाए और आपके ज्ञान को आपकी शऊर (चेतना) पर नक़्श करके उसे एक मुस्तक़िल अवस्था में बदल दे।

जो क़दम यहां बताए गए हैं वे उसी सूरत में असरअंदाज़ होंगे कि आप ऊपर बताई गई बातों का ख़याल रखें और इन उसूलों की पैरवी करें।

शऊर (चेतना) की हालतें

शऊर की सात हालतें हैं जिन्हें आपको विकसित करने की कोशिश करना चाहिए: कुछ बातों को याद रख कर, उन्हें जज़्ब करके और अपने आपको अकसर उनकी याद दिला कर।

अन्दरूनी शिर्कत का क़ुरआनी मैयार (मानदंड)

पहला: अपने आप से कहिए:

मेरा क़ुरआन का पढ़ना सही अर्थों में तिलावत न होगा, जब तक मेरा अन्दरूनी वुजूद इस में इस तरह हिस्सा न ले जिस तरह अल्लाह चाहता है कि यह हिस्सा ले। अल्लाह क्या चाहता है? आपको क़ुरआन के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए? क़ुरआन बहुत से स्थानों पर ख़ुद बड़ी स्पष्टता से बताता है कि अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) और उनके सहाबा (र.त.अ.) और उन लोगों ने जिन के दिल इसके पकड़ में थे, किस तरह क़ुरआन का असर लिया। आपको कोशिश करना चाहिए कि ऐसी क़ुरआनी आयतें याद कर लें और जब भी क़ुरआन पढ़ें तो उनको दोहराएं, उन पर ग़ौर व फ़िक्र करें। उन आयतों में से कुछ ये हैं:

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ إِيْمَانًا
(انفال ۸:۲)

'ईमान' वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाऐ तो उनके दिल कांप उठें, और जब उनके सामने उसकी 'आयतें' पढ़ी जायें तो वे उनके 'ईमान' को और बढ़ा दें।

تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ج ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ إِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ط
(الزمر ۳۹:۲۳)

उससे उन लोगों के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने 'रब' से डरने वाले हैं, फिर उनके शरीर और उनके दिल नर्म पड़ कर अल्लाह के 'ज़िक्र' की ओर लग जाते हैं।

اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ٥ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ٥ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ٥ (بنی اسرائیل ۱۷: ۱۰۷-۱۰۹)

उन्हें जब यह सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल 'सजदे' में गिर जाते हैं। और पुकार उठते हैं: महिमावान है हमारा 'रब'! निस्सन्देह हमारे 'रब' का वादा तो पूरा होकर रहने वाला है। और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं, और यह (कुरआन) उनकी विनम्रता को और बढ़ा देता है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ٥ (مریم ۱۹: ۵۸)

जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं, तो वे रोते हुए 'सजदे' में गिर जाते थे।

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ج

(المائدہ ۵: ۸۳)

जब वे उस चीज़ को सुनते हैं जो 'रसूल' की ओर उतारी गई हैं, तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं में बह पड़ती हैं, इसलिए कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया।

अल्लाह हाज़िर व नाज़िर है

दूसरा: अपने आप से कहिए:

मैं अल्लाह के हुज़ूर में हूं, वह मुझे देख रहा है।

आपको इस हकीकत को हमेशा समझना चाहिए कि जिन लम्हों में आप कुरआन की तिलावत कर रहें हैं, आप उसके हुज़ूर में हैं जिस ने यह कलाम आपके लिए नाज़िल किया है। इस लिए कि

अल्लाह हमेशा आपके साथ है, आप जहां भी हों, आप जो कुछ भी कर रहे हों, उसका इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।

शऊर (चेतना) की यह हालत आप किस तरह हासिल कर सकते हैं? अल्लाह ने कुरआन में इस बारे में जो कुछ फ़रमाया है, उसे सुनिए। इन आयतों को याद कर लीजिए और जब आप कुरआन की तिलावत करने वाले हों, या कर रहे हों तो उसके दौरान इन आयतों को दोहराईए और इन पर ग़ौर कीजिए। आपको जिस चीज़ से ज़्यादा मदद मिलेगी – न सिर्फ़ कुरआन की तिलावत में, बल्कि उसके अनुसार जिन्दगी गुज़ारने मे – वह इस हक़ीक़त को जितना ज़्यादा मुमकिन हो याद रखना और इस पर ग़ौर करना है।

आप तन्हा हों या लोगों के साथ हों, ख़ामोश हों या बातचीत कर रहे हों, घर पर हों या काम पर हों, आराम कर रहें हों या मसरूफ़ हों, ख़ामोशी से या बुलन्द आवाज़ से कहिए: अल्लाह तआला यहां है मेरे साथ, देख रहा है, सुन रहा है, जानता है, सब महफ़ूज़ कर रहा है। और कुरआन की इन आयतों को याद कीजिए:

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ه (الحدید ۵۷:۴)

और वह तुम्हारे साथ है तुम जहां-कहीं हो। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِه (ق ۵۰:۱۶)

और हम गर्दन की रग से भी अधिक उसके निकट हैं।

مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ع (المجادلہ ۵۸:۷)

कोई गुप्त वार्ता तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिसमें चौथा वह न हो और न कोई पांच आदमियों की ऐसी होती है जिसमें

छठा वह न हो, और न कोई इससे कम की और न ज़्यादा की ऐसी होती है जिसमें वह न हो, जहां कहीं भी वे लोग हों।

إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝ (طٰهٰ ٢٠:٤٦)

मैं तुम दोनो के साथ हूं (सब कुछ) सुनता और देखता हूं।

فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا (الطور ٥٢:٤٨)

तुम तो हमारी आंखों के समाने हो।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ (يٰس ٣٦:١٢)

निश्चय ही हम (एक दिन) मुर्दों को जीवित करने वाले हैं। और हम लिखते जोते हैं जो कुछ उन्होंने आगे भेजा, और उनके पदचिन्हों को और हर चीज़ को हमने एक स्पष्ट 'किताब' में गिन कर रखा है।

इस हवाले से अधिक महत्वपूर्ण निम्नलिखित आयत है। यह इस हक़ीक़त को कि अल्लाह तआला हर जगह है और हर चीज़ देख रहा है न सिर्फ़ ज़ोरदार तरीक़े पर बयान करती है बल्कि ख़ास तौर पर, कुरआन की तिलावत के अमल का ज़िक्र करती है।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ (يونس ١٠:٦١)

और तुम जिस अवस्था में भी होते हो और 'कुरआन' से जो-कुछ भी पढ़ कर सुनाते हो, और (हे लोगो!) तुम कोई सा काम भी करते हो, हम तुम्हें देख रहे होते हैं जब तुम उसमें लगे होते हो। और कण भर भी कोई चीज़, या उससे भी छोटी या बड़ी धरती और आकाशों में ऐसी नहीं है जो तेरे

'रब' से छिपी हुई हो, सब कुछ एक स्पष्ट 'किताब' में है।

अल्लाह तआला हमें खुद बताता है: जब तुम कुरआन की तिलावत करते हो, मैं तुम्हारे पास होता हूं। यह बात कभी न भूलिए।

कुरआन की तिलावत करना (पढ़ना) इबादत का एक अमल है। आलातरीन कमाल हासिल करने का रास्ता अल्लाह की इबादत है। अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) हम को बताते हैं: अल्लाह की इबादत करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। अगर तुम उसे अपनी आंखों से नहीं देख सकते, तो यह ख़याल तो कर सकते हो कि वह तुम्हें देख रहा है।

इसके अलावा याद रखिए कि न सिर्फ़ आप अल्लाह के पास हाज़िर हैं, बल्कि जब तक आप कुरआन की तिलावत करते हैं वह आप को याद करता है:

فَاذْكُرُونِيٓ اَذْكُرْكُمْ (البقرہ ۲:۱۵۲)

तो तमु मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा।

निस्न्देह अल्लाह को याद करने का बेहतरीन तरीक़ा कुरआन की तिलावत करना है।

अल्लाह से सुनना

तीसरा: अपने आप से कहिए: मैं अल्लाह से सुन रहा हूं!

अपनी अन्दरूनी ज़ात को शामिल करने की अपनी कोशिश के एक हिस्से के तौर पर आप यह सोचने की कोशिश करें कि जैसे आप कुरआन को खुद नाज़िल करने वाले से सुन रहे हैं। कुरआन अल्लाह का कलाम है। जिस तरह आप उसे देख नहीं सकते जब कि वह हर समय आपके साथ होता है, उसी तरह आप उसे सुन नहीं सकते जब कि वह बोल रहा हो। छुपे हुए शब्दों और तिलावत करने वाले की आवाज़ को पृष्ठभूमि (पसमंज़र) में जाने दीजिए, और अपने आप को बोलने वाले के क़रीब ले आईए। जैसे-जैसे आपके, उस के

हुज़ूर में होने की शऊर (चेतना) में इज़ाफ़ा होगा, यह अहसास जागेगा और ज़्यादा मज़बूत होगा।

इमाम ग़ज़ाली (रह०) अपनी तस्नीफ़ (रचना) 'एहयाउल उलूम' मे एक व्यक्ति के बारे में बयान करते हैं कि उस ने कहा: "मैंने कुरआन की तिलावत की लेकिन उसमें मिठास नहीं पाई। फिर फिर मैंने इस तरह पढ़ा कि जैसे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) उसे अपने सहाबा को सुना रहे हों। फिर में एक क़दम और आगे बढ़ा और कुरआन को इस तरह पढ़ा जैसे मैं इसे जिबराईल (अलैहि०) से सुन रहा हूं जबकि वह उसे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को पहुंचा रहे थे। फिर ख़ुदा ने मुझे एक क़दम और आगे बढ़ाया – मैं ने इस तरह इस की तिलावत शुरू कर दी जैसे कि मैं ने उसे ख़ुद बोलने वाले से सुन रहा हूं।"

ये एहसासात आप के अन्दर ऐसी ख़ुशी और मिठास भर देंगे कि आप की अन्दरूरी ज़ात पर, कुरआन मुकम्मल तौर पर छा जाएगा।

अल्लाह का प्रत्यक्ष (बराहे रास्त) सम्बोधन

चौथा: अपने आप से कहिए: जब मैं कुरआन की तिलावत करता हूं, अल्लाह तआला मुझ से अपने रसूल (स.अ.व.) के ज़रिए सीधे (बराहे रास्त) ख़िताब करता है।

निःसन्देह, कुरआन इतिहास के एक ख़ास मरहले में ख़ास समय पर नाज़िल किया गया था, और आप तक यह अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न स्थानों पर, विभिन्न ज़मानों में, विभिन्न लोगों के ज़रिए पहुंचा है। लेकिन कुरआन अल्लाह हय्यु कय्यूम का कलाम है जो हमेशा के लिए और हर शख़्स से ख़िताब करता है। इस लिए बीच के वास्तों को थोड़ी देर के लिए पसमंज़र में जाने दीजिए और कुरआन को इस तरह तिलावत कीजिए कि जैसे यह आपसे, एक व्यक्ति और एक समाज के हिस्से की हैसियत से आपके अपने ज़माने में, मुख़ातिब है।

इस तरह सीधे मुख़ातिब होने की सिर्फ़ कल्पना ही आपके क़ल्ब

को, जो कुछ आप पढ़ रहे हैं, उसकी पकड़ में रखेगा।

हर शब्द आपके लिए

पांचवा: अपने आप से कहिए: कुरआन का हर शब्द मेरे लिए है।

अगर कुरआन हमेशा के लिए है, और आज यह आपसे मुख़ातिब है, तो आपको इसका हर पैग़ाम इस तरह लेना चाहिए जैसे यह आपकी ज़िन्दगी और मुआमलात से पूरे तौरपर और फ़ौरी तौरपर सम्बंधित है – चाहे कोई मालूमात हो, किरदार या वार्तालाप हो, वादा या नतीजा हो, हुक्म या निषेध हो, या किसी उसूल व हिदायत का बयान हो।

इस तरह आपकी तिलावते कुरआन ज़िन्दा, बा मक़सद और सक्रिय हो जाएगी। कुछ समस्याएं इसमें पेश आ सकती हैं कि अपने से विभिन्न लोगों के लिए जो हिदायतें हैं उन्हें अपनी ज़ात और समस्याओं के लिए किस तरह क़ाबिल अमल बनाया जाए? लेकिन सही और सच्ची कोशिश से यह मुमकिन हो सकता है।

अल्लाह से बातचीत

छठा: अपने आप से कहिए: जब मैं तिलावत करता हूं तो अल्लाह से बातचीत कर रहा होता हूं।

कुरआन अल्लाह का कलाम है, आप से ख़िताब है, आपके लिए है। इसके शब्द आपके होंटों पर होते हैं, आपके दिल पर अंकित होते हैं, लेकिन यह अल्लाह और इंसान के बीच, अल्लाह और आपके बीच एक वार्तालाप है। यह वार्तालाप विभिन्न शकलें इख़्तियार करता है। यह स्पष्ट भी हो सकता है, और इस अर्थ में अस्पष्ट भी कि आपकी या अल्लाह की तरफ़ से कोई जवाब मुज़मर (अंतर्निहित) हो।

यह मुज़मर (अंतर्निहित) बातचीत किस तरह होती है? रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने एक हदीसे कुदसी में बहुत ख़ूबसूरत मिसाल दी है:

मैं ने नमाज़ को अपने और बन्दे के बीच दो हिस्सों में बांट दिया है। आधा मेरे लिए और आधा उसके लिए है। मेरा बन्दा वह पाएगा जो मांगेगा। जब बन्दा कहता है: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. अल्लाह फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की। जब बन्दा कहता है: الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. अल्लाह फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने मेरी अज़्मत (बड़ाई) बयान की। जब बन्दा कहता है: ملك يوم الدين. अल्लाह फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने मेरी शान बयान की। यह मेरा हिस्सा है। जब बन्दा कहता है إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ अल्लाह फ़रमाता है: यह मेरे और इसके बीच है जो मांगेगा उसको दिया जाएगा। जब वह कहता है: اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ अल्लाह फ़रमाता है: यह मेरे बन्दे का हिस्सा है। मेरे बन्दे को वह मिलेगा जो उसने मांगा है। (मुस्लिम, तिरमिज़ी, अहमद)

आप आगे चल कर देखेंगे कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) किस तरह विभिन्न आयतों के विषय और पैग़ाम का जवाब दिया क़रते थे। अपने पैदा करने वाले और मालिक से इस तरह की बातचीत की जानकारी, आपकी तिलावते कुरआन को ग़ैर मामूली हुस्न और गहराई देगा।

अल्लाह के इनामों की उम्मीद और भरोसा

सातवां: अपने आप से कहिए: यक़ीनन अल्लाह तआला मुझे उन सब इनामों से नवाज़ेगा जिन का उसने अपने रसूल के ज़रिए कुरआन की तिलावत और इस पर अमल करने पर देने का वादा किया है।

कुरआन में बहुत से इनामों का वादा किया गया है – ज़िन्दगी में रूहानी इनामात: हिदायत, रहम, इल्म, समझ व समृद्धि सेहत, ज़िक्र, नूर और साथ ही दुनियावी इनामात: इज़्ज़त व वक़ार, ख़ुशहाली व समृद्धि और सफ़लता व जीत का यक़ीन दिलाया गया है। हमेशा की रहमतें जैसे मग़फ़िरत, जन्नत और अल्लाह की ख़ुशी भी कुरआन पर अमल करने वालों के लिए मख़सूस की गई हैं।

अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने बहुत से दूसरे इनामों का भी ज़िक्र किया है। हदीस की कोई किताब – बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, रियाज़ुस्सालिहीन वग़ैरह लीजिए और कुरआन से सम्बंधित अध्यायों को अध्ययन कीजिए, ये आपको वहां मिल जाएंगे। उन में से कुछ इस किताब में भी मिलेंगे, ख़ास तौर से आख़िर में। मिसाल के तौर पर:

> तुम में से बेहतरीन वह है जो कुरआन को सीखे और सिखाए (बुख़ारी)। कुरआन की तिलावत करो क्योंकि यह आख़िरत के रोज़ अपने पढ़ने वालों का मुद्दई बन कर आएगा (सिफ़ारिश करेगा) (मुस्लिम)। किसी सिफ़ारिश करने वाले का मरतबा कुरआन से ज़्यादा न होगा (शरह-ए-एहया)। क़यामत के दिन कुरआन के साथी से कुरआन पढ़ने के लिए कहा जाएगा और आख़िरी आयत पढ़ने तक वह बुलन्दी की तरफ़ सफ़र जारी रखेगा (अबुदाऊद)। हर पढ़े हुए शब्द के बदले दस गुना सवाब मिलेगा (तिरमिज़ी)।

इस तरह के जितने ज़्यादा से ज़्यादा वादे अपने हाफ़िज़े में महफ़ूज़ करना मुमकिन है, कर लिजिए और जब भी मुमकिन हो जो हिस्से सम्बंधित हों, उन्हें याद करें। अल्लाह से उम्मीद रखिए, भरोसा कीजिए और अपने लिए उन वादों को पूरा करने की दुआ कीजिए। इस तरह के इक़दामात से (जिसे हदीस ईमानन ایمانا व एहतसाबन احتسابا कहती है) आपके आमाल की हक़ीक़ी क़द्र व क़ीमत बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। एक हदीस के अनुसार 40 नेकिया हैं। अगर कोई व्यक्ति उनमें से एक अज्र की उम्मीद और वादे पर एतिबार करते हुए अंजाम देता है तो अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा। इन में सब से आला नेकी इतनी मामूली है जैसे पड़ोस के यहां कुछ दूध तोहफ़े में भेजना (बुख़ारी)।

क़ल्ब और बदन के अफ़आल (काम)

क़ल्ब और बदन के सात अफ़आल ऐसे हैं जो आपकी अन्दरूनी

ज़ात को क़ुरआन की तिलावत में जज़्ब करने मे बहुत मददगार साबित हो सकते हैं। इनमें से कुछ आप कर रहे होंगे, लेकिन उनका मुकम्मल फ़ायदा इसलिए हासिल न कर पा रहे होंगे कि या तो आप उनको मुनासिब अन्दाज़ से न कर रहे होंगे या आपको इसकी जानकारी न होगी कि आप उनसे क्या हासिल कर सकते हैं। कुछ आप नहीं कर रहे होंगे। ये अफ़आल (काम) अहम हैं और आपको इन्हें सीख लेना चाहिए।

इनमें से किसी के लिए भी इस से ज़्यादा समय दरकार न होगा जितना आप इस समय क़ुरआन की तिलावत को दे रहे होंगे। इन के लिए सिर्फ़ ज़्यादा तवज्जुह और ध्यान की, सूझ-बूझ के साथ कुछ क़दम उठाने की और मुनासिब अन्दाज़ से करने की ज़रूरत है।

आपके दिल की प्रतिक्रिया

पहलाः अपने दिल को बेदार दिल बना लें कि क़ुरआन जो कुछ कहे, वह उसका जवाब दे।

आप क़ुरआन में जो कुछ भी पढ़ें, उसे अपने दिल तक जाने दें ताकि वह उस में नई ज़िन्दगी और रूह फूंक दे। अपने दिल को कलामुल्लाह के बयान के अनुसार इन तमाम हालतों से गुज़रने दें: हम्द, शुक्र, हैरत, रोअब, मोहब्बत, भरोसा, सब्र, उम्मीद व ख़ोफ़, रंज व हसरत, तदब्बुर, याददिहानी, आज्ञापालन और मानना – जब तक आप यह न करेंगे, आपकी तिलावत से आप के हिस्से में आपके होंटों की हरकत से ज़्यादा कुछ न आएगा।

मिसाल के तौर पर:

- ☆ जब आप अल्लाह का नाम और उसकी सिफ़ात सुनें, आपका दिल शुक्र, मोहब्बत, रोअब और दूसरी मुनासिब कैफ़ियात से भर जाना चाहिए।
- ☆ जब आप अल्लाह के पैग़म्बरों का ज़िक्र सुनें, आपके दिल में उनकी पैरवी करने की आरज़ू बेदार हो जानी चाहिए और उन लोगों से नफ़रत हो जिन्होंने उनका विरोध किया।

☆ जब आप आख़िरत का ज़िक्र, पढ़ें, तो आपका दिल जन्नत की आरज़ू करे, जहन्नम में एक लम्हा के लिए ही सही, फैंके जाने के तसव्वुर ही से कांप-कांप जाए। जब आप गुनहगार क़ौमों और लोगों के बारे में पढ़ें जो गुमराह हुए और अल्लाह के अज़ाब के हक़दार ठहरे, आप उन जैसा बनने को सख़्त नापसन्द करें।

☆ जब आप उन नेक लोगों के बारे मे पढ़ें जिन से अल्लाह मुहब्बत करता है और इनाम से नवाज़ता है, आप उन जैसा बनना चाहें।

☆ जब आप मगफ़िरत और रहमत के वादे पढ़ें, इस दुनिया में बरकत व इज़्ज़त के वादे पढ़ें, आख़िरत में उस की रज़ा और नज़दीकी के वादे पढ़ें, तो आपका दिल उन मक़सदों के लिए काम करने और उनका हक़दार बनने के लिए तड़पे।

☆ जब आप उनका ज़िक्र पढ़ें, जो क़ुरआन से ला तअल्लुक़ हैं, जो उसे क़बूल नहीं करते, जो उसके अनुसार ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते, आपको ख़ौफ़ आए कि आप उन जैसे न हो जाएं और आप संकल्प करें कि ऐसे नहीं होंगे।

☆ जब आप इसकी पुकार सुनें कि अल्लाह से अपना वादा पूरा करो, इसकी रास्ते में संघर्ष करो, तो आप अपने संकल्प को ताज़ा करें और जो कुछ आपके पास है, उसके हुज़ूर पेश कर दें।

कभी-कभी जब कोई ख़ास शब्द या आयत आपके अन्दर कोई चिंगारी रोशन कर दे तो क़ल्ब में ऐसी कैफ़ियात आप से आप पैदा होती है। कभी आपको ऐसी हालतें पैदा करने के लिए इरादी कोशिश करनी होगी। अगर आप कोई मुनासिब प्रतिक्रिया तुरन्त नहीं पाते, तो ज़रा ठहर जाएं, जो हिस्सा तिलावत कर रहे थे, उसे बार-बार तिलावत करें यहां तक कि यह हालत आप पा लें। अपने दिल के तक़ाज़े पर किसी ख़ास आयत को बार-बार दोहराने की आपके अन्दर से इच्छा होगी, लेकिन अगर आप इरादा करके दोहराएं, ठहरें और

विचार करें तो आप महसूस करेंगे कि आपके दिल की प्यास और तलब बढ़ गई है।

इस कैफ़ियत का प्राप्त करना इतना अहम है कि अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने एक बार कहा:

> क़ुरआन को सिर्फ़ इस सूरत में पढ़ों के तुम्हारे दिल इस के अनुसार हों। अगर यह सामंजस्य न हों तो तुम हक़ीक़त में तिलावत नहीं कर रहे हो, इस लिए उठ जाओ और पढ़ना छोड़ दो। (बुख़ारी, मुस्लिम)।

आपकी ज़बान की प्रतिक्रिया

दूसरा: आप कुरआन में जो कुछ पढ़ें, उस पर उचित प्रतिक्रिया का इज़हार आपकी ज़बान से शब्दों में होना चाहिए।

ज़बान पर शब्द खुद-बखुद जारी हो जाना चाहिएं। कुरआन जो अन्दरूनी एहसासात पैदा करता है, उसके इज़हार के लिए मुनासिब कलिमात अपने आप ज़बान पर आ जाते हैं, जिस तरह वे दूसरे जज़्बात के लिए आते हैं। ख़ुशी या परेशानी की आवाज़ें, शुक्र, मोहब्बत, ख़ौफ़ और बेचैनी के शब्द – लेकिन अगर यह आप से आप ज़बान पर न आएं, तो कोशिश करके लाइए।

रसूलुल्लाह (स.अ.व.) रात के समय कुरआन इसी तरह तिलावत करते थे। हज़रत हुज़ैफ़ा (र.त.अ.) बयान करते हैं:

> एक रात मैं ने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पीछे नमाज़ पढ़ी। आप ने सूरह बक़रह से कुरआन की तिलावत की शुरूआत की। जब आयत में अल्लाह की रहमत का ज़िक्र आता, आप (स.अ.व.) उसको तलब करते। अल्लाह के अज़ाब का ज़िक्र आता, आप (स.अ.व.) उससे पनाह चाहते। अल्लाह की शान का ज़िक्र आता आप उसकी अज़मत बयान करते (सुबहान अल्लाह कह कर)। (मुस्लिम)

ऐसा ही बयान हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र०) का है, जिन्होंने एक बार रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के साथ हज़रत मैमूना के हुजरे में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास की फूफी थीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

कुछ आयतों पर निर्दिष्ट प्रतिक्रिया होनी चाहिए, जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हिदायत दी है। मिसाल के तौरपर जो सूरह अत्-तीन की आख़िरी आयत: اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ (अलैसल्लाहु बिअहकमिल हाकिमीन) की तिलावत करें, तो यह जवाब दे: بَلٰى وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ. (बला व अना अला ज़ालिका मिनश शाहिदीन) बेशक और मैं उस पर गवाह हूं। जो सूरह अलकि़यामा (75) की आख़िरि आयत اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِ الْمَوْتٰى (अलैसा ज़ालिका बिक़ादिरिन अला अंय्यूहियल मौता) पढ़े तो बला (بَلٰى) कहे: और जो अल-मुरसलात (77) की आख़िरी आयत فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ (फ़बि अय्यि हदीसिन बाअदहु यूमिनून) पढ़े तो कहे: امنا باالله (आमना बिल्लाही) (अबूदाऊद)। (ابـو داؤد) रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमााया कि जब उन्होंने जिन्नों को सूरः रहमान (55) सुनाई तो जब भी فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (फ़बि अय्यि आला-ई रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान) कहा तो जिन्नों ने जवाब दिया: हम आपकी किसी नेमत को नहीं झुटलाते। सारी तारीफ़ें आपके लिए हैं।

हमें रसूलुल्लाह ﷺ की मिसाल और शिक्षाओं से जो कुछ मालूम है, उस में से कुछ बयान की गई हैं। आपके लिए यह मुश्किल न होना चाहिए कि थोड़ी सी मेहनत से इन मिसालों की रोशनी में तारीफ़, पुष्टिकरण, इन्कार और दुआ के ख़ुद अपनी प्रतिक्रिया का निर्धारण करें। سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَر، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (सुबहानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर, ला ईलाहा इल्लल्लाहु) कहा करें और तौबा करें, इस्तिग़फ़ार करें, उसके गुस्से और दोज़ख़ की आग से पनाह मांगें और जन्नत में उसकी नज़दीकी की इच्छा करें।

आपकी आंखों में आंसू

तीसरा: अपने दिल के जज़्बात को आंखों के रास्ते बहने दीजिए, ख़ुशी या ख़ौफ़ के आंसू, जो कुछ आप ने क़ुरआन में पढ़ा है, उसका जवाब!

अगर आपका दिल, जो कुछ आप तिलावत कर रहे हैं, उसके अनुसार कैफ़ियतों की पकड़ में है तो आपकी आंखों में आंसू आने चाहिएं। सिर्फ़ एक ग़ाफ़िल, बंजर या मुर्दा दिल के साथ ही आंखें ख़ुश्क रह सकती हैं। हमेशा ख़ौफ़ की कारण नहीं, बल्कि सच्चाई पाने पर ख़ुशी में, उसकी रहमत व करम का एहसास होने पर, उसके वादे पूरे होते देख कर भी आंखें तर हो जाती हैं। क़ुरआन आंखों की इस शिर्कत पर ज़ोर देता है।

तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं में बह पड़ती हैं, इसलिए कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। (अल मायदा 5:83)

और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं। (बनी इस्राईल 17:109)

रसूले अकरम ﷺ, सहाबा-ए-किराम (र०) और वे लोग जो क़ुरआन की हक़ीक़त का एहसास रखते थे जब क़ुरआन पढ़ते थे तो अकसर रोते थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: क़ुरआन रंज व ग़म के साथ उतारा गया है, जब तुम क़ुरआन की तिलावत करो तो अपने को ग़मज़दा बनाओ (अबू याला, अबू नईम)। एक दूसरी हदीस के अनुसार: क़ुरआन की तिलावत करो और रोओ। अगर अपने आप रोना न आए, तो कोशिश करके रोओ। (इब्न माजा)

एक बार आप ग़ौर करें और सोचें कि क़ुरआन क्या कह रहा है और तसव्वुर करें कि आप से कुछ कह रहा है तो आंखों में आंसू आकर, रुख़सारों पर बहते देर नहीं लगेगी। अगर आप उन भारी ज़िम्मेदारियों का अहसास करें जो क़ुरआन आप पर डालता है और उन ख़ुशख़बरियों और चेतावनियों का तसव्वुर करें जो क़ुरआन आप

तक पहुंचाता है तो आप आवाज़ बुलन्द करके रोएंगे।

आपके जिस्म के अन्दाज़

चौथा: ऐसा ज़ाहिरी अंदाज़ इख़्तियार कीजिए जिससे अपने मालिक के कलाम के लिए आपके अन्दरूनी एहतिराम, लगन और आत्मसमर्पण का इज़हार होता हो।

क़ुरआन इस तरह के अन्दाज़ के बारे में कई स्थानों पर बयान करता है। सच्चे साहिबे ईमान, ज़मीन पर पेशानी टेक देते हैं, सजदा करते हैं, ख़ामोश हो जाते हैं और सुनते हैं, जब तिलावत करते हैं तो उनकी खालें नर्म पड़ जाती हैं और कांपने लगती हैं। क़ुरआन की कुछ आयतों की तिलावत पर सजदा-ए-तिलावत करने का हुक्म साफ़ तौर पर बताता है कि आप जो कुछ पढ़ रहे हैं, जिस्म से उसका इज़हार होना चाहिए।

जिस्म के अन्दाज़ क्यों अहम हैं?

इंसान का ज़ाहिर उसके बातिन पर जबरदस्त प्रभाव डालना है। जिसम की हाज़िरी, दिल को भी हाज़िर रखती है। क़ुरआन का अध्ययन करते हुए आपके जिस्म का रवैया उस रवैया से बिल्कुल अलग होना चाहिए जो एक आम किताब का अध्ययन करते हुए होता है। इसी लिए तिलावत के लिए बहुत से आदाब बताए गए हैं।

इमाम ग़ज़ाली (रह०) कहते हैं कि आप वज़ू किए हुए हों, पुरसुकून हों, नर्म आवाज़ में पढ़ें, क़िबले की तरफ़ मुंह हो, सिर झुका हुआ हो। घमण्डी अन्दाज़ से न बैठें बल्कि इस तरह बैठिए जिस तरह अपने उस्ताद के सामने बैठते हैं।

'किताबुल अज़्कार' में नववी (रह०) कुछ और इजाफ़ा करते हैं: मुंह को अच्छी तरह साफ़ करना चाहिए। जगह पाक साफ़ हो, चेहरे का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ हो और जिस्म से आजिज़ी और आत्मसमर्पण का इज़हार हो।

तरतील के साथ (ठहर-ठहर कर) तिलावत करना

पांचवा: कुरआन को ठहर-ठकर कर पढ़िए।

हमारी ज़बान का कोई एक शब्द तरतील का मुकम्मल अर्थ अदा नहीं कर सकता। अरबी में इसका अर्थ है कि किसी क़िस्म की जल्दी के बग़ैर, स्पष्ट तौर पर सुकून से नपे तुले लहजे में, ग़ौर व फ़िक्र के साथ – जिसमें ज़बान, दिल और जिस्मानी अंग सब मुकम्मल तौर पर सामंजस्य (हमआहंग) में हों।

यह तिलावत कुरआन का वह मतलूब तरीक़ा है जिसकी हिदायत अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को बिल्कुल शुरूआत में उस समय दी जब उन्हें रात का ज़्यादा तर हिस्सा नमाज़ में खड़े होकर कुरआन पढ़ने का हुक्म दिया गया। (अल-मुज़्ज़म्मिल 73:4) कुरआन को आहिस्ता-आहिस्ता और रफ़्ता-रफ़्ता नाज़िल करने की हिकमत अल्लाह ने यह बयान की: ताकि इसके द्वारा तुम्हारे दिल को जमाव प्रदान करें। (अल-फ़ुरक़ान 25:32)

दिल को कुरआन की तिलावत से जोड़ने और ताक़त और ज़ोर पैदा करने में तरतील का एक अहम हिस्सा है। जल्दी-जल्दी पढ़ने के मुक़ाबले में तरतील से पढ़ने में शान व शौकत और जलाल का इज़हार होता है, ग़ौर व फ़िक्र और तदब्बुर के लिए मौक़ा मिलता है, और रूह व आत्मा पर एक अमिट छाप क़ायम होती है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र०) से रिवायत है कि मैं जल्दी जल्दी मुकम्मल कुरआन पढ़ने के मुक़ाबले में सूरह बक़रह और आले इमरान को तरतील से पढ़ना अपने लिए बेहतर समझता हूं या अल-बक़रह और आले इमरान के मुक़ाबले में अलक़ारिया और अल-ज़िलज़ाल तरतील और ग़ौर व फ़िक्र के साथ पढ़ना ज़्यादा बेहतर है।

तरतील (ठहर-ठहर कर पढ़ने) में न सिर्फ़ सुकून, स्पष्टता, ठहराव, ग़ौर व फ़िक्र और जिस्म और रूह का सामंजस्य शामिल है,

बल्कि साथ ही कुछ शब्दों और आयतों की बार-बार तिलावत की लाज़मी तहरीक होती है। जब दिल किसी ख़ास आयत में जज़्ब हो कर एक जान हो जाता है, तो बार-बार पढ़ते हुए, हर बार एक नया ज़ायक़ा और लुत्फ़ महसूस होता है। फिर जैसा कि हमने कहा है बार-बार की तिलावत से दिल की हालत उस विषय से मिल जाती है, जिसकी आप तिलावत कर रहे हैं।

रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में रिवायत है कि आप ﷺ ने एक बार बिस्मिल्लाहिर्ररहमानिर्ररहीम 20 बार दोहराई (एहयाउल उलूम)। एक बार आप पूरी रात यह आयत बार-बार पढ़ते रहे:

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (المائدہ۵:۱۱۸)

अब अगर आप उन्हें सज़ा दें तो वे आपके बन्दे हैं और अगर माफ़ करदें तो आप ग़ालिब और दाना हैं। (निसाई, इब्ने माजा)

हज़रत सईद बिन जुबैर (र०) एक बार यह आयत बार-बार पढ़ते रहे: وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ (वमताज़ुल यौमा, अय्युहल मुजरिमून) ऐ मुजरिमों! आज के दिन तुम अलग हो जाओ और रोते रहे, आंसू बहाते रहे (एहयाउल उलूम)।

नफ़्स को पाक करना

छठा: जिस हद तक मुमकिन हो, अपने को पाक कीजिए।

आप जानते हैं कि सिर्फ़ पाक लोग ही क़ुरआन को छूने का हक़ रखते हैं। لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ (الواقعہ ۵۶:۷۹) (ला यमस्सूहू इल्लल मुताह्हरून) इस क़ुरआनी आयत को लफ़्ज़ी अर्थ में लिया जाए तो इस का अर्थ रस्मी तहारत (पाकी) है। हदीसों और इजमाअ (اجماع) से यह साबित है कि तिलावत के लिए वज़ू के ज़रिए सफ़ाई हासिल की जाती है।

जिस्म और लिबास और जगह की सफ़ाई के अलावा पाकी के कई दूसरे पहलू हैं। आप पहले ही देख चुके हैं कि नीयत और इरादे

की पाकी कितनी अहम है। क़ल्ब और अंगों की उन गुनाहों से पाकी बराबर की अहमियत रखती है जो कुरआन नाज़िल करने वाले के ग़ज़ब का कारण बन सकते हैं।

कोई इन्सान गुनाहों से मुकम्मल तौर पर पाक नहीं हो सकता। लेकिन आप कोशिश करें कि जितना उनसे बच सकते हैं, बचें, और अगर आप से कुछ गुनाह हो जाएं तो जितनी जल्द मुमकिन हो सके, नदामत (पछतावे) के साथ अल्लाह की तरफ़ रूजू कीजिए और उससे मग़फ़िरत तलब कीजिए। यह भी ख़याल रखिए कि जब आप कुरआन की तिलावत कर रहें हैं, तो हराम खाना नहीं खा रहे, हराम लिबास नहीं पहन रहे और हराम माल से ज़रूरतें पूरी नहीं कर रहे हैं। आप जितने पाक होंगे, आपका दिल उतना ही आपका साथ देगा, कुरआन के लिए ज़्यादा खुलेगा, उसे समझेगा और उससे फ़ायदा उठाएगा। और उतना ही आप उन लोगों की तरह हो जाएंगे जो बुलन्दपाया कुरआन को जो महफ़ूज़ किताब में लिखा है ' اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ' فِىْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ (الواقعہ ۵۶:۷۷-۷۸) (इन्नहु लकुरआनुन करीमुन फ़ी किताबिम मकनून) छूने का हक़ रखते हैं।

दुआ

सातवा: जब आप कुरआन पढ़ें तो अल्लाह की मदद, उसकी रहमत, हिदायत और हिफ़ाज़त के लिए दुआ कीजिए।

दुआ मांगिए, अपने दिल से, ज़बान से और अपने आमाल से। कुरआन के सफ़र में आपको सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिए। इस तवक्कुल की कैफ़ियत आप पर सिर्फ़ ग़ालिब ही न हो, आप उसका इज़हार भी करें। अपने सफ़र के हर मरहले पर आप इसको पुकारें। कुरआन के अध्ययन के दौरान दिल को हाज़िर रखने और उस पर अमल करने में उसकी मदद मांगिए। अपनी ख़ामियों और कोताहियों पर उससे माफ़ी मांगते रहिए। अल्लाह के कलाम के क़रीब होने में अल्लाह से बेनियाज़ी और उदासीनता से

भी बचिए। ये कबीरा गुनाह हैं। आपको आजिज़ी (विनम्रता) की ज़रूरत है न कि घमन्ड की, तवक्कुल की ज़रूरत है न कि अल्लाह के सामने खुदमुख़्तारी की कैफ़ियत की।

यह उम्मीद और यक़ीन कि जो कुछ आप मांगेंगे, दिया जाएगा, हमेशा आपके साथ होना चाहिए। इसके बग़ैर आपकी दुआ आप के लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द न होगी। यह कुरआन की बुनियादी शिक्षाओं में से एक है। ज़रा इन आयतों पर नज़र डालिए:

परवरदिगार, जो ख़ैर भी तू मुझ पर नाज़िल करदे मैं उसका मोहताज हूं। (अल-क़सस 28:24)

अपने रब की रहमत से मायूस तो गुमराह लोग ही हुआ करते हैं।
(अलहिज्र 15:56)

और तुम्हारे 'रब' ने कहा है : तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार का उत्तर दूंगा। जो लोग मेरी 'इबादत' से अहंकारवश कतराते हैं, जल्द ही वह अपमानित होकर, 'जहन्नम' मे प्रवेश करेंगे।

(अल-मोमिन 40:60)

मैं उनसे क़रीब ही हूं। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता हूं और जवाब देता हूं लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि मेरी दावत पर लब्बैक कहें, मुझ पर ईमान लाएं, ताकि वे सीधा रास्ता पालें।
(अल-बक़रह 2:186)

आइए देखें कि हमें अल्लाह से किन शब्दों में दुआ मांगना चाहिए।

अल्लाह की हिफ़ाज़त:

اعوذ بالله من الشيطن الرجيم

में शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहता हूं।

हम बयान कर चुके हैं कि शैतान से पनाह तलब करना कितनी

अहमियत रखता है। कुरआन ने इसे ज़रूरी बना दिया है (अन-नहल 16:98)। इन शब्दों को रस्मी तौर पर या जादूई फ़ारमूले के तौर पर अदा न कीजिए। इस बात को महसूस कीजिए कि आप को अपने काम में सख़्त ख़तरों का सामना है, शैतान आपका सबसे बड़ा दुश्मन है जो आपको आपकी मेहनत के फल से महरूम करने के लिए हर मुमकिन काम करेगा और यह कि अल्लाह, सिर्फ़ अल्लाह ही आपको इस से बचा सकता है।

कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि शैतान से पनाह चाहने के लिए आप लम्बी दुआ करना चाहें जो कुरआन में आती हैं (अल-मौमिनून 23:97)। या जिन की शिक्षा रसूलुल्लाह ﷺ ने दी है। आप आख़िरी दोनों सूरतें अल-फ़लक़ (113) और अन-नास (114) भी पढ़ सकते हैं।

समय-समय पर आपको अल्लाह की तरफ़ रूजू करना चाहिए, इस लिए भी कि वह आपके दिल को सीधे रास्ते पर रखे:

ऐ हमारे परवरदिगार, हमें हिदायत बख़्शने के बाद, फिर कहीं हमारे दिलों को गुमराही में मुबतला मत करना। हमें अपने पास से रहमत अता कर, बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। (आले इमरान 3:8)।

कुरआन की तिलावत शुरू करते हुए अल्लाह की पनाह चाहना और उसकी रहमत के साये का तलबगार होना लाज़मी है। लेकिन कुरआन की मंशा यह मालूम होती है कि यह एक लगातार और मुसलसल जारी रहने वाला अमल होना चाहिए। लेकिन जहां इसकी सब से ज़्यादा ज़रूरत है, और जहां आपको अकसर उन्हें पढ़ना चाहिए वह समय है जब आप कुरआन की समझ हासिल करना चाहें।

अल्लाह के नाम से:

بسم الله الرحمٰن الرحيم

अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।

इसकी अहमियत और हक़ीक़त पर पहले गुफ़्तगु (चर्चा) की जा चुकी है। यह आयत कुल 114 सूरतों में से सिवाए एक के, हर एक के शुरू में आई है। उसके नाम से शुरूआत करना एक तरफ़ आपको कुरआन की नेमत से नवाज़ने पर आपके शुक्र के एहसास और दूसरी तरफ़ हर मुमकिन मदद के लिए इस पर एतिमाद और तवक्कुल की निशानी है।

कुरआन की बरकतों की तलब:

आपको कुछ दूसरी दुआएं भी सीखनी चाहिएं:

رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا (طٰہٰ ۲۰:۱۱۴)

ऐ मेरे रब! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर।

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ को तालीम दी कि इन शब्दों में आजिज़ी से दुआ करें। साथ ही कुरआन के नाज़िल होने के समय सब्र और इस्तिक़ामत की तरफ़ तवज्जह दिलाई: और जल्दी न करो जब कुरआन तुम पर नाज़िल हो रहा हो। जब कोई व्यक्ति कुरआन का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा हो तो अल्लाह के नाम से मदद मांगना ख़ास तौर पर फ़ायदेमन्द है। सिर्फ़ सब्र और अल्लाह की मदद से ही गुत्थियां सुलझ सकती हैं और इंसान कुरआन पर अमल कर सकता है।

एक दूसरी ख़ूब सूरत दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَبْدُكَ، اِبْنُ عَبْدِكَ، اِبْنُ اَمَتِكَ نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاءُكَ اَسْئَالُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِيْ كِتَابِكَ، اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِاسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ، وَنُوْرَ صَدْرِيْ وَجَلَاءَ حُزْنِيْ وَذَهَابَ هَمِّيْ وَغَمِّيْ (مسند احمد، ابن حبان)

"खुदाया! मैं तेरा बन्दा हूं, तेरे बन्दे का बेटा हूं, तेरी बन्दी का बेटा हूं, मेरी पेशानी तेरी मुट्ठी में है, मुझ पर तेरा ही हुक्म लागू है। मेरे हक़ में तेरा फ़ैसला बिल्कुल इंसाफ़ वाला है, मैं तुझ से तेरे हर उस नाम के वास्ते से जो तेरे लिए सज़ावार है, जो तूने अपने लिए रखा है या तूने अपनी किताब में उतारा है, या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को बताया है, या तूने अपने पास अपने ग़ैब के ख़ज़ाने में उसे छुपा ही रहने दिया है – यह प्रार्थना करता हूं कि कुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म का इलाज और मेरी फ़िक्र व परेशानी का इलाज बनादे।"

नीचे लिखी दुआ आम तौर पर उस समय की जाती है जब कोई व्यक्ति कुरआन की तिलावत मुकम्मल करता है, लेकिन इसका विषय इतना व्यापक है कि कभी-कभी अल्लाह तआला को इन शब्दों से पुकारना यक़ीनन बरकत का सबब होगा:

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً ط اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَانَسِيْتُ ط وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ، وَارْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ.

खुदाया मुझे कुरआने अज़ीम के वास्ते से अपनी रहमत से सफ़ल कर। उसको मेरे लिए क़ाइद, रोशन और हिदायत बना दे, ऐ मेरे अल्लाह! मैं इस में से जो भूल गया हूं मुझे याद करादे और जो कुछ मैं नहीं जानता उसके ज़रिए मुझे इसका इल्म अता करदे और मुझे दिन और रात के तमाम वक़्तों में तिलावत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, और ऐ दोनों जहां के पालने वाले! इस कुरआन को मेरे हक़ में दलील बना दे।

कुरआन के अध्ययन की शुरूआत करते हुए, ख़त्म पर और बीच में भी, जिन शब्दों में चाहें, अल्लाह से इस्तिग़फ़ार भी करते रहिए। इस्तिग़फ़ार के लिए तीन कुरआनी दुआएं उन स्थानों पर मिलेंगी। आले

इमरान 3:16, अल मौमिनून 23:118, आले इमरान 3:193

आम दुआएं

मख़सूस शब्दों की इन दुआओं के साथ-साथ, आप अल्लाह की तरफ़ रूजू करके खुद अपने शब्दों में उस से उन गुणों और रवैयों का सवाल कर सकते हैं जिन की कुरआन से फ़ायदा हासिल करने में आपको ज़रूरत है।

ऐ अल्लाह! मेरी आंखें खोल दे, मुझे हक़, हक़ नज़र आए, झूट, झूट नज़र आए, मुझे रोशनी अता कर कि मैं तेरे रास्ते को पहचान सकूं, मेरी कोशिशों में मेरी मदद कर, मेरे इरादों को मज़बूत करदे, अपने कलाम के आगे मुझे आजिज़ी अता कर, तेरी रहमत और हिदायत मिलने पर मुझे खुशी हो, तमाम परेशानियों, फ़ैसलों और मुआमलात में रहनुमाई कर, मुझे हर तरह के लालच के मुक़ाबले में खड़े होने का होसला दे, सब अच्छे काम करने की ताक़त अता कर, सुस्ती व काहिली दूर करदे, तेरा कलाम मेरी फ़िक्र व अमल को ताक़त दे, मेरी हर ज़रूरत को पूरा करे, जब मैं पेरशान हूं तो सुकून दे, तकलीफ़ में हूं तो राहत अता कर, अपना और अपनी हिदायत का अध्ययन करने, समझने, जानने और सीखने में मदद दे, मेर क़दमों को जमादे, कामयाबी से पहले मेरे क़दम न रुकें, ताअस्सुबात से मुझे निजात दे, आजिज़ी अता कर, जो कुछ मैं सीखूं उसे मानने, उसकी पैरवी करने और उसके अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता कर, मुझे इस क़ाबिल बना कि कुरआन ने जो मिशन सुपुर्द किया है उसे पूरा करूं।

समझ कर पढ़ना

आख़िरी बात, जो कम अहम नहीं है, यह है कि जो कुछ आप कुरआन में पढ़ रहे हैं, उसे समझने के लिए, आपको अपने अन्दर की शख़्सियत को इस अमल में शामिल करने की ज़रूरत होगी। यह

इसके लिए, सब से अहम और प्रभावी तरीक़ों में से एक है।

अगरचे किसी के दिल तक क़ुरआन का पैग़ाम पहुंचने के लिए ज़रूरी है कि मालूम हो क़ुरआन उससे क्या कह रहा है? लेकिन यह ऐसी अनिवार्य शर्त नहीं है कि इसके बग़ैर इन्सान, क़ुरआन की बरकतों में से कुछ हिस्सा भी न पाए। बहुत से ऐसे हैं जो क़ुरआन का हर शब्द समझते हैं, लेकिन उनके दिल क़ुरआन के लिए बन्द रहते हैं। बहुत से हैं जो इसका एक शब्द भी नहीं समझते, लेकिन उन्हें अल्लाह से लगाव, मोहब्बत, नज़दीकी और इताअत की रूह हासिल होती है। ऐसा इस लिए है कि क़ुरआन से सम्बंध की निरभर्ता कई और तत्वों पर है। सात पहले बयान किए जा चुके हैं जिन में से 'समझना' एक है। हमेशा लाखों लोग ऐसे रहेंगे जिन्हें अरबी का एक शब्द भी न आता होगा, न अनुवाद पढ़ सकते होंगे, न इस तरह के कामों के लिए उनके पास समय होगा। फिर भी उन्हें मायूस नहीं होना चाहिए। जब तक वह क़ुरआन को समझने के लिए साधन इख़्तियार करने की अपनी सी कोशिश करते रहें, जब तक कि वे ज़रूरी शर्तों के साथ इसको समझना चाहें, जब तक कि वे क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की सच्ची कोशिश करते रहें जो उनके इल्म में दूसरे साधनों से आएं, जब तक कि वे क़ुरआन को पढ़ते रहें, चाहे उन्हें इसका अर्थ न आता हो, वे इसकी बरकतों में से अपना हिस्सा पाने की उम्मीद कर सकते हैं।

लेकिन इन सब से क़ुरआन जो कुछ आप से कहता है इसे समझने की बे इन्तिहा अहमियत में ज़र्रा बराबर भी कमी नहीं आती। यहां हम 'समझने' का शब्द इस अर्थ में इस्तेमाल कर रहे हैं कि शब्दों का अर्थ मालूम हो। ग़ौर व फ़िक्र, मुकम्मल अर्थों तक पहुंचना, हालात पर इत्लाक़ करना, इन बातों पर हम आगे चल कर बातचीत करेंगे।

सीधा मतलब को समझना क्यों ज़रूरी है?

कुरआन के सीधे अर्थ की समझ आपको अपनी तवज्जुह उस पर केन्द्रित करने में बहुत मदद देगा, इससे समझ की विभिन्न हालतों को तहरीक मिलेगी, क़ल्ब और जिस्म से ऐसे काम होंगे जिनकी आपके अन्दरूनी वुजूद को कुरआन के आमने-सामने करने में ज़रूरत है।

दूसरी बात यह कि समझ कर ही आप इस क़ाबिल होंगे कि शब्दों के द्वारा उस अमल का आग़ाज़ कर सकें जिस से आप अपना ईमान हासिल करें और उसे ताक़त दें ताकि आप उस ईमान की रोशनी में कुरआन की शिक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारें।

(4)

तिलावत के आदाब

क़ुरआन के साथ लम्बी रिफ़ाक़त आपकी सब से प्यारी आरज़ुओं और कार्यों में से एक हो जाना चाहिए। इसकी तिलावत जितनी ज़्यादा होगी और जितनी ज़्यादा से ज़्यादा आप कर सकते हैं, करें। जितना ज़्यादा समय आपको मिल सके, ख़ासतौर से रात का समय क़ुरआन के साथ बसर कीजिए।

रसूलुल्लाह ﷺ और आप ﷺ के साथियों की रूहानी तरबियत इसी तरह अल्लाह के रास्ते मे की गई ताकि क़ुरआन जो भारी बोझ और ज़िम्मेदारी उन पर डाल रहा है, उसके लिए वे तैयार हो सकें।

कितनी बार पढ़े?

आपको रोज़ाना कुछ न कुछ क़ुरआन ज़रूर पढ़ना चाहिए। अपनी ज़िन्दगी के किसी दिन को मुकम्मल न समझिए जब तक कि उसका कुछ न कुछ हिस्सा आप ने क़ुरआन के साथ ख़र्च न कर लिया हो। कभी कभार लम्बे हिस्से के मुक़ाबले में यह बेहतर है कि पाबंदी से रोज़ाना छोटा हिस्सा ही पढ़ा जाए।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह को वे काम पसन्द हैं जो बाक़ायदगी (पाबन्दी) से किए जाएं, चाहें थोड़े हों (बुख़ारी, मुस्लिम)। आप ﷺ ने ख़ास तौर पर ख़बरदार किया कि क़ुरआन बाक़ायदगी `स पढ़ना चाहिए, वरना जो कुछ हासिल किया है वह आसानी से ज़ाया हो जाएगा (ज़हन से निकल जाएग)। क़ुरआन

के साथी की मिसाल बंधे ऊंट की सी है, इन्सान के पास वह उस समय तक है जब तक वह उसकी देखरेख करता है और अगर खुला छोड़ दे तो वह भाग जाता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

कितना पढ़ा जाए?

इसका कोई निर्धारित जवाब नहीं। यह हर आदमी के लिए विभिन्न होगा, अलग-अलग हालात में अलग-अलग होगा। रहनुमा उसूल वह होना चाहिए जो अल्लाह तआला ने, तमाम इन्सानी मजबूरियों को सामने रख कर खुद बयान किया है: पढ़ो, जो कुछ तुम आसानी से पढ़ सको। (अल-मुज़म्मिल 73:20)

इस हवाले से सहाबा और ताबईन के अमल में ख़ासा फ़र्क़ था। कुछ लोग पूरा कुरआन दो महीने में ख़त्म कर लिया करत थे, कुछ एक महीने में, कुछ दस दिन में, कुछ एक हफ़्ते में, कुछ एक दिन में। आप नीचे दी गई हदीस को मैयार (कसौटी) के तौरपर सामने रखिए: जो तीन दिन से कम में कुरआन ख़त्म करता है, वह उसे समझता नहीं। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

एक बार इब्ने उमर (र०) ने – जब रसूलुल्लाह ने उन से एक महीने में कुरआन ख़त्म करने के लिए फ़रमाया – कम समय मे ख़त्म करने पर ज़िद की तो अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) ने फ़रमाया: सात दिन में पढ़ो और इस से कम न करो।

कुरआन की सात मंज़िलों में और 30 पारों में तक़सीम से भी कुछ इशारे मिलते हैं कि क्या मुनासिब है। इस सिलसिले में इमाम नववी (रह०) की हिदायत बहुत मुनासिब है। वह शख़्स जो ग़ौर व ख़ोज़ से गहरे अर्थों तक पहुंच सकता है, उसे कम पढ़ना चाहिए। इसी तरह जिन को शिक्षा, मुआमलात हुकूमत या इस्लाम द्वारा सौंपा गया अहम कार्यों को अंजाम देना है, वे भी कम पढ़ सकते हैं। (किताबुल अज़कार)

अध्ययन की मात्रा को बड़ी हद तक निरभर्ता अध्ययन के मक़सद पर होगी। अगर आप कुरआन के साथ समय ख़र्च करना चाहते हैं, या सिर्फ़ एक सरसरी निगाह डालना चाहते हैं तो आप तेज़ रफ़्तारी से पढ़ सकते हैं और इस लिए ज़्यादा पढ़ सकते हैं। अगर आप ग़ौर व फ़िक्र करना चाहते हैं तो आपको सुस्त रफ़्तारी से पढ़ना होगा, इस लिए कम पढ़ेंगे। इमाम ग़ज़ाली (रह०) जब किसी का यह क़ौल नक़ल करते हैं तो उनका यही मतलब होता है: "मैं कभी-कभी हर जुमे को, कभी-कभी हर हफ़्ते, कभी-कभी हर साल मुकम्मल कुरआन पढ़ता हूं, लेकिन दूसरी तरफ़ पिछले साल से (एक ख़ास अन्दाज़ से) अध्ययन कर रहा हूं, लेकिन अभी तक मुकम्मल नहीं कर सका हूं। (एहयाउल उलूम)

हमारे मौजूदा हालात में, मेरा ख़याल है कि हम में से ज़्यादातर को हर 8 महीने में एक बार कुरआन ख़त्म करने का निशाना ज़रूर रखना चाहिए। इसमें रोज़ाना 5 से 15 मिन्ट से ज़्यादा ख़र्च नहीं होंगे, इसकी निरभर्ता इस बात पर होगी कि आप अर्थ सीधे समझ रहें हैं या अनुवाद की मदद ले रहे हैं। मगर ज़िन्दगी में कभी कभार सात दिन में एक मुकम्मल तिलावत करने की कोशिश करनी चाहिए, या एक महीने में, ख़ासतौर से रमज़ान के महीने में – कुछ समय धीरे-धीरे पढ़ने के लिए मख़सूस करना चाहिए ताकि ग़ौर व फ़िक्र हो सके – ज़रूरी नहीं कि ऐसा रोज़ाना हो।

कब पढ़ा जाए?

दिन और रात का कोई भी हिस्सा तिलावते कुरआन के लिए अनुचित नहीं है। न बैठने का कोई ऐसा अन्दाज़ है जिस में आप तिलावत न करें। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

अपने रब का नाम सुबह व शाम याद किया करो। (अद-दहर 76:25)

जो उठते बैठते लेटते हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं। (आले इमरान 3:191)

अल्लाह का ज़िक्र करने का बहतरीन तरीक़ा यक़ीनन क़ुरआन की तिलावत है। इमाम नववी (रह०) कहते हैं कि सहाबा और ताबईन दिन और रात के हर हिस्से में क़ुरआन पढ़ा करते थे, चाहे वह एक जगह ठहरे हुए हों, या सफ़र कर रहे हों। फिर भी कुछ वक़्त ज़्यादा पसन्दीदा हैं इस लिए क़ुरआन के लिए रसूले अकरम ﷺ ने उन्हें मुन्तख़ब किया है। ये लम्हें ज़्यादा फ़ायदेमन्द होते हैं। इसी तरह कुछ जिस्मानी हालतों की सिफ़ारिश की गई है।

तिलावत के लिए बेहतरीन समय रात का है और बेहतरीन जिस्मानी हालत नमाज़ में क़याम (नमाज़ में खड़े होने की हालत) की है। यह बात प्रारम्भिक सूरतों में से एक अल-मुज़्ज़म्मिल के ज़रिए मालूम होती है। दूसरे स्थान पर भी यही बताया गया है। (आले इमरान 3:113, बनी-इस्राईल 17:79, अज़्-ज़ुमर 39:9)

यह करने के लिए ज़रूरी होगा कि आप क़ुरआन के कुछ हिस्से याद कर लें और रात के दौरान कुछ देर के लिए जाग कर उन्हें दोहराएं। आप सब के लिए हमेशा ऐसा करना कई वजह से मुमकिन न होगा। क़ुरआन उन मजबूरियों को मानता है। इसी लिए आपको इजाज़त देता है: “जितना तुम आसानी से तिलावत कर सकते हो”। इसका मतलब हुआ जितना हिस्सा चाहें, जिस समय चाहें, जिस तरह चाहें लेट कर, बैठ कर, पढ़ लें।

रात को नमाज़ के दौरान क़ुरआन की तिलावत के बे इन्तिहा फ़ायदे हैं और इसकी बड़ी ज़रूरत है। इसके लिए कुछ न कुछ समय, कितना ही कम क्यों न हो, चन्द मिनट सही, आपको ज़रूर ख़ास करना चाहिएं ताकि तयशुदा वक़्फ़ों के साथ बाक़ायदगी से तिलावत करें, वक़्फ़े कितने ही लम्बे क्यों न हों, जैसे हफ़्तावार, माहाना। मिसाली सूरत से मुमकिन हद तक क़रीब रहने के लिए यह अच्छा

होगा कि आप फ़ज्र और इशा की नमाज़ से पहले या बाद या सुबह सूरज निकलने के समय या रात बिस्तर पर जाने से पहले कुरआन की तिलावत करें। कुरआन ने सुबह सवेरे की तिलावत के लिए ख़ास तौर पर कहा है। (बनी इस्राईल 17:78)

तकिए से टेक लगा कर, बिस्तर या सोफ़े पर लेट कर कुरआन पढ़ना पसन्दीदा नहीं, मगर मना भी नहीं। किसी ख़ास वजह के बग़ैर आप हरगिज़ ऐसा न करें न इसे अपनी आदत बनाएं। फिर भी अगर कोई व्यक्ति इसलिए कुरआन पढ़ने से बिल्कुल ही महरूम रहे कि वह एक ख़ास तरह बैठने के लिए तैयार नहीं, तो यक़ीनन वह एक बहुत क़ीमती चीज़ का नुक़सान कर रहा है।

सेहत के साथ तिलावत

आपको कुरआन को सही-सही पढ़ना चाहिए, तजवीद का फ़न न भी सीख सकें तब भी ऐराब (اعراب) और शब्दों की अदाएगी सेहत के साथ होनी चाहिए। अरबी ऐसी ज़बान है कि पढ़ते हुए ऐराब (ज़बर, ज़ेर, पेश) की मामूली ग़लती से कभी-कभी अर्थ में बड़ा बदलाव हो जाता है। कभी-कभी अर्थ बिल्कुल बिगड़ जाते हैं और ऐसा अर्थ पैदा हो जाता है जो कुफ़्र के बराबर होता है।

एक महीने तक एक घन्टा रोज़ का लगातार अध्ययन किसी पढ़े लिखे व्यक्ति को इसके लिए कम से कम ज़रूरी प्रारम्भिक महारत हासिल करने के लिए काफ़ी होना चाहिए।

कोई व्यक्ति भी सेहत के साथ कुरआन की तिलावत करने की सच्ची कोशिश से बरी नहीं हो सकता। लेकिन जब आप सीख रहे हों, तो यह बात कि आप ऐसा नहीं कर सकते, तिलावत छोड़ने की वजह नहीं होना चाहिए। एक ग़ैर-अरब सेहत से पढ़ने के फ़न का माहिर नहीं हो सकता। यह भी हो सकता है कि आपको सीखने का मौक़ा न मिले। रसूलुल्लाह ﷺ को इन मुश्किलों का एहसास था। इसी लिए

आप ﷺ ने जिबराईल से कहाः ऐ जिबराईल, मैं अनपढ़ लोगों में भेजा गया हूं। इनमें बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हैं, लड़के और लड़कियां और वे लोग जिन्होंने कभी कोई किताब नहीं पढ़ी। (तिरमिज़ी)

इस हवाले से रसूलुल्लाह ﷺ के इतमीनान दिलाने वाले ये शब्द आप याद ज़रूर रखें, लेकिन किसी भी तरह उन्हें सीखने की कोशिश को छोड़ने या कम करने का बहाना न बनाएंः

जो व्यक्ति क़ुरआन पढ़ने में महारत रखता है (वह उन) महान फ़रिश्तों के साथ है जो वही-ए-इलाही ले कर उतरते हैं। जो पढ़ने मे ग़लती करता है और सही पढ़ने में परेशानी महसूस करता है, उसे दोहरा सवाब मिलेगा (पढ़ने का और कोशिश करने का)। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हुस्ने क़िराअत

क़ुरआन को सेहत के साथ पढ़ने के बाद का मरहला यह है कि क़िराअत का फ़न सीखा जाए ताकि उसे ख़ूबसूरती के साथ पढ़ा जाए, खुशगवार, मधुर शैली और मीठी आवाज़ में। कई हदीसें इस तरफ़ इशारा करती हैंः

क़ुरआन को अपनी आवाज़ों से ख़ूबसूरती दो। (अबूदाऊद)

अल्लाह तआला किसी बात को इतनी अच्छी तरह नहीं सुनता, जितनी किसी नबी के बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन की तिलावत करने को। (बुख़ारी, मुस्लिम)

जो क़ुरआन अच्छी आवाज़ से नहीं पढ़ता वह हम में से नहीं (बुख़ारी)।

मगर याद रखिए कि अस्ल ख़ूबसूरती वह है जो दिल में अल्लाह के डर से आवाज़ में आती हैः उस व्यक्ति की तिलावत व आवाज़ सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत है कि जब आप उसे तिलावत करते हुए सुनें तो ख़याल करें कि उसे अल्लाह का ख़ौफ़ है।

तवज्जुह से सुनना

जब भी क़ुरआन पढ़ा जाए उस की तरफ़ ध्यान और ख़ामोशी से सुनिए।

क़ुरआन ने ख़ुद इसका हुक्म दिया है:

जब क़ुरआन तुम्हारे सामने पढ़ा जाए तो उसे तवज्जुह से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (अल-आराफ़ 7:204)

ज़ाहिर बात है कि जब अल्लाह तआला आपसे बात कर रहा है तो आपको ख़ामोश होना चाहिए। लेकिन अरबी का शब्द "اِسْتَمَعَ" सिर्फ़ सुनने के मशीनी अमल को ज़ाहिर नहीं करता बल्कि ध्यान और क़बूल करने की एक ख़ास कैफ़ियत का इज़हार भी करता है।

इसका अर्थ यह है कि कोई भी काम, जो इस निर्देश के विरूध हो, न किया जाए – जिस समय क़ुरआन पढ़ा जा रहा हो, कोई और बात करना, दूसरे काम करते हुए क़ुरआन के कैसिट बतौर पसमंज़र मौसीक़ी (पृष्ठभूमि संगीत) के चलाना, सरग़ोशियां करना जब कि क़ुरआन पढ़ा जा रहा हो, सम्मेलन व समारोह की शुरूआत तिलावते क़ुरआन से करना जबकि कोई उस तरफ़ ध्यान न दे रहा हो और कोई सुन न रहा हो।

कुछ फ़ुक़हा (इस्लामी क़ानून के अच्छे जानकार लोग) तो उस समय नमाज़ पढ़ने से भी मना करते हैं, जब आप के नज़दीक ही क़ुरआन की तिलावत बुलन्द आवाज़ से की जा रही हो। इस क़ायदे से यह भी लाज़िम आता है कि जो व्यक्ति क़ुरआन की तिलावत कर रहा हो वह अपनी आवाज़ कम करे या ख़ामोशी से पढ़े, अगर उसकी बुलन्द आवाज़, उसके आस-पास लोगों पर ऐसे तक़ाज़े लागू करे जिन्हें पूरा करना उन के लिए मुश्किल या नामुमकिन हो। अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक का यह भी एक पहलू है। इसके अलावा

अगर लोगों को ख़्वाहिश न हो तो उन्हें कुरआन सुनने पर मजबूर न किया जाए। उन लोगों से जो कुरआन सेहत के साथ और हुस्ने किराअत के साथ तिलावत करते हैं ख़ासतौर पर फ़रमाइश करके कुरआन की तिलावत करवाना और सुनना बड़ी अच्छी बात है। नबी करीम (स.अ.व.) ने अपने सहाबा (र०) से फ़रमाईश करके कुरआन सुनते थे। आपको अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि नबी अकरम ﷺ ने इस बारे में क्या फ़रमाया है:

जो कुरआन की एक आयत भी सुनता है, उसे दोहरा सवाब दिया जाएगा और जो तिलावत करता है, यह क़यामत के रोज़ उसके लिए नूर होगा। (अहमद)

कुरआन ख़त्म करना

जब कभी आप मुकम्मल कुरआन की तिलावत ख़त्म करें और यह कितना ही बार-बार क्यों न हो, तो यह वक़्त ख़ुशी मनाने और नमाज़ पढ़ने का है। इमाम नववी (रह०) इस बारे में कुछ आदाब बयान करते हैं जिनकी बुनियाद वे मामुलात हैं जो सहाबा व ताबिईन इख़्तियार करते थे। यह ज़रूरी नहीं हैं, लेकिन मतलूब हैं। उन्हें जितनी ज़्यादती से आप इख़्तियार कर सकते हों, इख़्तियार करें।

एक: बेहतर है कि जुमे की रात को तिलावत की शुरूआत की जाए और जुमेरात की रात को ख़त्म किया जाए। कुछ लोग पीर की सुब्ह शुरू करने को प्राथमिकता देते थे। कुछ दूसरे लोग, दूसरे वक़्तों का चुनाव करते थे। इस तरह कोई भी समय ऐसा नहीं जो बरकत से ख़ाली हो और क़यामत के रोज़ गवाही न दे।

दो: आख़िरी हिस्सा नमाज़ के अन्दर पढ़िए ख़ास तौर से अगर ख़त्म तन्हाई में कर रहे हैं।

तीन: ख़त्म के समय दूसरे लोगों को जमा करें और साथ मिला कर आजिज़ी से दुआ करें।

हज़रत अनस बिन मालिक (र०) की आदत थी कि जब कुरआन ख़त्म करते तो अपने ख़ानदान वालों को जमा करते और दुआएं करते। (अबूदाऊद)

हाकिम इब्ने उतैबा से रिवायत है: एक बार मुझे मुजाहिद और उबादा इब्ने अबी लुबाबा ने बुलाया और मुझ से कहा: "हम ने तुम्हें इस लिए दावत दी है कि हम कुरआन ख़त्म करने वाले हैं और ख़त्म के समय की गई दुआएं कुबूल की जाती हैं।" एक दूसरी रिवायत में उन्होंने कहा: "कुरआन ख़त्म होने के समय अल्लाह की रहमतें नाज़िल होती हैं।"

चार: जिस दिन आप कुरआन ख़त्म करने का इरादा कर रहे हैं, रोज़ा रखें।

पांच: आख़िरी सूरह पढ़ते ही दूसरी तिलावते कुरआन की शुरूआत कर दें यानी सूरह अन-नास के बाद अल-फ़ातिहा और अल-बक़रह की शुरू की आयतें।

एक अर्थ में इस से हज़रत अनस बिन मालिक (र०) की इस हदीस की तामील (अनुपालन) हो जाएगी कि अफ़ज़ल अमल यह है कि क़याम किया जाए और रुख़सत हुआ जाए। जब उन से पूछा गया कि इसका क्या अर्थ है तो आप ने फ़रमाया: कुरआन ख़त्म करना और फिर शुरू करना।"

छह: ख़त्मे कुरआन के वक़्त दुआएं करें और आजिज़ी से रोएं और गिड़गिड़ाएं। उस वक़्त दुआ क़बूल होती है और अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है, यह बात बहुत ज़ोर देकर बताई गई है। जब कोई कुरआन की तिलावत करके दुआ करता है तो 40 हज़ार फ़रिश्ते आमीन कहते हैं।

दुआएं कीजिए – खुदा से डरते हुए, उम्मीदों के साथ, नर्मी और दूसरा के साथ, आजिज़ी के साथ – अपने लिए दुआ कीजिए, हर

ज़रूरत के लिए और हर एक के लिए, ख़ासतौर से उम्मत के इजतिमाई मसाइल के लिए, उसकी इज़्ज़त व वक़ार के लिए, उसके हुकमरानों की बेहतरी के लिए, दुश्मनों से उसकी हिफ़ाज़त के लिए, सलाह व तक़्वे की बातों या आपसी सहयोग और एकता के लिए, सही रास्ते पर उनकी मज़बूती के लिए।

क़ुरआन हिफ़्ज़ करना (याद करना)

क़ुरआन का जितना हिस्सा हिफ़्ज कर सकते हैं, ज़रूर कीजिए। क़ुरआन इस लिहाज़ से निराला है कि यह ख़ुद तक़ाज़ा करता है कि याद रखा जाए और हिफ़्ज़ किया जाए।

'हिफ़्ज़' शब्द अब याद करने के सीमित अर्थों में इस्तेमाल होता है, जबकि समझ और अमल भी इसके अर्थों में शामिल है। दूसरी ज़बानों में कोई ऐसा शब्द नहीं जो इसके अर्थ को ठीक-ठीक अदा करे।

अपने अन्दर क़ुरआन के असरात के लिए हिफ़्ज़ एक ज़रूरी ज़रिया है। यह कोई मशीनी रस्मी तरीक़ा नहीं है, बल्कि एक आला रूहानी अमल है। हिफ़्ज़ ही के ज़रिए आप क़ुरआन को नमाज़ों में पढ़ सकते हैं और जब आप उन शब्दों के ज़रिए अपने से हम कलाम होने वाले के सामने खड़े हों तो उन के अर्थ पर ग़ौर कर सकते हैं। मगर इसके अतिरिक्त इस तरह क़ुरआन आपकी ज़बान पर जारी रहता है, आपके दिल में रहता है और आपको याद रहता है और आपका हर समय का स्थाई साथी बन जाता है। आप जैसे-जैसे ज़्यादा हिफ़्ज़ करेंगे आप महसूस करेंगे कि इसकी तिलावत में आपकी अन्दरूनी ज़ात की शिर्कत होती जाती है और आपके ज़हन के लिए इसके अध्ययन और अर्थ को समझना आसानतर हो जाता है। नबी करीम ﷺ ने इस पर विभिन्न तरह से ज़ोर दिया है:

क़ुरआन हिफ़्ज़ करो, अल्लाह तआला उस दिल को अज़ाब नहीं देगा जिस में क़ुरआन होगा। (शरहे सुन्नह)

जिस व्यक्ति के अन्दर क़ुरआन का कोई हिस्सा न हो वह एक उजड़े हुए मकान की तरह है। (तिरमिज़ी)

क़ुरआन के लिए आपने जो समय ख़ास किया है, इसका कुछ हिस्सा हिफ़्ज़ में लगाइए, उसे नियमित और सुव्यवस्थित अंदाज़ से कीजिए। अपने निशानो को समय की अवधि (मुद्दत) में निर्धारित कीजिए। आपकी सूची में वे सब हिस्से शामिल होने चाहिएं जिन की नबी-ए-अकरम ﷺ आमतौर से नमाज़ों में या दिन और रात के ख़ास वक़्तों में तिलावत करते थे, या जिनकी तिलावत की अपने सहाबा (र०) को हिदायत करते थे, या जिनके फ़ज़ाइल का ज़िक्र करते थे। जब आप क़ुरआन बाक़ायदगी से पढ़ेंगे तो कुछ हिस्सों में ला महाला (अवश्य ही) कशिश महसूस करेंगे, और आपको उन्हें भी हिफ़्ज़ करना चाहिए।

(5)

अध्ययन और समझ

अहमियत व ज़रूरत

आप कुरआन की हक़ीक़ी और मुकम्मल बरकतें उस समय तक नहीं समेट सकते जब तक कि आप उसके अर्थ समझने में अपने आपको न लगाएं और मालूम न करें कि आपका पैदा करने वाला आप से क्या कह रहा है। बिला शक जो लोग अर्थ नहीं समझ सकते, उनके हिस्से में भी कुछ न कुछ बरकतें ज़रूर आती हैं। ज़ाहिर है कि मुसलमानों की एक भारी संख्या अरबी नहीं जानती और बहुत से लोगों की ज़बान में अनुवाद भी उपलब्ध नहीं है, लेकिन अगर वे इख़्लास व मोहब्बत और एहतिराम के साथ कुरआन की तिलावत करेंगे तो वे इसके फ़ायदों में से कुछ न कुछ हिस्सा पाने से महरूम न रहेंगे। क्योंकि किसी ऐसी हस्ती के साथ समय गुज़ारना, जिससे आपको मोहब्बत हो, अगरचे आप उसकी ज़बान न समझते हों, आपके इस सम्बंध को गहरा करता है, लेकिन अगर आप यह समझें भी कि वह क्या कह रहा है तो यह सम्बंध अधिक मज़बूततर होगा और बरकतें अज़ीमतर होंगी।

दूसरी तरफ़ सिर्फ़ अर्थ समझना भी बेफ़ायदा हो सकता है। बहुत से लोगों ने नबी-ए-अकरम ﷺ की अपनी ज़बान से कुरआन सुना, वे इसका हर शब्द समझते थे, फिर भी और गुमराह हुए। लाखों लोग हैं जिनकी ज़बान अरबी है, वे कुरआन की हर शब्द समझते हैं, लेकिन इसका उनकी ज़िन्दगियों पर कोई असर नहीं है। बेशुमार मुसलमान

और ग़ैर-मुस्लिम स्कॉलर क़ुरआन के अध्ययन में ज़िन्दगियां गुज़ार देते हैं, उनके अध्ययन में कोई ख़राबी मुश्किल ही से निकाली जा सकती है, लेकिन वे क़ुरआन के हक़ीक़ी समझ से महरूम रहते हैं।

लेकिन इसके बावजूद, आप के लिए क़ुरआन समझने की कोशिश में लग जाने की सख़्त ज़रूरत बाक़ी रहती है। क़ुरआन एक हिदायत, ज़िक्र, चेतावनी और शिफ़ा के तौर पर आया है। यह सिर्फ़ सवाब कमाने के लिए नहीं है। न सिर्फ़ यह एक इज़्ज़त के क़ाबिल पुरानी चीज़ है या पवित्र जादू है, बल्कि यह तो इस लिए आया है कि आप के अन्दर इन्क़िलाबी तबदीली ले आए और एक नई ज़िन्दगी की तरफ़ आपकी रहनुमाई करे। क़ुरआन को समझना उस नई ज़िन्दगी को पाने की यक़ीनी ज़मानत नहीं है, लेकिन इसके बग़ैर क़ुरआन के हक़ीक़ी मक़सद को हासिल करने और इनसानियत को इसकी तरफ़ दावत देने का काम बे इन्तिहा मुश्किल रहेगा।

ज़ाती अध्ययन

हम अपने तौरपर ख़ुद क़ुरआन का अध्ययन और उसके अर्थ पर ग़ौर व फ़िक्र क्यों करें? क्या यह काफ़ी नहीं कि हम किसी आलिम से इसकी तिलावत और तफ़सीर सुन लें?

यक़ीनन यह काफ़ी नहीं है, अगरचे यह भी ज़रूरी है। एक बहुत अहम और ख़ास वजह से आपको अपनी सी पूरी कोशिश करना चाहिए कि क़ुरआन जो कुछ कहता है वह आप मालूम करें और इस में जज़्ब हो जाएं। क़ुरआन सिर्फ़ एक मालूमात की किताब या अहकामात का मजमूआ नहीं है। क़ुरआन आपको सिर्फ़ यही नहीं बताता कि ख़ुदा है और वह आप से क्या चाहता है, बल्कि वह तो यह चाहता है कि आपकी शख़्सियत को अपनी पकड़ में ले, आपको नई ज़िन्दगी से परिचित करे और अल्लाह से आपका व्यापक सम्बंध क़ायम कर दे। इस लिए यह आपके ईमान में, इरादे और सब्र में इज़ाफ़ा करना

चाहिए और उन्हें मज़बूत करना चाहिए। इसे आपका तज़किया करना चाहिए, सीरत की तामीर करना चाहिए और रहन-सहन को अपने रंग में ढालना चाहिए। आपको लगातार जज़्बा व तहरीक देना चाहिए और आपको ऊंची से ऊंची बुलन्दियों तक ले जाना चाहिए।

ये सब इसी सूरत में हो सकता है कि आप क़ुरआन के साथ अध्ययन, समझ और ग़ौर व फ़िक्र का एक बिल्कुल ज़ाती सम्बंध क़ायम करें। इसकी हिदायात पर ग़ौर व फ़िक्र के बग़ैर आपका दिल, आपके ख़यालात और आपका अमल इस रास्ते पर नहीं चल सकेगा। इन हिदायात पर ग़ौर व फ़िक्र में डूबे बग़ैर आप इसे जज़्ब नहीं कर सकते, न यह आपकी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ हो सकता है।

ज़रा सोचिए! आप पर क़ुरआन की तिलावत तरतील के साथ क्यो लाज़िम की गई? सिवाए इसके कि इस तरह आप समझ सकें और तदब्बुर कर सकें। आप से क्यों चाहा गया है कि दौराने तिलावत वक़्फ़ा किया करें। अगर आपको मालूम ही न हो कि आप क्या पढ़ रहें हैं तो वह मुनासिब अन्दरूनी, जिस्मानी और ज़बानी रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) कैसे दे सकते हैं जिन पर क़ुरआन ने इतना ज़ोर दिया है।

अध्ययन के विरूद्ध दलील

मगर क्या यह अंदेशा (आशंका) नहीं है कि एक व्यक्ति किसी आलिम की रहनुमाई और अध्ययन की ज़रूरी चीज़ों के बग़ैर ख़ुदा की किताब को खुद से समझने के बहुत बड़े काम को अपने सर ले तो वह ग़लती कर बैठे। वह गुमराह भी हो सकता है। हां, इसकी सम्भावना है, ख़ासतौर से उस सूरत में कि उसे अपनी सीमाओं और लक्ष्यों का ज्ञान न हो। लेकिन अगर आप सिरे से समझने की कोशिश न करें, तो आपके लिए और उम्मत के लिए बड़ा नुक़सान है। खुद से अध्ययन करने के ख़तरात को एहतियाती तदबीरें इख़्तियार करके और यह यक़ीनी बनाकर कि आप अपनी सीमाओं लक्ष्यों से आगे नहीं जाएंगे, कम किया जा सकता है। लेकिन अध्ययन छोड़ने के नुक़सान का कोई इलाज नहीं है।

कुछ लोगों की दलील है कि क्या कुरआन का अर्थ खुद से समझने की कोशिश करना, रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के इस स्पष्ट इरशाद के ख़िलाफ़ नहीं है: जो कुरआन की तफ़्सीर अपनी राय से करे, जहन्नम में अपना स्थान बना ले"। (तिरमिज़ी)

ज़ाहिर है कि यह हदीस उस अध्ययन की तरफ़ इशारा कर रही है जिसमें कोई अपनी ज़ाती राय या पहले से तयशुदा तसव्वुरात की हिमायत के लिए कुरआन को इस्तेमाल करे, न कि अगर कोई खुले ज़हन से अपने को कुरआन की हिदायत के आगे डाल दे। या वह कोई ऐसी तफ़्सीर करने की कोशिश करे जिसके लिए वह ज़रूरी ज्ञान न रखता हो।

दूसरी सूरत में, जैसा कि इमाम ग़ज़ाली (रह०) ताकीद के साथ कहते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा को ताकीद न की होती कि कुरआन का अर्थ समझने में खुद को लगाएं, और न उन्होंने ऐसा किया होता (जैसा कि उन्होंने किया), न उन्होंने उन अर्थों को बयान किया होता जो आप से नहीं सुने थे (जैसा कि उन्होंने बयान किये) और न उनकी तफ़्सीरों में वे इख़्तिलाफ़ हुए होते (जो कि हुए)।

ख़तरों के अन्दोशों से, कुछ धार्मिक रहनुमा किसी आलिम की रहनुमाई के बग़ैर कुरआन का अनुवाद पढ़ने से भी मना करते हैं। या वह व्यक्तिगत अध्ययन के लिए ऐसी शर्तें लगाते हैं जो सिर्फ़ कुछ लोग ही असाधारण मेहनत करके पूरा कर सकते हैं। ऐसे मश्वरे, नेक नीयती के बावजूद, आपको उन ख़ज़ानों से महरूम हैं, जो कुरआन अपने हर तालिब को देता है। अगरचे कुछ सूरतों में वह ख़तरे हक़ीक़ी हैं, लेकिन पाबन्दी की कोई तर्क या बुनियाद नहीं है।

ज़रा सोचिए: क्या आप किसी अरब को कुरआन के लफ़्ज़ी अर्थ समझने से रोक सकते हैं? फिर आख़िर एक ग़ैर-अरब कुरआन का अनुवाद क्यों न पढ़े। फिर क्या वे किसी व्यक्ति को, जो कुछ वह पढ़े, उसका अर्थ मालूम करने से रोक सकते हैं? फिर कुरआन का

अध्ययन करने और उसका अर्थ समझने की कोशिशों का विरोध क्यों किया जाता है। आख़िर बात यह कि कुरआन के पहले मुख़ातबों के बारे में, वे काफ़िर हों या मुसलमान, क्या कहेंगे। वे अनपढ़ बद्दू और ताजिर थे, जिन्हें अध्ययन की कोई सुहुलत उप्लब्ध न थी, फिर भी कई काफ़िर, सिर्फ़ कुरआन सुनकर मुसलमान हुए किसी तफ़्सीर का अध्ययन किए बग़ैर और सिर्फ़ पहली बार सुनने के नतीजे में।

निःसन्देह उन्हें यह निराला और आलातरीन स्थान हासिल था कि नबी अकरम ﷺ और सहाबा-ए-किराम (र०) की ज़िन्दगियों का, जो ईमान, दावत और जिहाद की भट्टियों से गुज़र कर कुरआन पर अमल कर रहे थे, 'मुशाहिदा' करें। हमें य एज़ाज़ हासिल है, न हम यह हासिल कर सकते हैं। लेकिन इसे हमारी होसला शिकनी का सबब न वजह बनना चाहिए। कोई नहीं कि जब हम शर्तें पूरी कर दें और जैसा कि बार-बार ज़ोर दिया जा रहा है, हम भी ईमान, दावत और जिहाद की ज़िन्दगी गुज़ारें, जैसी कि सहाबा-ए-किराम ने गुज़ारीं, तो कुरआन हमारे लिए अपने दरवाज़े न खोल दे। कुरआन को समझने की हर कोशिश की नफ़ी (इन्कार) करके सिर्फ़ आलिम के क़दमों में बैठने से गुमराह हो जाने से सुरिक्षत नहीं हो सकता। असल इलाज सही तरीक़ा इख़्तियार करने में है।

इसका अर्थ यह नहीं कि अरबी ज़बान और दूसरे 'उलूम-ए-कुरआन' के ज़रूरी ज्ञान के ज़रूरी इल्म, या भरोसेमन्द उस्तादों से सीखने या समकलीन इन्सानी उलूम से आगाह होने की लाज़मी ज़रूरत से इन्कार किया जा रहा है। ये अहम हैं, लेकिन उसी हद तक कि आप अपने कुरआन के अध्ययन से क्या हासिल करना चाहते हैं। आपके पास वे औज़ार होने चाहिएं जो आपकी मंज़िल हासिल करने के लिए ज़रूरी हैं। लेकिन आप कुरआन को समझने की किसी भी कोशिश से सिर्फ़ इस लिए अपने को बरी नहीं कर सकते कि आपको ये सब औज़ार उपलब्ध नहीं हैं, या आप किसी उस्ताद के पास नहीं जा सकते।

तसव्वुर कीजिए कि आप एक जज़ीरे पर हैं। आप अरबी नहीं जानते, न सीखने का कोई मौक़ा है। आपको अच्छे उस्ताद या अच्छी तफ़्सीर जैसे साधन भी उपलब्ध नहीं हैं। न आप ये हासिल कर सकते हैं। निःसन्देह इन हालात में आपको क़ुरआन की सही-सही समझ हासिल करने के लिए मुनासिब योग्यता पैदा करने की ज़रूरत को मानना चाहिए और इसके लिए हर मुमकिन कोशिश करना चाहिए, लेकिन इसके बावजूद, क़ुरआन आपके लिए अल्लाह की तरफ़ से रहनुमाई है।

खुशक़िस्मती से, हम में से कोई भी ऐसे जज़ीरे पर नहीं रहता। ऐसे "जज़ीरे" हमारी सुस्ती व काहिली, बे तवज्जुही, बे अमली और हमारे इस यक़ीन में कमी की वजह से हमारे तसव्वुरात में वुजूद रखते हैं। क़ुरआन को समझने के लिए इसके साथ रिफ़ाक़त ज़हन व क़ल्ब के विकास के लिए उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह जिस्म के लिए ग़िज़ा। जो बात याद रखने के क़ाबिल है वह यह है कि कोई व्यक्ति क़ुरआन का एक नुस्ख़ा हाथ में लिए किसी जज़ीरे पर वास्तव में रहता है या नहीं, जिसका लफ़्ज़ी अर्थ वह कुछ न कुछ समझ लेता है, या किसी व्यक्ति ने क़ुरआनी उलूम में महारत हासिल कर ली है या नहीं – बहरहाल क़ुरआन पर ग़ौर व फ़िक्र के लिए ज़ाती तौरपर दिल व जान से लग जाने की ज़रूरत और मुतालबा क़ायम रहता है।

क़ुरआन का ज़ोर

क़ुरआन हर व्यक्ति के लिए रहनुमा, उसका उस्ताद और मुरब्बी है। इस लिए इसको समझने की बड़ी अहमियत है, वरना इसकी हैसियत एक पवित्र दस्तावेज़ से ज़्यादा न होगी। दिल व दिमाग़ को क़ुरआन के पैग़ाम के लिए खोलने में, ज़ाती कोशिशों की मर्कज़ी अहमियत खुद क़ुरआन ने व्याख्यापूर्वक बयान कर दी है।

हमें क़ुरआन की समझ के लिए अपने दिलों पर क़ुफ़्ल (ताला) लगाने की सख़्त हिमाक़त की तरफ़ तवज्जह दिलाई गई है:

> तो क्या ये लोग 'कुरआन' में विचार नहीं करते, या कुछ दिलों पर ताले पड़े हुए हैं। (मुहम्मद 47:24)

इसी लिए कुरआन पर ग़ौर व फ़िक्र के लिए तदब्बुर व तफ़क्कुर की दावत कुरआन के हर पृष्ठ पर मौजूद है। तुम सुनते क्यों नहीं? तुम देखते क्यों नहीं? तुम सोचते क्यों नहीं? तुम अक्ल से काम क्यों नहीं लेते? तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? अगर यह दावत हर उस इन्सान के लिए नहीं जो सुनने, देखने और सोचने की सलाहियत रखता है, तो किस के लिए है!

बहुत ताकीद के साथ यह एलान किया गया है कि कुरआन इस लिए उतारा गया है कि इसे समझा जाए।

> एक 'किताब' है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है बरकत वाली ताकि लोग इसकी 'आयतों' पर सोच-विचार करें, और बुद्धि वाले नसीहत हासिल करें। (साद 38:29)

इसी तरह, कुरआन, इबादुर्रहमान का यह गुण बयान करता है:

> वे लोग कि जब उन्हें 'रब' की आयतों के द्वारा चेताया जाता है, तो उन (आयतों) पर वे अन्धे और बहरे बन कर नहीं गिरते। (अल-फुरक़ान 25:73)

इसके विपरीत उन लोगों को जानवरों हैवानों से भी बदतर क़रार देता है जो अपनी आखों, कानों और दिलों को देखने, सुनने और ग़ौर व फ़िक्र करने के लिए इस्तेमाल नहीं करते।

> उनके पास दिल हैं वे उनसे समझते नहीं, और उनके पास आंखें हैं, वे उनसे देखते नहीं, और उनके पास कान हैं वह उनसे सुनते नहीं। वह पशुओ की तरह हैं- बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं! यही लोग हैं जो अचेतावस्था मे पड़े हुए हैं।
>
> (अल-आराफ़ 7:179)

जब तक आप कुरआन का अर्थ न समझें, जब तक यह न जानें कि अल्लाह आप से क्या कह रहा है और जब तक इसे जानने के लिए ज़ाती तौरपर ख़ूब कोशिश न करें, आप कुरआन के हक़ीक़ी ख़ज़ाने और अज़ीम बरकतें हासिल नहीं कर सकते।

दौरे अव्वल का तरीक़ा

वह हदीस, जिस में तीन दिन में कुरआन ख़त्म करने की हौसला शिकनी की गई है, दरअसल कुरआन को समझने की जरूरत स्पष्ट करदी है यानी इस सूरत में (तीन दिन में) समझ नहीं पाओगे। जो व्यक्ति अर्थ नहीं समझता या जो उस पर ग़ौर नहीं करता वह इस हिदायत की ज़रूरत महसूस नहीं करता। इमाम ग़ज़ाली ने एहयाउल उलूम में कई मिसाले दी हैं कि सहाब-ए-किराम (र०) और ताबिईन किस तरह अपने आपको इस काम के लिए वक़्फ़ कर देते थे।

एक बार हज़रत अनस बिन मालिक (र०) ने कहा: अकसर ऐसा होता है कि एक व्यक्ति कुरआन पढ़ता है, लेकिन कुरआन ऐसे व्यक्ति पर लानत करता है, क्योंकि वह इसे समझता नहीं है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) के नज़दीक कुरआन को समझना ईमान की निशानी है। बहुत ज़माना गुज़र चुका है। ऐसा समय आ गया है कि मैं देखता हूं कि एक व्यक्ति को ईमान लाने से पहले मुकम्मल कुरआन दिया जाता है। वह फ़ातिहा से आख़िर तक तमाम पृष्ठ पढ़ जाता है। न उसे इसके अहकामात की ख़बर होती है, न डरावों की और न उन स्थानों की जहां उसे तवक़्कुफ़ करना चाहिए। वह इस पर से इस तरह फलांगता है, जिस तरह कोई जुलूस में भागने वाला फलांगता है। हज़रत आयशा (र०) ने एक व्यक्ति को कुरआन को बड़बड़ाने के अन्दाज़ में पढ़ते सुना तो फ़रमाया: इस ने न कुरआन को पढ़ा, न ख़ामोश रहा। हज़रत अली (र०) का क़ौल है: जिस कुरआन के पढ़ने पर ग़ौर न किया जाए, उसके पढ़ने में कोई ख़ैर नहीं। अबू सुलैमान दारानी कहते हैं: मैं एक आयत तिलावत करता हूं और फिर

4, 5 रातें उसके साथ बसर करता हूं, अगली आयत पर उस समय तक नहीं आता जब तक कि ज़ेर ग़ौर आयत पर अपनी सोच मुकम्मल नहीं कर लेता।

ज़ाहिर है कि अगर क़ुरआन हर व्यक्ति के लिए किताबे हिदायत है तो जिस तरह एक मुकम्मल आलिम फ़ाज़िल हिदायत पाने का हक़ रखता है उसी तरह जज़ीरे का एक निवासी भी हिदायत का हक़दार है। उस्ताद या किताबें न हों तब भी इसका अर्थ स्पष्ट तौर पर समझें में आना चाहिए। सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से आपको इस पर अपना समय लगाना चाहिए ताकि इसकी समझ हासिल करें, समझें और ग़ौर व फ़िक्र करके, अपनी ज़िन्दगी के लिए इसका अर्थ समझें और मालूम करें कि ख़ुदा आप से क्या कहता है।

ज़ाती अध्ययन में अन्देशे

ज़रूरी है कि इस तरह के काम में जो ख़तरे पेश आना ज़रूरी हैं, उनको ख़ूब अच्छी तरह समझ लिया जाए और उनसे बचाव के लिए मुनासिब क़दम उठाए जाए।

1. याद रखिए कि क़ुरआन का समझना एक बड़ा अमल है जिसकी क़िस्में, सतहें, दरजे और कई पहलू हैं। आपको इन सबसे वाक़िफ़ होना चाहिए। इस लिए समझना कि दिल को ग़िज़ा उपलब्ध हो और इस लिए समझना कि फ़िक़्ही निकात कैसे निकाले जाते हैं, इन दोनों में यक़ीनन फ़र्क़ होगा।

2. अपने आपको जांचिए और अपनी सलाहियतों और ख़ामियों को अच्छी तरह पहचान लीजिए। मिसाल के तौर पर: हिदायत के क़ुराआनी ज़ाब्ते की समझ, अरबी पर आपकी पकड़, हदीस और सीरत पर आपकी नज़र, मसादिर (स्रतों) तक आपकी पहुंच – इन सब के बारे में ठीक-ठीक अन्दाज़ा कर लीजिए।

3. अपने मक़ासिद को ठीक-ठीक समझ लीजए और अपने अध्ययन की स्पष्ट मंज़िल तय कर लीजिए। कभी भी ऐसा काम

करने की कोशिश न कीजिए जो आपकी क्षमताओं और सीमाओं से मावरा (बाहर) हो। मिसाल के तौर पर अगर आप अरबी ज़बान नहीं जानते तो सर्फ़ (صرف) व नहु (نحو) के मसाइल में न उलझिए, अपने आपको सिर्फ़ सही लफ़्ज़ी अर्थों तक सीमित रखिए। अगर आपको असबाबे नुज़ूल, नासिख़ व मंसूख़ और क़दीम तफ़्सीरों से वाक़फ़ियत नहीं है तो आप क़ुरआन से अपनी ज़ाती फ़िक़्ह हासिल न करें, या किसी ख़ास दृष्टिकोण की हिमायत या उस पर तनक़ीद न करें।

4. आपके जो अध्ययन के नतीजे उम्मत के माने हुए अर्थ से अलग हों, उनको अंतिम न समझें, न उनकी इशाअत (फैलाना) शुरू करदें। इसका अर्थ यह नहीं कि आपको अपनी राय रखने से मना किया जा रहा है, न इसका इनकार किया जा रहा है कि उलमा की राय ग़लत हो सकती है। बल्कि यह कहा जा रहा है कि इसको नकारने के लिए या इसमें संशोधन करने के लिए, आपको ज़्यादा नहीं तो उनके बराबर योग्यता का मालिक होना चाहिए। यह आपको इस ज़िम्मेदारी से बरी नहीं करता है कि आप जो कुछ क़ुरआन से अख़लाक़ी तौर पर सही पाते हैं, उस पर अमल करें, और जिसे अख़लाक़ी तौर पर ग़लत पाते हैं उससे परहेज़ करें।

5. अपने सीमित ज्ञान की वजह से आप अकसर अपने नतीजों के बारे में शक में होंगे। ऐसी सूरत में जब तक कि आप मुकम्मल तुल्नात्मक अध्ययन न करलें, या क़ुरआन के किसी अल्लाह से डरने वाले बाअमल आलिम से उस पर बातचीत न कर लें, अपने ख़यालात को अन्तिम शक्ल न दें।

समझ के दर्जे

हम क़ुरआन के अध्ययन को क़ुरआन की निम्नलिखित आयत के अनुसार दो दर्जों – तज़क्कुर और तदब्बुर में तक़सीम कर सकते है:

ताकि लोग इसकी 'आयतों' पर सोच-विचार करें, और बुद्धि

वाले नसीहत हासिल करें। (साद 38:29)

तज़क्कुर

तज़क्कुर कुरआन में बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया गया है। इसका अलग-अलग तरह से अनुवाद किया गया है: चेतावनी प्राप्त करना, नसीहत पाना, याद करना, सबक़ हासिल करना, दिल पर असर लेना। इस से वह अमल मुराद लिया जा सकता है जिस में आप कुरआन के पैग़ाम और उसकी शिक्षाओं को पकड़ में लेने की कोशिश करते हैं ताकि आप यह जानें कि आपके लिए इनका अर्थ क्या है, वह आप से क्या तक़ाज़ा करता है? उसे दिल तक जाने दिया जाए ताकि दिल और ज़हन और अमल के हवाले से मुनासिब तबदीली हो। जो कुछ इल्म में आए, उसके अनुसार अमल करने का संकल्प हो। और आख़िरी बात यह कि निर्धारित किया जाए कि दूसरे इन्सानों को क्या पैग़ाम पहुंचाना है।

तज़क्कुर समझ की ऐसी क़िस्म है जिसे अपनी असल हालत के हवाले से इल्म हासिल करने के आला दर्जे की मदद की ज़रूरत नहीं है। आपको हर शब्द का अर्थ मालूम न हो, तमाम अहम और कलीदी (बुनियादी) शब्दों के मुकम्मल अर्थ को जानने की योग्यता न रखते हों, आप हर आयत न समझते हों लेकिन असल पैग़ाम, ख़ास तौर से वह पैग़ाम जो आप के लिए है – ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी जाए, साफ़ और रौशन होकर सामने आ जाए।

कुरआन को सब से पहले सुनने वालों ने इसको सब से ज़्यादा समझा और इस से सब से ज़्यादा फ़ायदा उठाया। वे शहर के ताजिर, किसान, गल्लाबान (चरवाहा), ऊंट सवार और बद्दू थे। उनकी बग़लों में तफ़्सीरें, डिक्शनरी और सर्फ़ व नहू की मोटी-मोटी किताबें न थीं। न उन्हें दर्शन, इतिहास, भूगोल, आसारे क़दीमा, इन्सानी और समाजी और फ़ितरी उलूम पर महारत हासिल थी। मगर इसके बावजूद वे कुरआन समझने में सब से ज़्यादा सफ़ल थे। उन्होंने कुरआन के पैग़ाम

को दिल से क़बूल किया और उसके अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना शुरू कर दी। इस लिए समझ की यह क़िस्म, हर उस व्यक्ति के लिए उपलब्ध है और होना चाहिए जो इसके लिए कम से कम ज़रूरी शर्तें पूरी करता है। वह क्या हासिल करता है, उसकी शिद्दत और दर्जा उसकी योग्यता और कोशिश पर निर्भर होगा। यक़ीनन इल्म हासिल करने की मददगार चीज़ों से इस अमल में नए पहलुओं का इज़ाफ़ा होगा, ज़्यादा मज़बूती हासिल होगी, नई बसीरत मिलेगी – लेकिन यह ज़रूरी नहीं है।

क़ुरआन स्पष्ट तौर पर एलान करता है इसे समझना आसान है, हर मुख़्लिस मुतलाशी के लिए यह मौजूद है अगर वह सिर्फ़ समझ कर पढ़े और उस पर ग़ौर करे। यह तज़क्कुर है, जिसकी तरफ़ क़ुरआन हर देखने वाले सुनने वाले सोचने वाले को दावत देता है। निम्नलिखित आयतें इस अर्थ में हैं

> और हम ने 'क़ुरआन' की शिक्षा के लिए सुगम बना दिया है तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला? (अल-क़मर 54:17)

> तो (हे 'नबी'!) हमने बस इस (क़ुरआन) को तुम्हारी भाषा में सुगम कर दिया है कदाचित् ये लोग नसीहत हासिल करें।
> (अद्-दुख़ान 44:58)

> हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें दीं हैं, कदाचित् ये सोचें। (अज़्-ज़ुमर 39:27)

> निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए बड़ा अनुस्मारक है जिसके पास दिल हो या वह कान धरे ध्यान के साथ।
> (क़ाफ़ 50:37)

तज़क्कुर समझ की कोई निचली सतह नहीं है। ये क़ुरआन का असल बुनियादी मक़सद है। तज़क्कुर के ज़रिए हिदायत, नूर और शिफ़ा हासिल करने के लिए आपको अपनी पूरी ज़िन्दगी कोशिश

करनी होगी और इस अमल के द्वारा आप ख़ुद ज़ाती तौर पर ऐसे ज़र (सोना) व जवाहर जमा करते रहेंगे जो कभी ख़त्म न होंगे।

तदब्बुर

समझ का एक दूसरा दर्जा तदब्बुर है। इसका अर्थ है कि आप हर शब्द, हर आयत और सूरह के मुकम्मल अर्थ मालूम करने की कोशिश करें। अहम शब्दों, रूपकों (तशबीहों) और मिसालों में छुपे हुए मुकम्मल अर्थ मालूम करें। आप मूल मतन का नज़्म और उसमें जारी वहदत (सामंजस्य) मालूम करें। आप मर्कज़ी विषयों का निर्धारण करें, शाने नुज़ूल, तारीख़ी पसमंज़र (पृष्ठभूमि) और लुग़त की बारीकियों में जाएं। आप विभिन्न तफ़्सीरों का तुल्नात्मक अध्ययन करें। फिर यह कि आप बन्दे के, अपने ख़ुदा, दूसरे इन्सानों, ख़ुद अपने आप और चारों तरफ़ की दुनिया से सम्बंध के तमाम छुपी हुई बातों को मालूम करें। आप व्यक्ति और समाज के लिए क़ानून और और अख़लाक़ी उसूल अलग कीजिए। राष्ट्र व अर्थव्यवस्था के लिए क़ायदे व ज़ाब्ते, तारीख़ और दर्शन के उसूल और इन्सानी इल्म की मौजूदा सतह के लिए मुज़मरात (निहितार्थ) मालूम करें। इस तरह के अध्ययन के लिए आपके मक़सद के लिहाज़ से क़ुरआन के विभिन्न उलूम का गहरा इल्म दरकार होगा।

तज़क्कुर और तदब्बुर, समझ की दो ऐसी अलग-अलग क़िस्में नहीं जिनका एक दूसरे से सम्बंध न हो, ये एक दूसरे में शामिल होती हैं।

आपके मक़ासिद

आपके मक़ासिद क्या होने चाहिएं?

जाहिर है कि हर आदमी के मक़ासिद मुख़तलिफ़ होंगे। मेरे दृष्टिकोण के अनुसार, तज़क्कुर हर मुसलमान के लिए फ़र्ज़ है जो क़ुरआन समझने में सक्षम हो या हो सकता है। इस लिए, एक औसत शिक्षित मुसलमान होने की हैसियत से जो अपनी योग्यताओं और

सीमाओं की रौशनी में अल्लाह से अपने वादे को पूरा करने की कोशिश कर रहा है, तज़क्कुर आपका पहला और अहमतरीन मक़सद होना चाहिए।

याद रखिए कि तज़क्कुर में आप दरअसल अपने ज़ेहन व दिल को ताक़त बख़्शने, ईमान में इज़ाफ़ा करने, क़ुरआन जो पैग़ाम आपको दे रहा है उसे मालूम करने, उस तरफ़ दिल को लगाने और उसे याद करने के लिए नियत करते हैं। अपनी सारी मेहनतों के नतीजे में आपको ख़ुदा की आवाज़ सुनने के योग्य होना चाहिए: वह क्या चाहता है आप क्या बनें और क्या करें।

समझ की सतहें और शक्लें

आपकी क़ुरआन को समझने की विभिन्न सतहें हो सकती हैं:

1. आप इसका सादा लफ़्ज़ी मतलब इस तरह समझें जैसे कि आप कोई ऐसी किताब पढ़ें जिसकी ज़बान आपको आती है, जैसे कोई अरबी जानने वाला क़ुरआन पढ़कर समझे।

2. आप मालूम करें कि अहले इल्म ने इससे क्या समझा है: उनके बयान सुन कर, या उनकी तफ़्सीर और दूसरे माख़ज़ (स्रोतों) से फ़ायदा करके।

3. आप अध्ययन और ग़ौर व फ़िक्र के द्वारा इसका अर्थ मालूम करें और इसे जज़्ब करें ताकि आप तज़क्कुर की सतह तक पहुंचें। अगर आप के अन्दर योग्यता और ज़रूरत है तो तदब्बुर की सतह भी हासिल करें।

4. इसके अहकामों की इताअत करके और जो फ़राइज़ और मिशन यह आपको सोंपता है, उन्हें पूरा करके इसके हक़ीक़ी अर्थ मालूम करें।

बुनयादी शर्तें

अपनी कोशिशों को लाभदायक और नतीजा ख़ेज़ बनाने के लिए

कुछ बुनियादी शर्तों का पूरा किया जाना ज़रूरी है।

अरबी

1. इतनी अरबी सीखने की कोशिश करें कि किसी अनुवाद की मदद के बग़ैर आप कुरआन के अर्थ समझ सकें। यह पहला क़दम है और सब से ज़रूरी शर्त।

यह बहुत मुश्किल काम मालूम होता है मगर मैं ने देखा है कि एक बार संजीदगी और लगन से शुरू कर दिया जाए तो कम पढ़ेलिखे लोग भी सिर्फ़ चन्द महिनों में यह महारत हासिल कर लेते हैं। किसी उस्ताद या सिर्फ़ किसी मुनासिब किताब की मदद से अध्ययन के 120 घन्टे (4 घन्टे रोज़ के हिसाब से एक महीना) से ज़्यादा इसके लिए दरकार न होंगे कि आप यह जान सकें कि कुरआन आप से क्या कह रहा है। लेकिन कुरआन के अध्ययन की अपनी कोशिशों को अरबी जानने तक न टालिए। कोई अच्छा अनुवाद, या जो बहतरीन उपलब्ध है, लीजिए और अपना काम शुरू कर दीजिए। यह समझे बग़ैर कुरआन पढ़ने से बहरहाल बेहतर है।

पूरा कुरआन पढ़ना

2. सब से पहले सिर्फ़ लफ़्ज़ी अर्थ समझते हुए शुरू से आख़िर तक पूरा कुरआन पढ़ डालिए। अगर अरबी नहीं आती, तो अनुवाद की मदद से।

अच्छा तो यह है कि आप कुरआन पाक की एक महिने में मुकम्मल तिलावत का ख़ुसूसी मनसूबा बनाएं। इसमें रोज़ाना 2 घन्टे से ज़्यादा न लगेंगे। इसके बाद आप अपनी सुहुलत के अनुसार रफ़्तार आहिस्ता कर सकते हैं, मगर इस तरह का सरसरी अध्ययन आपको सारी ज़िन्दगी जारी रखना चाहिए, जिस रफ़्तार से भी आप के लिए मुनासिब हो (जैसा कि अध्ययन के आदाब के हवाले से आप पढ़ चुके हैं)।

कुरआन के गहरे अध्ययन से पहले, पूरे कुरआन की एक प्रारम्भिक अनुवाद के साथ तिलावत बहुत अहमियत रखती है। इस से आपको कुरआन के असल पैग़ाम, इसकी ज़बान और तरज़े बयान (भाषा शैली), दलील और शिक्षाओं और अहकामात का कुछ अन्दाज़ा हो जाएगा। बाक़ायदा अध्ययन से आप कुरआन से परिचित हो जाते हैं, उसकी मरबूत वहदत (सामंजस्य) को महसूस करते हैं और उसको एक इकाई के तौर पर देखने लगते हैं। इस तरह के अध्ययन से इस बात का डर कम हो जाता है कि आप किसी चीज़ की ऐसी ताबीर (व्याख्या) कर लें जो लोग कुरआन के असल अर्थ के अनुसार न हो। जो कुरआन तक उसके विषयों और संदर्भों से अपनी वाक़फ़ियत के बजाए सिर्फ़ इशारो के द्वारा पहुंचना चाहते हैं, वे अपनी ताबीर में ग़लती कर सकते हैं। कुरआन के मतन (मूलपाठ) से बाक़ायदा जुड़े रहना उसकी पूरी समझ के लिए ज़रूरी चीज़ है। यह आयतों और शब्दों के अलग-अलग अर्थ समझने में बहुत ज़्यादा मददगार होगा। लगातार और देर तक सम्बंध के नतीजे में अकसर ऐसा होगा कि आप कुरआन की इबारत को अचानक अपने से बातें करता हुआ और अपने सवालों का जवाब देता हुआ महसूस करेंगे।

हक़ीक़त में किसी एक ही समय में, मुख़्तलिफ़ मक़ासिद हासिल करने के लिए आप कुरआन के अध्ययन के लिए मुख़्तलिफ़ तरीक़े इख़्तियार कर रहे होंगे। किसी निर्धारित समय में ख़त्म करने के लिए आप तेज़-तेज़ पढ़ने में मसरूफ़ हो सकते होंगे या किसी एक शब्द, या किसी एक आयत का अर्थ मालूम करने के लिए घन्टों ख़र्च कर रहें होंगे। एक ही हिस्से के अर्थ पर ग़ौर करने के लिए आप बार-बार उसकी तिलावत कर रहे होंगे, कभी तेज़, कभी आहिस्ता, या एक बार पूरे मैदान से परिचित होने के बाद किसी एक विषय पर रहनुमाई हासिल करने के लिए आप पूरे कुरआन के पृष्ठ उलट पलट रहे होंगे। आप खुद ग़ौर व फ़िक्र कर रहे हों तो कम समय लगेगा लेकिन लम्बे और छोटी तफ़्सीरों का तुल्नात्मक अध्ययन कर रहे हों तो छोटे हिस्सों के अध्ययन में भी बहुत ज़्यादा समय लग सकता है।

तफ़्सीरों का अध्ययन

3. आप पूरे क़ुरआन को एक बार समझ कर पढ़ चुके हैं और अब कम रफ़्तार से जो आपको मुनासिब लगती है, बाक़ायदा अध्ययन कर रहे हैं। इस मरहले पर कोई छोटी भरोसेमन्द तफ़्सीर या हवाशी ले लें और इसका अध्ययन करें। अरबी, उर्दू ओर दसूरी ज़बानों में कई छोटी तफ़्सीरें मौजूद हैं।

जो कुछ आपने अब तक ख़ुद हासिल किया है, मुख़्तसर हवाशी का अध्ययन उसके मुक़ाबले ज़्यादा तफ़सीली नज़र क़ुरआन के बारे में आपको देगा। ये कुछ ऐसे अहम मैदानों तक पहुंचाएगा जिन्हें आप ख़ुद अपने ग़ौर व फ़िक्र से मालूम नहीं कर सकते थे: ज़बान, बयान का तरीक़ा, दलीलें, तारीख़ी पसमंज़र (पृष्ठभूमि), तफ़सीली अर्थ। इस से आपकी कुछ ग़लतियों का सुधार भी हो सकता है।

कोशिश करें कि क़ुरआन के ज़ाती तफ़सीली अध्ययन में जब कोई आपको मदद की ज़रूरत हो तो आप मुख़्तसर तफ़्सीरों तक ही सीमित रहें। कम से कम शुरूआत में लम्बी और तफ़सीली तफ़्सीरें में न उलझे। उनकी लम्बी बहसे अकसर ख़ुदा के कलाम से आप के सीधे सम्बंध में दीवार बन जाती हैं। अगर मुकम्मल तफ़सीर न हो तो जुज़्वी (आंशिक) तफ़सीरें पढ़िए। इस्लामी लिटरेचर के अध्ययन के दौरान, बहस और नतीजों में जो चीज़ क़ुरआन पर मरकूज़ (केंद्रित) हो, उसे ख़ुसूसी तौर पर तवज्जुह से देखिए। आपको इस तरह के लिट्रेचर से, बहुत मुन्तशिर (फैला हुआ) होने के बावजूद, क़ुरआन को समझने में बड़ी मदद मिलेगी।

याद रखें कि ईमान को ताक़त देने के लिए और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी हिदायत लम्बी तफ़्सीरों के अध्ययन के बग़ैर ही आपको मिल सकती है। सिर्फ़ किसी उलझन को दूर करने, किसी बारीक नुकते की तहक़ीक़ करने, या किसी शक को दूर करने के लिए आपको तफ़्सीर से मदद लेने की ज़रूरत पड़ेगी।

चुनिन्दा हिस्सों का अध्ययन

4. मिसाली सूरत तो यह है कि आप बिल्कुल शुरूआत से कुरआन का अध्ययन शुरू करें और आख़िर तक जाएं। इनशाअल्लाह आप में से कुछ ज़रूर एक दिन इसकी शुरूआत करेंगे, लेकिन शायद आप में से ज़्यादातर के लिए यह दिन अभी बहुत दूर हो, यह भी हो सकता है कि यह दिन आए ही नहीं। इस लिए आपको अपना अध्ययन जितनी जल्दी हो सके शुरू कर देना चाहिए।

इस मक़सद के लिए कुछ मुख़्तसर हिस्सों, मख़सूस सूरतों या एक आयत ही का चुनाव करें और उनका तफ़सीली अध्ययन करें। अगर आप दावत और अपनी तरबीयत के काम में लगे हैं तो कुछ हिस्सों का अध्ययन आपके लिए ज़रूरी होगा। कभी-कभी बाक़ायदा अध्ययन के दौरान ऐसे हिस्से सामने आ जाएंगे जिनका आप तफ़सील से अध्ययन करना चाहेंगे। लेकिन आप किसी एक केंद्रीय विषय की मुनासिबत से बनाए हुए बाक़ायदा निसाब (पाठ्क्रम) के अनुसार भी यह अध्ययन कर सकते हैं। असल अहमियत इस बात की है कि शुरूआत कर दें और आप को मालूम हो कि अध्ययन कैसे करना है, इसकी नहीं कि किस जगह से अध्ययन की शुरूआत करें। (इस किताब के इख़्तिताम पर कुछ हिस्सों का मश्वरा दिया गया है)।

अध्ययन की शुरूआत के लिए चुने हुए हिस्सों से आपको बहुत से लाभ होंगे।

i: कुरआन के साथ अपने सफ़र के अहमतरीन मरहलों में से एक में तज़क्कुर का बहुत ज़रूरी सम्बंध क़ायम करके आप इसमें तरक्क़ी कर सकते हैं, बजाए इसके कि अनिर्धारित मुद्दत तक के लिए इंतेज़ार करें।

ii: आपको एसे अहम तरीक़े और सुराग़ हाथ आ जाएंगे जो आपको कुरआन के उन हिस्सों को समझने में मदद देंगे, जिनका

अध्ययन आप तुरन्त तफ़सील से नहीं कर सकते। इसी लिए कुरआन अपने पैग़ाम को विभिन्न शकलों में बयान करता है।(अज़-ज़ुमर 39:23)

iii: आप कुरआन के मजमूई निज़ाम का बेहतर तसव्वुर हासिल कर लेंगे जो आपकी कुरआन की समझ को सही रास्ते पर रखने के लिए ज़रूरी है।

iv: आप दूसरे इन्सानों को कुरआन का पैग़ाम पहुंचाने के लिए बेहतर योग्यता हासिल कर लेंगे।

चुनिन्दा हिस्सों का तफ़सीली अध्ययन आम अध्ययन का बदल नहीं हो सकता, जिसके फ़ायदे, नोइयत और अहमियत के लिहाज़ से विभिन्न हैं। इस लिए कुरआन के लम्बे हिस्सों की तिलावत को कभी न छोड़े। जैसा कि पहले भी ज़ोर देकर बताया गया है, तफ़सीलों पर तवज्जुह देने और कुल का नज़रअंदाज करने से आपकी समझ और तसव्वुर प्रभावित हो सकते हैं।

बार-बार पढ़ना:

5. जो हिस्सा उसकी आपने अध्ययन के लिए चुना है, आपको उसे बार-बार पढ़ना चाहिए। उसकी ऐसी आदत बनालें जिसकी हमेशा पाबन्दी करना है, जितनी देर मुमकिन हो उसके साथ ठहरें, उसके साथ रहें, उसमें सुकूनत इख़्तियार करें और अपने दिल व दिमाग़ को उसका मसकन (रहने की जगह) बन जाने दें। इस तरह का लम्बा सम्बंध हक़ीक़ी अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है। जैसे-जैसे कुरआनी शब्द आपके के दिल पर नक़्श हों और आपकी ज़बान पर रहें, आपको उन पर ग़ौर व फ़िक्र करना आसान तर महसूस होगा। फिर सिर्फ़ उस वक़्त पर ही नहीं जो आपने अध्ययन के लिए मख़्सूस कर रखा है, बल्कि रोज़ाना की ज़िन्दगी में चलते फिरते भी कुरआन अपना अर्थ आप पर ज़ाहिर करेगा, इस लिए कि कुरआन के शब्दों और आयतें आपके ज़हन में पलट-पलट कर आते रहेंगे।

मुतलाशी ज़हन

6. सवाल करने वाले ज़हन, तलाश करने वाली रूह और अर्थ के लिए बेताब दिल का विकास कीजिए। जैसा कि आप जानते हैं, कुरआन अन्धे विश्वास का मुतालबा नहीं करता। वह यह कहता है कि इसे बन्द ज़हनों और कानों और ताला लगे दिमाग़ों से अध्ययन न किया जाए। ग़ौर व फ़िक्र की दावत कुरआन का सब से ज़्यादा पुरज़ोर और सारे कुरआन में फैला हुआ विषय है।

याद रखें सवाल करना, अर्थ समझने और इल्म हासिल करने की कुंजी है। इस लिए हमेशा जितने भी ज़रूरी सवाल हैं, ज़रूर उठाईए - मिसाल के तौर पर: इस शब्द या आयत का लफ़्ज़ी अर्थ क्या है? इस से क्या दूसरे अर्थ मुराद लिए जा सकते हैं? तारीख़ी पसमंज़र और शाने नज़ूल अगर मालूम है तो क्या है? हर शब्द, हिस्से या आयत का सन्दर्भ क्या है? हर आयत का पहले और बाद की आयत के अर्थ से क्या सम्बंध है? किस दाख़िली नज़्म और विषय के वहदत को तलाश किया जा सकता है? क्या कहा गया है? क्यों कहा गया है? इस के आम व ख़ास मुज़मरात क्या हैं? बड़े विषय क्या है? केंद्रिय विषय क्या है? मेरे लिए, हमारे लिए, आज उसका क्या पैग़ाम है? अपने सवालों को नोट कर लें और जैसे-जैसे अध्ययन जारी रखें, उनके जवाब तलाश करते रहें।

सवालात उठाने से डरिए मत। आपको उन के जवाबात तुरन्त न मिलें, न खुद आप हासिल कर सकें न किसी की मदद से, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जवाब ह.सिल करने की कोशिश में आप जो कुछ भी पाएं, उस से लाभ ही होगा। अगर आप कुछ उसूलों का ख़याल रखें तो आपको कोई नुक़सान न होगा।

i: ऐसे सवालात न पूछें जिन के जवाब इन्सानी समझ से ऊपर हों या जिन का सम्बंध मुतशाबिहात (आले इमरान 3:7) से हैं जैसे अर्श किस तरह का है।

ii: बाल की खाल न निकालें, और न ऐसे सवालात पूछें जिनका ज़ेरे मुतालआ हिस्से के हवाले से आपकी ज़िन्दगी से कोई सम्बंध भी न हो।

iii: ऐसे जवाब न दें जो मुनासिब या ज़रूरी इल्म या मज़बूत दलील पर आधारित न हों।

iv: ऐसे सवालात जिन के आप जवाब न पा सकें, जिन्हें आप अपनी बेहतरीन कोशिश के बावजूद समझ न सकें, उन्हें कुछ देर के लिए छोड़ दें और क़ुरआन की दूसरी बातों की तरफ़ तवज्जुह दें। समय आएगा कि आपको किसी किताब या उस्ताद से रहनुमाई मिलेगी या ख़ुद ही जवाब मिल जाएंगे।

ख़ुद क़ुरआन के अन्दर काफ़ी मिसालें मौजूद हैं कि पहले ईमान लाने वाले किस तरह सवाल करते थे। इसी तरह बहुत सी अहम और राहनुमा मिसालें हैं कि किस तरह हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ और उनके सहाबा सवालात और ग़ौर व फ़िक्र की हौसला अफ़ज़ाई करते थे।

अध्ययन की मुआविनात

7. अध्ययन में मदद देने के लिए आपको कुछ चीज़ों की ज़रूरत होगी। कोशिश कीजिए कि जितनी आपको उपलब्ध हो सकती हैं हो जाएं।

i. आपके पास एक उर्दू अनुवाद क़ुरआन होना चाहिए। यह कम से कम है जिस की आपको ज़रूरत होगी। यह तिलावत के लिए और अध्ययन के लिए इस्तेमाल कीजिए। अगर यह मुनासिब साइज़ का है तो विभिन्न हिस्से याद करने के लिए भी इस्तेमाल हो सकते हैं। यह ख़याल रहे कि याद करने के लिए हमेशा यही एक नुस्ख़ा इस्तेमाल कीजिए, वरना दोहराना बहुत मुश्किल हो जाएगा। यह याद रखिए कि कोई भी अनुवाद न कामिल हो सकता है न बिल्कुल सही हो सकता है। हर अनुवाद में अनुवादक की तरफ़ से तफ़्सीर व ताबीर का उन्सुर ज़रूर शामिल होता है।

क़ुरआन का "मुस्तनद" अनुवाद न है, न हो सकता है।

ii. इसी नुस्ख़े में मुख़्तसर व्याख्या हो, या इस मक़सद के लिए कोई दूसरा क़ुरआन हासिल कीजिए। लेकिन एक आपके पास होना ज़रूर चाहिए। एक अनुवाद और एक भरोसे के क़ाबिल तफ़्सीर आपके शुरूआती बुनियादी मक़ासिद के लिए काफ़ी होना चाहिए।

iii. यह ज़रूरी तो नहीं हैं, लेकिन आपको फ़ायदेमन्द महसूस होगा कि आपके पास एक से ज़्यादा अनुवाद और तफ़्सीरें हों ताकि आप शब्दों के वे विभिन्न अर्थ तलाश कर सकें जो विभिन्न मुफ़स्सिरीन ने समझे हैं।

iv. ज़्यादा गहरे अध्ययन के लिए आपके पास एक मुफ़स्सल तफ़्सीर होनी चाहिए।

v. अरबी की एक अच्छी डिक्शनरी, तरजीहन 'क़ुरआनी लुग़त' आपके पास हो, ताकि आप शब्दों के अर्थों की गहराई में जा सकें।

iv. एक इशारिया/मुअजम भी रखिए। (अध्ययन के लिए कुछ दूसरी मुआविनात का ज़िक्र इस किताब के आख़िर में मिलेगा)

अध्ययन कैसे करें?

किसी चुने हुए हिस्से की तफ़सील से अध्ययन करने के लिए मरहला ब मरहला तरीक़ा नीचे दिया जा रहा है। इस के लिए कोई निर्धारित क़ायदे व ज़ाब्ते नहीं। आपको शायद यह बेहतर लगे कि अपनी सलाहियतों के अनुसार ख़ुद अपना कोई तरीक़ा बनाएं, जो आपके लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द हो। असल अहमियत इस बात की है कि आप एक मुनज़्ज़म तरीक़े से शुरूआत करें और नीचे लिखी तरतीब के मुताबिक़ चलने की कोशिश करें।

आप अध्ययन वाले हिस्से का ख़ुद अध्ययन करें। इसके बाद जो कुछ आप समझ सकते हैं, उसे समझने के लिए अध्ययन में मदद

करने वाली चीज़ों से मदद लें या किसी योग्य उसताद के पास जाएं। इसके बाद दोनो साधनों से अपने अध्ययन को ज़्यादा से ज़्यादा मुकम्मल अध्ययन तक, जिस हद तक मुमकिन है, ले जाने की कोशिश करें।

पहला मरहला: अपने को मानूस कीजिए और अपनी समस्याओं का निर्धारण कीजिए।

i. बुनियादी शर्तें और दाख़िली शिर्कत के हवाले से जो कुछ आपको याद हो उसे जल्दी-जल्दी ज़हन में दोहरा लीजिए। महसूस कीजिए कि अल्लाह आपके साथ है, उस से दुआ कीजिए कि आप जो कुछ अध्ययन करने वाले हैं, उस में वह आपकी मदद करे।

ii. अर्थ समझते हुए कम से कम तीन बार उसकी तिलावत कीजिए, या इतनी बार कि बग़ैर देखे, आप इस के बुनियादी विषयों को ज़हन में ला सकें। अब आप ने गोया उन्हें जज़्ब कर लिया है और जब चाहें उन पर ग़ौर व फ़िक्र कर सकते हैं। क़ायदा यह है कि शब्दों की ताबीर की तलाश शुरू करने से पहले इन के अर्थ अच्छी तरह समझ लें।

iii. मतन को पढ़े बग़ैर, तमाम अहम नुकते जो आप समझ सकते हैं, उन्हें लिख लीजिए। फिर उनका मतन से मुक़ाबला करके दोबारा नज़र डालिए।

iv. अगर कोई मर्कज़ी विषय नज़र आए तो उसे लिख लीजिए।

v. इबारत को इतने छोटे हिस्सों में तक़सीम कर लीजिए जो आप के ख़याल में एक हिदायत या हिदायतों के एक मजमूए के हामिल हैं।

vi. जिन शब्दों या जुम्लों को आप अर्थ समझने में मर्कज़ी अहमियत का हामिल समझते हैं, उन सब पर निशान लगा लीजिए।

vii. सवालात क़ायम करें, जैसा कि हम ने ऊपर बयान किया है और उन्हें लिख लीजिए।

दूसरा मरहला: आपने जो पढ़ा है, उस पर ग़ौर करके अपने सवालात के जवाब खुद देने की कोशिश कीजिए। अगले हिस्से में जो रहनुमा खुतूत दिए गए हैं उन की रौशनी में उसका अर्थ और पैग़ाम समझने की कोशिश कीजिए।

viii. मालूम करें कि अहम शब्दों का क्या अर्थ है?

ix. हर आयत या आयत के टुकड़े का अर्थ निर्धारित कीजिए।

x. उन के आपसी सम्बंध पर ग़ौर कीजिए, कोई बात पहले क्यों नहीं आई है, या बाद में क्यों आई है। क्या नज़्म और वहदत पाई जाती है।

xi. इबारत का अर्थ, तुरन्त संदर्भ में, सवालों के वसीतर संदर्भ में और कुरआन के मजमूई सबक़ में मालूम कीजिए और समझिए।

xii. निर्धारण कीजिए कि इस से क्या-क्या विभिन्न हिदायतें और शिक्षाएं मालूम किया सकती हैं।

xiii. सवाल कीजिए यह मुझ से क्या कहता है? इसका तक़ाज़ा हमारे ज़माने से क्या है?

xiv. सोचिए कि आप से उम्मते मुस्लिमा से और पूरी इन्सानियत से क्या करने का तक़ाज़ा किया जा रहा है।

तीसरा मरहला: जो कुछ भी अध्ययन में मददगार चीज़ें आपके पास हैं उनकी मदद से और उस्तादों की मदद से अर्थ मालूम कीजिए और मरहला दोम (viii-xiv) से गुज़र जाइए - आपने जो कुछ खुद से समझा था उस पर दोबारा नज़र डालिए, सही कर लीजिए, तबदीली कर लीजिए, इज़ाफ़ा कर लीजिए, तौसीक़ कर लीजिए या रद्द कर दीजिए।

चौथा मरहला: जो कुछ आप इस तरह समझे हैं, उसे लिख लीजिए या क़ल्ब व ज़हन में सुरक्षित कर लीजिए। जो सवालात रह गए हैं, उन्हें नोट कर लीजिए। किसी अर्थ को अन्तिम और मुकम्मल न समझिए। आप अध्ययन जारी रखेंगे तो और अर्थ मालूम होते रहेंगे और दोबारा नज़र डालने की ज़रूरत महसूस होती रहेगी।

अर्थ कैसे समझें?

कुरआन का अर्थ समझने में जो उसूल और रहनुमा खुतूत सामने रहने चाहिएं वे कई हैं और उन सब पर तफ़सील से बातचीत के लिए बड़ी किताब की ज़रूरत होगी। हम यहां बहुत संक्षिप्त में सिर्फ़ चन्द अहम उसूलों की तरफ़ ध्यान दिलाएंगे जो कुरआन का अर्थ समझने की कोशिश करते हुए आपके सामने रहने चाहिएं।

आम उसूल

ज़िन्दा हक़ीक़त के तौर पर समझिए

1. कुरआन के हर शब्द को इस तरह समझिए कि जैसे यह आज नाज़िल किया जा रहा है। इस को आज के दौर के लिए इतनी ही सम्बंधित और ज़िन्दा किताब समझिए जितनी यह 1400 साल पहले उस समय थी जब नाज़िल की गई थी। एक लिहाज़ से अगर यह कभी न बदलने वाला और हमेशा तक के लिए है, तो अब कोई अलग पैग़ाम नहीं दे सकती। इस लिए कुरआन की किसी आयत को सिर्फ़ क़िस्सा-ए-माज़ी न समझिए। तब ही आप इसे हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और हर लम्हा अपनी मख़लूक़ात की ज़िन्दगी का इंतेज़ाम करने वाले हय्यु व क़य्यूम खुदा का ज़िन्दा कलाम तसव्वुर करेंगे।

जैसा कि आप ने देखा है कि आपके अध्ययन में आप के क़ल्ब की शिर्कत लाज़मी है। आप के ज़हन और अक़्ल को भी कुरआन के बारे में सोचते हुए इस हक़ीक़त को हमेशा नज़र के सामने रखना

चाहिए। इस के मुज़्मरात बेपनाह हैं। इसकी वजह से आप कुरआन की हर बात का इस्तेमाल कर सकेंगे और अपनी दुनिया को इस की रौशनी में देख सकेंगे। कोशिश कीजिए कि यह इस्तेमाल अपनी ज़िन्दगी से इसका सम्बंध इस रोशनी में क़ायम करके हो। मौजूदा परेशानियां और समस्याएं और आपके इसी ज़माने के इल्म और टेक्नोलोजी, तजरबे और सतहें – सब का जवाब कुरआन में मिलना चाहिए।

2. अहमतर बात यह है कि यह समझिए कि कुरआन के हर पैग़ाम का ख़िताब आप से और आपकी बिरादरी से है। एक बार जब आप कुछ आगे बढ़ जाएं तो यह समझने की कोशिश करें कि हर कुरआनी आयत आप की ज़ाती सूरते हाल में क्या पैग़ाम दे रही है। आप ने पहले देखा है कि अपनी दाख़ली शिर्कत बढ़ाने के लिए किस तरह तरक्क़ी की जानी चाहिए। अब आप देखेंगे कि यह कुरआन समझने के लिए आपके ज़हन को किस तरह खोल देता है। एक व्यक्ति रसूलुल्लाह ﷺ से कुरआन सीखने आया। आप ﷺ ने उस को सूरह अल-ज़िलज़ाल की तालीम दी। जब आप ﷺ इन शब्दों तक पहुंचे مَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ (मंय यामल मिस्क़ाला ज़र्रतिन) – तो उस आदमी ने कहा: यह मेरे लिए काफ़ी है और चला गया। आप ﷺ ने फ़रमाया: यह व्यक्ति एक फ़कीह की हैसियत से वापस गया है। (अबूदाऊद)

बेशक मैं यक़ीन रखता हूं कि कुरआन का कोई एक हिस्सा भी ऐसा नहीं है जिस में आप के लिए कोई ज़ाती पैग़ाम न हो। बस आप के अन्दर उसे तलाश करने की फ़िक्र और नज़र होनी चाहिए। ख़ुदा की हर सिफ़ात का तक़ाज़ा है कि उसके अनुसार उससे सम्बंध बनाया जाए। ज़िन्दगी के बाद मौत का हर बयान चाहता है कि उसके लिए तैयारी की जाए। उसके इनामों की तमन्ना की जाए। उसकी तकलीफ़ों से बचने की ख़्वाहिश और कोशिश की जाए। हर मुकालमा आपको

अपने अन्दर शरीक करता है और हर किरदार आप के सामने एक नमूना लाता है कि जिस की आप पैरवी करें या पैरवी करने से बचें। हर हुक्मे क़ुरआनी, चाहे आपकी मौजूदा सूरतेहाल में बज़ाहिर इस्तेमाल के क़ाबिल न हो, फिर भी आप के लिए कुछ पैग़ाम रखता है। आम बयान आपके लिए ख़ास अर्थ रखते हैं। ख़ुसूसी बयानात, वाक़िआत और हालात हमेशा ऐसे आम उसूलों तक ले जाते हैं जिन का आप अपनी ज़िन्दगियों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

कुल के एक अंश के तौरपर समझिए

3. मुकम्मल क़ुरआन ख़ुद अपने अन्दर एक इकाई है। यह एक वही है। अगरचे पैग़ाम अलग-अलग और बहुत ज़्यादा शकलों में आया है लेकिन हक़ीक़त में एक ही पैग़ाम है। इसका एक आलमी दृष्टिकोण है। हिदायत का एक मजमूई फ़्रेम वर्क है। तमाम हिस्से एक दूसरे के साथ मुकम्मल अनुकूलता रखते हैं। यह इसके अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होने की निशानी है।

> और क्या वे क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते? और यदि यह अल्लाह के सिवा किसी की ओर से होता तो निश्चय ही वे इसमें बहुत विभेद पाते। (अल-निसाअ 4:82)

आपको कोशिश करनी चाहिए कि यह वाहिद पैग़ाम और फ़्रेमवर्क मुकम्मल तौर पर आपकी पकड़ में आ जाए। फिर आपको हर चीज़ को इस पैग़ाम यानी एक किताबः मुकम्मल क़ुरआन का एक अंश (हिस्सा) समझना चाहिए चाहे यह एक शब्द हो एक आयत हो, पैराग्राराफ़ हो या एक सूरत हो। पूरे क़ुरआनी फ़्रेमवर्क से कोई हिस्सा अलग न कीजिए वरना ग़लत अर्थों तक पहुंचेगे। आप जिन अर्थों तक भी पहुंचे, उन्हें अनुकूलता के लिए मजमूई सियाक़ व सबाक़ में रख कर जांचिए।

चुने हुए हिस्सों का अध्ययन करते हुए आप को उन का विशलेषण करके, अलग-अलग करके, हर शब्द और हर जुम्ले को

अलग-अलग समझना होगा, मगर उनको वापस साथ जोड़ना न भूलिए, इसी से आपके सामने एक हो कर तस्वीर आएगी। फिर इस तस्वीर को कुरआन के मजमूई पैग़ाम के सियाक़ में रखिए। इस के बग़ैर आपका चुने हुए हिस्सों का अध्ययन आपको उलटी दिशाओं में ले जा सकता है। यह न करें तो आप चुने हुए हिस्सों से कुरआन के हक़ीक़ी दृष्टिकोण की तरफ़ रहनुमाई पाने के बजाए उन्हें अपने दृष्टिकोण की हिमायत करने की ग़लती में पड़ सकते हैं।

जिस समय आप उन अर्थों को तलाश कर रहे हों जो आपके ज़माने और हालात पर मुनतबक़ हो सकें, आपको पूरे कुरआन को भी अपने अध्ययन में लाना चाहिए। दूसरी सूरत में आप कुरआन की रौशनी में उस का तन्क़ीदी जायज़ा लेने के बजाए कुरआन को असरी फ़िक्र के अनुसार ढालने की संगीन ग़लती करने वाले हो सकते हैं।

ऊपर बताई गई चीज़ों की रौशनी में यह मुनासिब नहीं है कि कुरआन के अध्ययन की शुरूआत किसी मोजम (डिक्शनरी) के द्वारा किया जाए। जब तक आपने कुरआन को कई बार खुद न पढ़ लिया हो और उसके मजमूई फ्रेमवर्क को पूरे तौर पर न समझ गए हों। किसी विषय को मोजम के द्वारा आयतें जमा करके किसी विषय को अध्ययन में न लाइए। उसे तब ही इस्तेमाल कीजिए जब आप अपने अध्ययन की बुनियाद पर हवालों की ज़रूरत महसूस करें।

एक साथ जुड़े हुए मतन के तौर पर समझिए

4. कुरआन में आप ज़ाहरी तौर पर एक तरह का अदमे रब्त देखते हैं, इसके बावजूद कुरआन में आला पैमाने का रब्त और नज़्म मौजूद है। हर हिस्सा दूसरे हिस्से से, हर आयत दूसरी आयत से और हर सूरह दूसरी सूरह से जुड़ी हुई है। विषयों की ज़ाहिरी तबदीली के पीछे उन्हें जोड़ने वाला एक धागा मौजूद है। यही वजह है कि रसूलुल्लाह ﷺ वही लिखने वालों को हिदायत देते थे कि किस वही को किस स्थान पर रखा जाए।

आपको यह अन्दरूनी रब्त तलाश करने की कोशिश करना चाहिए चाहे पहली कोशिश में आप उस तक न पहुंच सकें बल्कि हो सकता है कि यह आप पर अपने को ज़ाहिर करने में लम्बा समय ले। जब कुरआन को इस रब्त के हवाले से समझा जाएगा तब हर हिस्सा अपने मुकम्मल अर्थ आप पर ज़ाहिर करेगा।

अपने मुकम्मल वुजूद के साथ समझिए

5. कुरआन के अध्ययन में अपने पूरे वुजूद को लगा कर अर्थ समझिए। दिल व दिमाग़ और एहसास व समझ ने मिल कर आपकी शख़्सियत बनाई है। कुरआन कोई ऐसा पारसल नहीं है जिसे ज़ेहन की मदद से खोला जाए, न सिर्फ़ ऐसा कोई हुस्न का नमूना है कि खुबसूरती का मज़ा उठाया जाए। कुरआन की तरफ़ एक मुनक़सिम होने शख़्स की तरह न जाएं, जब आप इसका अध्ययन करें तो अपनी अक्ल या जज़बात किसी को भी पीछे न छोड़ें, दोनों को साथ आने दें।

कुरआन जो बताता है, इसे समझिए

6. जो कुरआन आपको बताता है उसे समझिए, न कि वह जो आप कुरआन को बताते हैं। कभी भी कुरआन की तरफ़ इस लिए न जाएं कि अपनी राय की हिमायत, अपने दृष्टिकोण का प्रमाण या अपने मुक़द्दमे का सुबूत हासिल करें। आप हमेशा खुले ज़ेहन से जाएं और खुदा की आवाज़ सुनने और उसके आगे सर झुकाने के लिए तैयार हों।

मुत्तफ़क़ अलैह आरा की हुदूद में समझिए

7. कुरआन का अध्ययन करने और समझने वाले आप पहले आदमी नहीं हैं। आप से पहले लोगों का एक सिलसिला है जिन्होंने यह काम किया है और क़ीमती वरसा तैयार किया है। आप इसे नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते। इस लिए आपको कुरआन के क़रीब इस

तरह न जाना चाहिए जैसे कोई इस से पहले इस के क़रीब न गया हो और न अपना रास्ता पिछली तफ़्सीरों से बाहर बनाना चाहिए। ऐसा अर्थ भी सही नहीं हो सकता जो रसूलुल्लाह ﷺ के फ़रमान या आप की सुन्नत के ख़िलाफ़ हो या जो उम्मत के ख़िलाफ़ हो। ऐसे नतीजे जो नस्ल दर नस्ल आने वाले क़ीमती वरसे से बिल्कुल अलग हों या नए हों, उन की बुनियाद इल्मी तौर पर मज़बूत होना चाहिए।

सिर्फ़ क़ुरआनी मेयार से समझिए

8. क़ुरआन पाक दूसरी किताबों की तरह नहीं है। यह हर लिहाज़ से अपनी मिसाल आप है। इसकी अपनी ज़बान और मुहावरा है। तर्ज़, मन्तिक़ और दलीलें हैं और सब से बढ़कर अनोखा दृष्टिकोण और उद्देश्य है। इस को ऐसे इन्सानी मेयारों से समझना बेकार होगा जो क़ुरआनी न हों। इसका मक़सद यह है कि हर इन्सान की अपने ख़ालिक़ की तरफ़ रहनुमाई की जाए और ख़ुदा के साथ एक बिल्कुल नया सम्बंध क़ायम करके इसमें इन्क़िलाबी तबदीली पैदा कर दी जाए। हर बात इसी मक़सद से जुड़ी है और इसी मक़सद के गिर्द घूमती है।

इसके कुछ अहम मुज़मरात हैं:

i. इसके अर्थ के समुद्र की न कोई तह है न कोई किनारा। सच्चाई के एक आम तलाश करने वाले के लिए कि वह ज़िन्दगी कैसे गुज़ारे, जो अर्थ काफ़ी हैं वह जब भी सही जज़्बे से और सही तरीक़े से इसकी तरफ़ आए, किसी न किसी दर्जे में उन्हें आसानी से समझ सकता है।

ii. इसकी ज़बान ऐसी है कि एक आम आदमी समझ सकता है। इस ने वे शब्द इस्तेमाल किए हैं जो रोज़ाना की ज़िन्दगी में इस्तेमाल होते हैं और आम हैं। यह नई न समझने वाली इस्तिलाहात नहीं बनाता, न दर्शन, विज्ञान, मंतिक़ (तर्क) या दूसरे इल्म की तकनीकी और इल्मी ज़बान इस्तेमाल करता है। यह पुराने आम शब्दों को बिल्कुल नए अर्थ देता है।

iii. न यह तारीख़ की किताब है न साइंस की। न दर्शन की न मन्तिक़ की। यह इन सबको इस्तेमाल करती है लेकिन इन्सान को रास्ता दिखाने के लिए। इस लिए किसी समकालीन इन्सानी मालूमात की जांच कुरआन से करने की कोशिश न कीजिए। ये मालूमात इस का अर्थ पाने के लिए ज़रूरी नहीं, अगरचे समझ को फैलाने के लिए उन से हमेशा मदद ली जा सकती है।

iv. कुरआन के समझाने का तरीक़ा इन्सान की फ़ितरत, तारीख़ और ख़ुद अपनी ज़ात के तजरबों पर है। यह अपने सुनने वालों के लिए उसी दुनिया से बहस करता है जिसको वे पहचानते हैं और उन मुक़द्दमों से काम लेता है जिनको वे मानते हैं। इसमें यह निराला है। इस तरह वे इनके दिल व दिमाग़ को जीतता है और उनको बदलता है।

कुरआन को कुरआन से समझिए

9. कुरआन की बेहतरीन तफ़्सीर ख़ुद कुरआन है। बज़ाहिर यह अपने बहुत से शब्दों और बहस की तकरार करता है, लेकिन यह तकरार बिला वजह नहीं होती। किसी ख़ास शब्द या बहस की तकरार आमतौर से किसी नए अर्थ पर रौशनी डालती है या किसी नए पहलू पर ध्यान देती है। यह अर्थ समझने की आपको कोशिश करना चाहिए।

किसी शब्द, आयत या हिस्से का अर्थ समझने के लिए ख़ुद कुरआन के अन्दर देखिए। मिसाल के तौर पर रब, इलाह, दीन, इबादत, कुफ़्र, ईमान, ज़िक्र जैसे बुनियादी शब्दों को आप अगर उन अलग-अलग सन्दर्भों में अध्ययन करें जिन में कुरआन ने उन्हें इस्तेमाल किया है तो उनका अर्थ बेहतर तौर पर समझ सकते हैं।

हदीस और सीरत से समझिए

10. रसूलुल्लाह ﷺ के अहम फ़र्ज़ों में से एक कुरआन की व्याख्या थी। यह उन्होंने अपने क़ौल व अमल से किया। इस लिए हदीस व सीरत का पूरा सरमाया कुरआन समझने का क़ीमती साधन है। न सिर्फ़ वह हदीस जिस में तफ़सीली निकात हैं बल्कि तमाम

हदीसें फ़ायदेमन्द हैं। मिसाल के तौर पर ईमान, जिहाद और तौबा जैसे विषयों पर हदीसें, कुरआन की इन आयतों को समझने में आप को बहुत मदद देंगे जहां ये विषय बयान किए गए हैं।

अरबी ज़बान से समझिए

11. कुरआन के लिए आपकी पहली कुंजी ज़बान है।

i. यह कुरआन की समझ के लिए सीरते पाक ﷺ के साथ बुनियादी अहमियत रखती है। कुरआन ज़बान से अपने को स्पष्ट, ज़िन्दा और समझने के योग्य बनाता है। कुरआन में जो अरबी इस्तेमाल की गई है, उसकी कुछ ख़ासियतें आपके इल्म में होनी चाहिएं।

अव्वल: कुरआन का अन्दाज़ ख़िताबत का है, तहरीर का नहीं। एक ख़िताब में बहुत सी बातें इस मफ़रूज़े पर बयान नहीं की जाती कि सीधे सुनने वाले उन्हें बग़ैर कहे भी समझने में कोई दिक्क़त महसूस नहीं करेंगे। इससे इसके असर और ताक़त में इज़ाफ़ा होता है। इस लिए कि सुनने वाले, मुक़र्रिर के शब्दों और अपने माहोल से लगातार सम्पर्क में रहते हैं। बहुत ज़्यादा तफ़सील किसी तक़रीर को बेअसर बना देती हैं। कभी-कभी काल भी अचानक बदल जाते हैं, इस से भी इबारत के असर में इज़ाफ़ा होता है। आपको इन तबदीलियों के लिए चौकन्ना होना चाहिए और निर्धारण करना चाहिए कि कौन किस से सम्बोधन कर रहा है। सिलसिला-ए-कलाम अचानक टूट भी जाता है। आप को इन स्थानों को पहचानना होगा।

दूसरा: यही नहीं कि अरबी ज़बान अपने बयान मे बड़ी बलीग़ है, अकसर इस में जोड़ने वाले शब्द और टुकड़े नहीं होते। इस लिए इबहाम (अस्पष्टता) होता है, हज़्फ़ होता है और इसी तरह की दूसरी विशेषताए जिनके बारे में आपको सावधानी बरतनी होगी। यह आप अपने उस्ताद से या तफ़सीर की किताबों से सीख सकते हैं।

तीसरा: शब्दों और जुम्लों के सीधे शाब्दिक अर्थ इन शब्दों या

जुम्लों को अलग से समझने के लिए काफ़ी नहीं होते। आपको कुरआन के मुहावरे, अदबी अंदाज़ और उसकी मजमूई समझ का अहसास और शुऊर हासिल करना होगा। वही के नाज़िल होने के समय के अरबी अदब से परिचय बहुत ज़्यादा मददगार साबित हो सकता है। फिर भी एक शुरूआत करने वाले की हैसियत से आपकी उस तक पहुंच न होगी।

तरीक़ेकार के लिए हिदायतें

ऊपर बताए गए आम उसूलों के फ्रेमवर्क में तरीक़ेकार के हवाले से कुछ हिदायतें आपके लिए फ़ायदेमन्द होंगी।

शब्दों का अध्ययन

1. सब से पहले उन शब्दों का अर्थ निर्धारित करने की कोशिश कीजिए जिन्हें आप मतन (मूलपाठ) को समझने के लिए ज़रूरी समझते हैं। आपके पास जो अनुवाद और मुख़्तसर तफ़्सीर है शुरूआत में आपको उससे रहनुमाई मिलेगी। डिक्शनरी भी देखिए लेकिन डिक्शनरी के अर्थ को काफ़ी न समझिए। शब्द का सन्दर्भ बहैसियत मजमूई कुरआन और इसका तसव्वुरे जहां (World wiew) आपका बेहतरीन रहनुमा है।

मतन (मूलपाठ) का सन्दर्भ

2. शब्दों और उन के सीधा शाब्दिक अर्थ समझने के बाद कुरआनी हिस्से को उसके मतन के सन्दर्भ में पढ़िए और यह समझने की कोशिश कीजिए कि इस का क्या अर्थ है। पिछला और उसके बाद का हिस्सा पढ़िए और समझने में परेशानी हो रही हो तो पूरी सूरत पढ़िए।

तारीख़ी पसमंज़र (पृष्ठभूमि)

3. जिस क़दर ज़रूरी और सम्बंधित एतिहासिक मालूमात आप

हासिल कर सकते हों, जमा कर लीजिए लेकिन ये यक़ीनी तौर पर प्रमाणिक हों। इस हवाले से आपको ऐसी हदीसें मिलेंगी जिन में आसबाबे नुज़ूल का बयान है। ये आपको क़ीमती मालूमात देंगी मगर ज़ेहन में तीन बातें रखिए: पहली यह कि ये हदीसें वही नाज़िल होने के वक़्त के वाक़िए को हमेशा ठीक-ठीक बयान नही करती, बल्कि इन हालात को बयान करती हैं जिन में उसको मुतअल्लिक़ और क़ाबिल इस्तेमाल समझा गया है। दसूरे यह कि वही के नाज़िल होने के हवाले से मतन की गवाही ज़्यादा अहमियत रखती है, तारीख़ी मालूमात क़ुबूल करते हुए इसे नज़रअंदाज़ न करना चाहिए। तीसरे यह कि मतन को अपने मौजूदा हालात पर लागू करते हुए तारीख़ी मालूमात को आपकी समझ में रुकावट नहीं बनना चाहिए।

असल अर्थ

4. शाब्दिक अर्थ समझने के बाद जहां तक हो सके यह समझने की कोशिश कीजिए कि इसके पहले सुनने वालों ने इसका क्या मतलब समझा था। शाब्दिक अर्थ जानना एक आसान काम हो सकता है, लेकिन 14 सदियों बाद दूसरे तेहज़ीबी पसमंज़र में असल अर्थ मालूम करना एक मुश्किल और उलझा हुआ काम है। इन मुश्किलों पर बहस का यह स्थान नहीं, मैं सिर्फ़ आपको होशियार कर रहा हूं।

अपनी सूरतेहाल पर लागू करना

5. आपका दूसरा काम यह है कि मतन मूलग्रंथ को अपनी सूरतेहाल के हवाले से पढ़ें और समझें। यह भी उतना ही बड़ा काम है जितना असल अर्थ का निर्धारण, ख़ासतौर से अगर आप क़ुरआन के अन्दर अपने मतलब के अर्थ तलाश करने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहते। यह मुमकिन नहीं है कि इस हवाले से ताबीर की उलझी हुई समस्याओं पर यहां बहस की जाए। न मैं उनको ग़ैर अहम समझता हूं। यह एक ऐसा काम है जिसे आप नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते और न बच सकते हैं। अगर आप सिर्फ़ एक बुनियादी उसूल

का ख़याल रखें और उसकी पाबन्दी करें, यानी यह कि कुरआन की तरफ़ खुले ज़हन से आएं और इस से वह हरगिज़ न कहलवाएं जो आप के ख़याल में सही है, तो आप ऐसे फन्दों से बच जाएंगें। यह भी मुमकिन है कि उलझी हुई फ़िक्ही और अख़लाक़ी मसाइल के बजाए अपनी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी पैग़ाम पर तवज्जह रखें। कभी-कभी यह मुमकिन होता हे बल्कि कभी-कभी ज़रूरी हो जाता है कि अपने हालात में कुरआन के हक़ीक़ी मक़सद और अहमियत को समझने के लिए आज कल की इस्तिलाहात प्रयोग की जाएं। लेकिन यह इसी हद तक किया जाए कि सीधे स्पष्ट असल अर्थ बरक़रार रहें और असल इस्तिलाहात गुम न हो जाएं।

अवास्तविक और अप्रासंगिक अर्थ

6: ऐसे अवास्तविक अर्थ ढूंढने में न लगिए जो एक आम आदमी कभी न समझ सके न ऐसे अर्थ की तरफ़ जाइए जिनका आपकी ज़िन्दगी से और कुरआन पर पहले के ईमान लाने वालों की ज़िन्दगियों से कोई वास्ता न हो।

ज्ञान और ज़िहानत का स्तर

7: आपके इल्म और ज़िहानत की जो सतह है उसी पर अर्थ को समझें। लेकिन उसके पहले सम्बोधकों की जो इल्मी सतह थी उसको नज़रअन्दाज़ न कीजिए ताकि आप गुमराह न हों। ऐसा न हो कि आप कुरआन में अपने अर्थ पढ़ने शुरू कर दें।

मौजूदा इन्सानी ज्ञान

8: यह एक हक़ीक़त है कि हर व्यक्ति कुरआन समझने में अपने इल्म को इस्तेमाल करेगा। हक़ीक़त यह है कि आपके पास यह इल्म होना चाहिए ताकि आप कुरआनी मेयार से उन समस्याओं का तनक़ीदी जायज़ा ले सकें जो यह उठाता है, उन पर कुरआन से रहनुमाई हासिल कर सकें और कुरआन को अपने ज़माने के मुहावरे में समझ सकें। मैं फिर कहूंगा कि अपने इल्म से हर तरह से कुरआन

समझने में मदद लें लेकिन जदीद इल्म की कुरआन से जांच न कराएं। मौजूदा ज़माने के तमाम साइंसी अविष्कारों की कुरआन से पेशगोई न कराएं। साइंसी नज़रयात के बारे में, ख़ास तौर से एहतियात बरतें, इस लिए कि ये रेतीली सतह की तरह बदलते हैं। आइनस्टाइन, कोपर्निकस, नीत्शे या बर्गशन को कुरआन में पढ़ना उतना ही ग़लत है जितना अरस्तू, बुक़रात और अफ़्लातून को पढ़ना।

जो आप नहीं समझ सकते

9: बहुत से ऐसे शब्द और आयात होंगी जो हर तरह की कोशिश के बावजूद आप नहीं समझ सकेंगे। ऐसा इस लिए होगा कि आपका इल्म काफ़ी नहीं है या ये ज़्यादा मुश्किल हैं। ऐसी सूरतों में अपनी मुश्किलों को एक जगह लिख लें और आगे बढ़ जाएं। ऐसी बातों में उलझने में वक़्त न ख़र्च कीजिए जो किसी ख़ास मरहले पर आपकी योग्यता से ऊपर हों।

सीरते रसूल ﷺ

कुरआन को समझने और जज़्ब करने के लिए आपको रसूले अकरम ﷺ के इतना क़रीब आना चाहिए जितना आप आ सकते हैं। आप ﷺ की हयाते तय्यिबा कुरआन की बेहतरीन तस्वीर है और इसके अर्थ और पैग़ाम के लिए सब से ज़्यादा यक़ीनी रहनुमा है। यह ज़िन्दा कुरआन है। अगर आप कुरआन को देखना चाहते हैं, सिर्फ़ पढ़ना नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ को देखिए जैसा कि सैयदा आयशा सिद्दीक़ा (र०) ने फ़रमाया كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ (कान ख़लुकुहू अल-कुरआन)। आप ﷺ का अख़लाक़ कुरआन था। आप कुरआन समझने में इब्ने जरीर, इब्ने कसीर, कशाफ़ और राज़ी की अज़ीम तफ़सीरों के मुक़ाबले में सीरते रसूल ﷺ को ज़्यादा मददगार पाएंगे। रसूल ﷺ से क़रीब आने के लिए आप ﷺ के अक़वाल यानी हदीस पढ़िए और आप ﷺ की ज़िन्दगी यानी सीरत का जितना अध्ययन कर सकते हों कीजिए। आप

देखेंग कि कुरआन में अगरचे जीवनी विवरण नहीं हैं लेकिन सीरत का बेहतरीन बयान है। दूसरे यह कि सुन्नते रसूल ﷺ की पैरवी की कोशिश कीजिए। इस तरह आप उन्हें यानी कुरआन को समझेंगे।

इसके अलावाः

तुम अल्लाह से मोहब्बत करोगे और अल्लाह तुम से मोहब्बत करेगा (आले इमरान 3:31)

(6)

इजतिमाई अध्ययन

अहमियत और ज़रूरत

क़ुरआन की समझ की कोशिश में ज़रूरी है कि आप हक़ को तलाश करने वाले लोगों के साथ शरीके सफ़र बन जाएं। यह तो ज़रूरी है कि आप व्यक्तिगत रूप से क़ुरआन मजीद का अध्ययन करते रहें, लेकिन जब आप क़ुरआन के अर्थ की तलाश और कोशिश करने वाले दूसरे ईमान वालों के साथ मिलकर इजतिमाई अध्ययन करते हैं तो आपके फ़ायदे दुगना हो जाते हैं। इजतिमाई अध्ययन में दिल व दिमाग़ की क़ुव्वते अख़्ज़ बढ़ जाती है और वह ज़्यादा सही ढंग से अर्थ को अपनी पकड़ में ले आते हैं। जिस तरह आपसी मोहब्बत में आप क़ुरआन की छत्र-छाया में ज़िन्दगी बसर करते हैं, इसी तरह आपसी मोहब्बत में क़ुरआन के तक़ाज़े पूरे करने का मरहला भी आसानी से तय हो जाता है। इस तरह अमल करने और तक़ाज़े पूरे करने से आप क़ुरआन की बरकतों से पूरी तरह फ़ायदा उठा सकते हैं और क़ुरआन की समझ के दरवाज़े भी ज़्यादा खुल जाते हैं।

क़ुरआन का सम्बोधन विशेषता के साथ इजतिमाईयत या जमाअत से है। नबी-ए-अकरम ﷺ ने वही के नाज़िल होने के साथ ही एक ऐसी जमाअत क़ायम करने की कोशिश शुरू कर दी थी जिसका केन्द्र और मेहवर (धुरी) क़ुरआन हो। अपनी हयात का हर लम्हा आप ﷺ ने इस मक़सद के लिए लगा दिया। "इक़रा" के हुक्म के साथ ही قُمْ فَأَنذِرْ (उठो और डराओ) का हुक्म भी नाज़िल हुआ। इसी तरह जहां यह हुक्म नाज़िल हुआः ऐ नबी ﷺ, तुम्हारे रब की किताब में से जो कुछ

तुम पर वही किया गया है, उसकी तिलावत करो (पढ़ो और फैलाओ) (अल-कहफ़ 18:27) तो इससे अगली आयत में यह हुक्म नाज़िल हुआ: और अपने जी को उन लोगों के साथ थाम रखो जो प्रात:काल और संध्या समय अपने 'रब' को पुकारते हैं उसकी मुखाकांक्षा लिये हुये; और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में उनको छोड़ कर तुम्हारी निगाहें आगे न बढ़ें। (अल-कहफ़ 18:28)

कुरआन की यह आयत स्पष्ट और प्रभावी अन्दाज़ में कुरआन की तिलावत और एक मज़बूतए एकजुट समूह (समाज) क़ायम करने के दरमियान सम्बंध क़ायम कर रही हैं।

कोई नमाज़ बग़ैर कुरआन पढ़े मुकम्मल नहीं होती और कोई नमाज़ बिना किसी शरई वजह के बग़ैर जमात के अदा न करने की ताकीद की गई है। नमाज़ में कुरआन मजीद के पढ़ने का क्या लाभ, जब उस को न सुना जाए, न समझा जाए और न उस पर ग़ौर ही किया जाए? ज़ाहिर है कि बा जमाअत नमाज़ में तिलावते कुरआन इजतिमाई समझ का मौक़ा है और इस तरह कुरआन समझ का मक़सद दिन में पांच बार इजतिमाई तरीक़े से हासिल किया जाता है।

कुरआन की दावत को सारे इन्सानों तक पहुंचाने का तक़ाज़ा भी यही चाहता है कि कुरआन को इजतिमाई तौरपर पढ़ा जाए और समझा जाए। शब्द "तिलावत" जब पूर्वसर्ग "अला" के साथ बोला जाता है तो इसका अर्थ होता है: सुनाना, पहुंचाना, प्रकाशित करना। कुरआन मजीद की तिलावत करना नुबुव्वत के बुनियादी मक़सदों में शामिल है और इसी लिए उम्मते मुस्लिमा के मक़सदों में भी शामिल है।

इसी तरह कुरआन मजीद बिलवास्ता (परोक्ष रूप से) यह हिदायत देता है कि उसको घरों और ख़ानदानों में पढ़ा जाए। फ़रमाया गया: नबी ﷺ की बीवियो! याद रखो अल्लाह की आयतें और हिक्मत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं। (अल-अहज़ाब 33:34)

जो लोग इस लिए जमा होते हैं कि कुरआन की तिलावत करें

और उसका अध्ययन करें, वे मुबारक हैं। उन पर अल्लाह के फ़रिश्ते अल्लाह की रहमत के साथ नाज़िल होते हैं। नबी ﷺ ने फ़रमाया है:

जब कभी लोग अल्लाह के घरों में जमा होते हैं, कुरआन मजीद की तिलावत करने और उसको एक दूसरे के साथ मिलकर पढ़ने और पढ़ाने के लिए, उन पर बरकत नाज़िल होती है, रहमत उन को घेरे में ले लेती है, फ़रिश्ते उन पर साया करते हैं और अल्लाह अपनी महफ़िल में उनका ज़िक्र करता है। (मुस्लिम)

इस लिए कुरआन को अकेले पढ़ कर मुतमइन न होना चाहिए बल्कि दूसरे हक़ की तलाश करने वालों को जमा करके इजतिमाई तौर पर नेकी का यह काम अन्जाम देना चाहिए।

इजतिमाई अध्ययन के तरीक़े

इजतिमाई अध्ययन के दो तरीक़े हो सकते हैं:

1. जब एक मुख़्तसर सा गिरोह एक जगह जमा हो कर इस तरह कुरआन का अध्ययन करता है कि हर शरीक इस अध्ययन में सरगरमी से हिस्सा ले। इस में कुछ ज़्यादा इल्म वाले होते हैं और कोई एक ज़्यादा इल्म वाला इन्सान उनकी रहनुमाई करता है। इसको हम हलक़े का अध्ययन कहेंगे।

2. जब एक छोटा या बड़ा गिरोह एक जगह जमा होता है और किसी इल्म वाले का दर्स सुनता है, उस में सुनने वाले सिर्फ़ सवालात करे सकते हैं। उसको हम दर्से कुरआन कहेंगे।

आप को मालूम होना चाहिए कि हलक़ा किस तरह चलाया जाता है और दर्स की तैयारी किस तरह की जाती है। यहां हम सिर्फ़ आम हिदायतों पर बातचीत करेंगे। यह भी स्पष्ट रहे कि इस काम के लिए न कोई निर्धारित मेयार हो सकता है और न कोई निर्धारित तरीक़ाकार। अलग-अलग लोग अपने ख़ास अंदाज़ और ख़ास तरीक़े को इख़्तियार कर सकते हैं।

नीचे लिखी हिदायतें दर असल इशारे हैं जिन को ख़ास हालात और अपनी हैसियत के अनुसार इख़्तियार किया जा सकता है।

चार बुनियादी उसूल

इजतिमाई अध्ययन के लिए चार बुनियादी उसूल ज़रूरी हैं:

1. हलक़े में शिर्कत या दर्स की ज़िम्मेदारी का हक़ अदा करने के लिए पूरी तरह तैयारी करना चाहिए। सरसरी नज़र डाल लेने से तैयारी नहीं होती। तैयारी करने को आख़िरी लम्हे तक देर करते चले जाना भी सही नहीं। यह ग़लतफ़मी नहीं होनी चाहिए कि एक नज़र डालने से सब कुछ याद आ जाएगा। क़ुरआन के सम्बंध में कोई बात ग़ौर व फ़िक्र किए बग़ैर ज़बान से नहीं निकालनी चाहिए। ज़्याद सही तरीक़ा यह है कि इस सिलसिले में आप ने जो अध्ययन किया है और आप जो कुछ कहना चाहते हैं, उसे नोट कर लें।

2. आप चाहे शुरआत करने वाले हों या आलिम, आप दर्स दे रहें हों या हलक़े में शिर्कत कर रहे हों, जैसा भी हो आप अपने तौर पर उन हिस्सों का अध्ययन ज़रूर करें जो हलक़ा या दर्स का विषय हों।

3. हमेशा अपनी नीयत साफ़ रखिए यानी यह कि क़ुरआन के मक़सद क़ुरआन को समझना है और उसके अनुसार अमल करना है, और यह सब इस लिए कि अल्लाह तआला राज़ी हो जाए।

4. इजतिमाई अध्ययन तफ़रीह के लिए, या इल्मी निक़ात बयान करने के लिए, या बेहस व तकरार के लिए नहीं होना चाहिए। क़ुरआन के अध्ययन का नतीजा क़ुरआन की बात मानने की शक्ल में ज़ाहिर होना चाहिए और उस दावत को फैलाने की लगन भी पैदा होना चाहिए जो क़ुरआन अपने पढ़ने वाले के हवाले करता है।

अध्ययन का हलक़ा

नीचे दिए गए रहनुमा ख़ुतूत इजतिमाई अध्ययन को प्रभावी बना सकते हैं:

शुरका (प्रतिभागी)

1. शुरका की तादाद 3 से 10 होनी चाहिए। उनकी इल्मी व ज़हनी सतह में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ न हो। कोई भी चीज़ कम हो तो यह मुकालमा बन जाएगा, कोई भी चीज़ ज़्यादा हुई तो हर शरीक की सरगरम शिर्कत प्रभावित होगी।

2. ज़ोर हमेशा पैग़ाम, सियाक़ व सबाक़ और जो कुछ सबक़ और रहनुमाई हासिल की जा सकती है उस पर रहना चाहिए। उन बारीक निकात में हरगिज़ न उलझिए जिन का हक़ीक़ी ज़िन्दगी से कोई सम्बंध नहीं है।

3. सब शुरका को अपने मक़ासिद, सीमाओं और कार्य के तरीक़े से मुकम्मल तौर पर आगाह होना चाहिए।

4. सब शुरका को अपने काम से ज़रूरी लगाव होना चाहिए और यह एहसास होना चाहिए कि इस के लिए समय, तवज्जुह और महनत ज़रूरी होगी।

5. सब शुरका को मालूम होना चाहिए कि कुरआन के द्वारा अपना रास्ता किस तरह तलाश करें। (इस किताब का अध्ययन इस के लिए फ़ायदेमन्द हो सकता है)

6. शुरका को एक दूसरे के लिए अजनबी की तरह नहीं होना चाहिए बल्कि कुरआन पर ईमान के मुशतरक रिश्ते में बन्धे हुए भाइयों की तरह होना चाहिए जो इसकी समझ हासिल करने और इसकी पैरवी करने का पक्का इरादा रखते हैं।

अध्ययन का हलक़ा किस तरह चलाया जाए

1. सब से पहले एक शरीक अपना हासिले अध्ययन पेश करे।

2. इस के बाद दूसरे शुरका को शामिल हो कर अधिक व्याख्या, संशोधन करना, सवालात उठाना और जवाब उपलब्ध करना चाहिए।

3. अगर सब शुरका को अध्ययन करना है तो आप पहले से

किसी एक को पेश करने को कह दें। इससे पेशकश का मेयार बेहतर होगा। दूसरी सूरत यह हो सकती है कि बिल्कुल समय पर किसी शरीके हलक़ा से अध्ययन पेश करने के लिए कहें, इस सूरत में हर व्यक्ति चौकन्ना रहेगा और मेहनत करेगा।

4. यह बात हमेशा फ़ायदेमन्द होगी कि शुरका में से एक ज़्यादा आलिम और माख़ज़ (स्रोत) नतीजे तक पहुंच रखने वाला हो। पेशकश में जो कमी या ख़ामी रह गई है, वह उसे बहस के दौरान दूर कर सकता है। बातचीत के अन्दाज़ और रुख़ को निर्धारित कर सकता है।

5. अगर कोई शरीक कुरआन का अच्छा इल्म रखता है तो वह शुरूआत में दख़ल न दे, उसे चाहिए कि शुरका जो कुछ कहना चाहते हैं उन्हें कहने दे और फिर अगर वह ग़लती करें तो विनम्रता से उनको सुधारें या उनके इल्म में इज़ाफ़ा करे। उसका तरीक़ा तवज्जुह दिलाने वाले और सवाल उठाने वाले इन्सान का होना चाहिए न कि बहस करने वाले का।

6. आख़िर में किसी शरीक (बेहतर है कि निगरां या उस्ताद हो) को हमेशा अध्ययन वाले हिस्से का आम पैग़ाम, सारे विषयों और अमल की दावत को संक्षिप्त में बयान करना चाहिए।

दर्स

इजतिमाई दर्स के लिए नीचे लिखी हिदायतें मददगार साबित होंगी:

दर्स की तैयारी

1. सब से पहले सुनने वालों की हालत और सलाहियत के सम्बंध में सही अन्दाज़ा लगाना चाहिए। उन का इल्म, उनकी समझ, उनके ईमान का दर्जा, उन की फ़िक्र और परेशानियां और उन की इच्छाएं व ज़रूरतें क्या हैं?

2. फिर सुनने वालो को सामने रख कर सही आयतों का चुनाव करना चाहिए। ऐसा न हो कि आप के पास चन्द आयतों की तैयारी मौजूद है, बस उसको पेश कर दिया, चाहे उन का सम्बंध सुनने वालों के हालात और तक़ाज़ों से हो या न हो।

3. इसी तरह ज़बान, बयान के तर्ज़ और तरीक़ो में भी सुनने वालों का लिहाज़ रखना चाहिए।

4. अल्लाह तआला से दुआ भी कीजिए कि वह आपको तौफ़ीक़ दे कि आप क़ुरआन का सही अर्थ हासिल कर सकें और उसे सुनने वालों के सामने बयान कर सकें।

5. पहले आयतों का अध्ययन कीजिए और नोट्स तैयार कीजिए। यह सोचिए कि आप कहना क्या चाहते हैं, पूरा मज़मून किस तरतीब से पेश करना चाहते हैं, शुरूआत किस तरह करेंगे और ख़त्म कैसे होगा?

6. समय का पूरा लिहाज़ रखिए। तयशुदा समय से ज़्यादा हरगिज़ आगे न बढ़िए, चाहे आपके ज़हन में कितने ही क़ाबिले क़द्र निकात मौजूद हों और आपको उन्हें पेश करने का शोक भी हो। आपके ज़हन में यह बात रहनी चाहिए कि सुनने वालों की याद रखने की योग्यता सीमित होती है। वे आपके इल्म व फ़ज़्ल की क़द्र करने वाले तो बन जाएंगे मगर आपसे ज़्यादा सीखेंगे नहीं।

लम्बे हिस्से को कम समय में भी बयान किया जा सकता है और छोटे हिस्से को लम्बे समय में भी। यह सब इस बात पर निर्भर है कि आप दर्स की आयतों से हक़ीक़त में सुनने वालों को सुनाना क्या चाहते हैं।

7. आख़िर में दर्स का पैग़ाम स्पष्ट शब्दों में सुनने वालों के सामने पेश कर दीजिए ताकि वह उनके ज़हन में सुरक्षित रहे, और वे उस पर ग़ौर करते रहें। इस पैग़ाम का सम्बंध आयतों के दर्स के मर्कज़ी मज़मून से होना चाहिए।

दर्स देने का तरीक़ा

1. दर्स देते हुए सिर्फ़ दो मक़सद सामने होने चाहिएं:

i: अल्लाह का कलाम, अल्लाह के बन्दों को सुनाने से सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा मक़सूद हो।

ii: कुरआन का पैग़ाम साफ़ अन्दाज़ में और प्रभावी ढंग में पेश होना चाहिए।

2. यह बात हमेशा सामने रहे कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला के हाथ में है कि वह कुरआन का पैग़ाम आपकी ज़बान से सुनने वाले के दिल व दिमाग़ मे उतार दे। लेकिन अल्लाह तआला के साथ मोहताजी की इस निस्बत से आपकी अपनी यह ज़िम्मेदारी कम नहीं हो जाती कि आप ठीक-ठीक तैयारी करें और बेहतरीन तरीक़े से दर्स देने की कोशिश करें। कुरआन के पैग़ाम को ज़िन्दा और जगाने वाले पैग़ाम के तौर पर पेश करें और पैग़ाम का सम्बंध समय के हालात से और मसाइल से जोड़ते चले जाएं ताकि इसकी अहमियत स्पष्ट हो।

तर्ज़े अदा के असर की निर्भरता इस पर नहीं है कि आपके बयान की फ़साहत और बलाग़त ऊंचे स्तर वाली हो। सीधे सादे अन्दाज़ में बयान कीजिए तो ज़्यादा असरदार होगा। असल अहमियत आपकी नीयत और आपकी तैयारी की है।

3. पहले सुनने वालों के सामने सारी आयतों की तिलावत करें, फिर अनुवाद व तफ़सीर बयान करें। आयतों को दोबारा पढ़ कर व्याख्या करें या न करें, या पहले एक मुख़्तसर तमहीद बयान कर दें, फिर एक-एक आयत की व्याख्या करते जाएं – जितना समय आप के पास हो, उसको सामने रख कर आप अपने लिए कोई तरीक़ा इख़्तियार कर सकते हैं। अगर समय कम हो तो तमाम आयतों की शुरूआत में तिलावत करना भी ज़रूरी नहीं। यह समय सुनने वालों का ध्यान आकर्षित करने और उनको ज़हनी तौर पर तैयार करने में लगाएं कि क्या चीज़ उनके सामने पेश की जाने वाली है।

4. एक-एक आयत लें, या चन्द आयतें इकटठी, जैसे चाहें अनुवाद और व्याख्या करें। असल चीज़ यह है कि आपके बयान से सुनने वालों पर यह बात साफ़ हो जानी चाहिए कि यह मरबूत बयान है और एक आयत से दूसरी आयत का विषय पैदा हो रहा है।

5. आख़िर में ख़ुलासा और नतीजा ज़रूर पेश करना चाहिए। अगर समय बाक़ी हो तो तमाम आयतों को दोबारा पढ़कर उनका अनुवाद सुनाना भी फ़ायदेमन्द हो सकता है। इस तरह क़ुरआन की आयतों के अनुवाद से दर्स का ताअल्लुक़ सुनने वालों के ज़हन में ताज़ा हो जाएगा।

6. आप अपना बयान न पेश करें, क़ुरआन की आयतें ख़ुद बोलें। तफ़सीर के बग़ैर भी क़ुरआन बड़ा असर रखता है, ख़ास तौर पर उसकी ज़बान वालों के लिए। बीच-बीच में अपने ख़याल को ज़रूरत से ज़्यादा दाख़िल करना दरअसल क़ुरआन को बोलने से रोक देने के बाराबर है। लम्बी-लम्बी व्याख्याओं का नुक़सान यह है कि सुनने वाले का ज़हन व्याख्या में गुम हो जाता है और आयतों के मतलब पर उसकी तवज्जह नहीं रहती। इस लिए व्याख्या छोटी हो। जहां ज़रूरी हो जाए वहां अगर बयान लम्बा हो, तब भी बार-बार आयतें दोहरा कर उस से तअल्लुक़ क़ायम रखना ज़रूरी है। कोशिश यह कीजिए कि क़ुरआन और सुनने वालों के ज़हनों के बीच फ़ास्ला न पैदा हो।

7. क़ुरआन के नमूने और अंदाज़ पर अपना दर्स पेश करने की कोशिश कीजिए। सफ़लता का यह सब से बेहतर तरीक़ा है। शुरूआत में कुछ परेशानी महसूस होगी मगर आहिस्ता-आहिस्ता रास्ता आसान हो जाएगा। इस के लिए ज़रूरी है कि क़ुरआन को बार-बार पढ़ा जाए, उसके हिस्से याद किए जाएं और उसके उसलूबे बयान को जज़्ब किया जाए।

क़ुरआनी उसलूब के निम्नलिखित हक़ीक़तें आपको मालूम होनी चाहिएं:

(i) यह दिल व दिमाग़, अक्ल और जज़्बात यानी पूरे इन्सान को ख़िताब करता है।

(ii) इस का सम्बोधन शख़्सी है, सीधा है, संक्षिप्त है और इसमें फ़िक्री अपील और अमल की दावत पाई जाती है।

(iii) इसकी ज़बान और बयान भी उतना ही ज़ोरदार है जितना इसका पैग़ाम ज़ोरदार है यह सीधा दिल पर असर करता है।

(iv) यह ऐसी दलीलें देता है जो सुनने वाले आसानी से समझ सकें। ये दलीलें रोज़ाना की ज़िन्दगी और मुशाहिदे से उपलब्ध की जाती हैं। ये जल्द हज़्म होती हैं। ये ख़याली और मन्तक़ी नहीं होती।

8. मुश्किल अन्दाज़ न इख़्तियार कीजिए, न फ़लसफ़ा बनाकर पेश कीजिए बल्कि कुरआन की दावत को ज़िन्दा व मुतहर्रिक बनाकर पेश कीजिए। कुरआन का पैग़ाम पहुंचाने में नज़्म और किसी क़द्र तसव्वुरात का इस्तेमाल भी ज़रूरी है। इसके लिए आम फ़हम ज़बान इस्तेमाल कीजिए ताकि हर शख़्स समझ सके।

9. अमल की दावत देना, तजदीदे अहद कराना, नया संकल्प पैदा करना आपके दर्स का ज़रूरी हिस्सा होना चाहिए। तारीख़ का ज़िक्र हो या फ़ितरत का ज़िक्र, कोई आदेश हो या कोई बयान और मुकालमा, हर हाल में आगे बढ़ने, इताअत करने और अमल करने पर उभारने में मदद करे।

10. कुरआन से अपने दृष्टिकोण न हासिल करें, बल्कि अपने दृष्टिकोण कुरआन के अधीन बनाएं।

11. बयान ऐसा हो कि कुरआन सुनने वालों के दिल में उतर जाए। कुरआन की क़द्र व क़ीमत और मोहब्बत दिलों में पैदा हो जाए। एहसानमन्दी और शुक्रगुज़ारी के जज़्बात दिल में मोजज़न हों दर्स में उन मक़ासिद का हुसूल सामने रहना चाहिए।

12. सुनने वालों की प्रतिक्रिया पर भी ध्यान देते रहना चाहिए।

उनकी प्रतिक्रिया की रौशनी में अपनी बातचीत को मुख़्तसर या ख़त्म या कोई नई बात जिसकी ज़रूरत हो, जैसा हालात का तक़ाज़ा हो, वह करना चाहिए।

दर्स देने वाले साहब को अपना अलग तरीक़ा-ए-बयान और अन्दाज़ पैदा करना चाहिए।

(7)

कुरआन के अनुसार ज़िन्दगी

कुरआन की पैरवी

अगर आप पहले ही लम्हे से उस खुदा के आगे कामिल सुपुर्दगी में अपने अन्दर बदलाव लाना और अपनी ज़िन्दगी को फिर से बनाना शुरू न कर दें जिस ने आपको कुरआन दिया है। तो कुरआन पढ़ने से आपको बहुत थोड़ा फ़ायदा होगा, आपके हिस्से मैं नुक़सान और परेशानी भी आ सकती है। अगर अमल के लिए पक्का इरादा और कोशिश न हो तो दिल की हालत, रूह की प्रसन्नता और इल्म में इज़ाफ़े से आपको कोई फ़ायदा न होगा। अगर कुरआन आपके आमाल पर कोई असर न डाले और आप उसके अहकामात की इताअत न करें और जो वह मना करता है, उससे न रुकें तो फिर समझ लीजिए आप कुरआन के क़रीब नहीं हो रहे।

कुरआन के हर पृष्ठ पर सर झुकाने, इताअत करने, अमल करने और तबदीली लाने की दावत है। जो इसके हुक्म को तसलीम न करें, उन्हें काफ़िर, ज़ालिम और फ़ासिक़ कहा गया है। (अल-मायदा 5:44-47)। जिन लोगों को अल्लाह की किताब दी गई है लेकिन वह न उसको समझते हैं न उस पर अमल करते हैं, उन्हें एसे गधे क़रार दिया गया जो बोझ लादे हुए हैं मगर जो कुछ लादे हुए हैं, न उसको जानते हैं न उससे फ़ायदा उठाते हैं। (अल-जुमा 62:5)

हे 'रब'! निश्चय ही मेरी जाति वालों ने इस 'कुरआन' को उपहास का विषय ठहरा लिया था। (अल-फुरक़ान 25:30)

कुरआन को छोड़ देना, एक तरफ़ रख देना, इस का अर्थ है

इसको न पढ़ना, न समझना, न उसके अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना। उसको एक पुराना क़िस्सा समझना जिसका अब कोई काम नहीं रहा है। रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरआन की पैरवी पर ज़ोर देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने फ़रमाया:

मेरी उम्मत के बहुत से मुनाफ़िक़ क़ुरआन पढ़ने वालों में से होंगे। (अहमद)

वह शख़्स क़ुरआन का सच्चा मानने वाला नहीं है जो इस के हराम किए हुए को हलाल समझता है। (तिरमिज़ी)

क़ुरआन की तिलावत करो ताकि तुम जो कुछ वह मना करता है, उससे रुक सको। अगर यह तुम्हें इस क़ाबिल न बनाए कि तुम रुक जाओ तो तुम ने इसकी हक़ीक़ी अर्थों में तिलावत नहीं की है। (तबरानी)

सहाबा-ए-किराम (र०) के लिए क़ुरआन सीखने का अर्थ, उस को पढ़ना, उस पर ग़ौर व फ़िक्र करना और उस पर अमल करना होता था। रिवायत है कि

जो लोग क़ुरआन पढ़ने में मशगूल थे, बताते हैं कि उसमान इब्न अफ़्फ़ान (र०) और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (र०) जैसे लोग जब एक बार रसूल ﷺ से दस आयतें सीख लेते थे तो जब तक उन आयतों में इल्म और अमल के हवाले से जो कुछ होता था, उसे वाक़ई नहीं सीख लेते थे, आगे नहीं बढ़ते थे। वे कहा करते थे कि उन्होंने क़ुरआन और इल्म एक साथ सीखा है। इस तरह कभी-कभी वह सिर्फ़ एक सूरत सीखने में कई साल लगा देते थे।

(सुयूती: अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन)

हसन बसरी (रह०) कहते हैं: "तुम ने रात को ऊंट समझ लिया है जिस पर तुम क़ुरआन के विभिन्न मराहिल से गुज़रने के लिए सवारी करते हो। तुम से पहले वाले लोग इसे अपने मालिक के पैग़ामात समझते थे। रात को इस पर ग़ौर व फ़िक्र करते थे और दिन उस के अनुसार गुज़ारते थे।" (एह्याउल उलूम)

कुरआन के अध्ययन से आपके दिल में ईमान पैदा होना चाहिए। इस ईमान के अनुसार आपकी ज़िन्दगी को ढलना चाहिए। यह कोई तदरीजी मरहला वार अमल नहीं है जिस में आप पहले कई साल कुरआन पढ़ने में, फिर उसे समझने में, फिर ईमान मज़बूत करने में लगा दें। और फिर उसके बाद उस पर अमल करें। जब आप अल्लाह का कलाम सुनते हैं या तिलावत करते हैं तो आपके अन्दर ईमान की चिंगारी रौशन हो जाती है। जब अन्दर ईमान दाख़िल हो जाता है, तो आपकी ज़िन्दगी बदलनी शुरू हो जाती है। जो बात आपको याद रखनी चाहिए वह यह है कि कुरआन के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने का सब से ज़्यादा बुनियादी तक़ाज़ा यह है कि आप एक बड़ा फ़ैसला करें। दूसरे जो कुछ भी कर रहे हों, समाज की मांगें कुछ भी हों, आप के आस-पास कोई भी चिन्ताएं हों, आपको अपनी ज़िन्दगी का रास्ता मुकम्मल तौर पर बदलना होता है। यह फ़ैसला बड़ी महान कुरबानियां चाहता है। लेकिन अगर आप कुरआन को ख़ुदा का कलाम मान कर इस पर ईमान ला कर छलांग लगाने को तैयार न हों तो आप जो समय कुरआन के साथ लगा रहें हैं उस का कोई अच्छा नतीजा सामने नहीं आएगा।

पहले क़दम पर, पहले ही लम्हे यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया गया है कि कुरआन सिर्फ़ उन लोगों के लिए हिदायत है जो ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने के नुक़सानात और उसकी नाराज़गी मोल लेने से बचने के लिए अमल करने को तैयार हैं, यही मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं। (अल-बक़रह 2:1-5)

कुरआन इल्म और अमल के बीच और ईमान और नेक अमल के बीच कोई दूरी और फ़ासला स्वीकार नहीं करता।

कुरआनी मिशन की तकमील

कुरआन के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने का एक ज़रूरी और अहम **हिस्सा यह** है कि अपने चारों तरफ़ के लोगों तक इसका पैग़ाम

पहुंचाएं। अल्लाह के रसूल ﷺ पर जैसे ही पहली वही नाज़िल हुई आप ﷺ ने उसको लोगों तक पहुंचाने के महान काम का एहसास कर लिया। दूसरी वही قُمْ فَأَنذِرْ का हुक्म लिए हुए आई। फिर कई जगहों पर रसूल ﷺ पर यह स्पष्ट किया गया कि क़ुरआन को पहुंचाना, उसे सुनाना और उसकी व्याख्या करना, आप ﷺ का पहला फ़र्ज़ और आपकी जिन्दगी का मिशन है। (अल-अनआम 6:19 अल-फ़ुरक़ान 25:1, अल-अनआम 6:105, अल-मायदा 5:67, मरयम 19:97, अल-आराफ़ 7:157)

अब आप ﷺ के पैरोकार होने और अल्लाह की किताब के हामिल होने की हैसियत से यही मिशन हमारे हवाले है। हमारे पास क़ुरआन होने का तक़ाज़ा है कि हम इसे अपने और दूसरों तक पहुंचाएं। क़ुरआन सुनने का मतलब है कि इसे सुनाएं। हमें इसे पूरी मानवता पर स्पष्ट करना चाहिए और बताना चाहिए और छुपा कर नहीं रखना चाहिए।

और याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें 'किताब' दी गई थी यह दृढ़ वचन लिया कि तुम इस 'किताब' को लोगों के सामने भली-भांति स्पष्ट करोगे और उसे छिपाओगे नहीं। तो उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और थोड़े मूल्य पर उसका सौदा किया तो क्या बुरा सौदा है जो ये करते हैं। (आल-इमरान 3:187)

अगर आपके दिल में और हाथ में कोई चिराग़ है तो उसकी रौशनी फैलनी चाहिए। अगर आपके अन्दर कोई आग लगी है तो उसकी तपिश फैलनी चाहिए। जो वक़्ती दुनियावी मक़ासिद के लिए ऐसा नहीं करते वे हक़ीक़त में अपने पेट आग से भर रहे हैं।

हक़ यह है कि जो लोग उन अहकामों को छुपातें हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में नाज़िल किए हैं और थोड़े से दुनियावी फ़ायदों पर उन्हें भेंट चढ़ाते हैं वे दरअसल अपना पेट आग से भर रहे हैं। क़यामत के रोज़ अल्लाह हरगिज़ उन से बात नहीं करेगा, न उन्हें

पाकीज़ा ठहराएगा। वे अल्लाह की लानत के हक़दार होंगे।

निस्सन्देह जो लोग हमारी उतारी हुई खुली-खुली निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाते हैं, इसके बाद कि हम उसे लोगों के लिए किताब में खोल कर बयान कर चुकें हैं: वही हैं जिन पर अल्लाह की फिटकार पड़ती है और फिटकार वाले जिन्हें फिटकारेंगे। (अल-बक़रह 2:159)

परन्तु जिन लोगों ने 'तौबा' कर ली और (अपने को) सुधार लिया और स्पष्टतः बयान कर दिया, तो मैं उनकी 'तौबा' क़बूल करूंगा। और मैं बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और दया करने वाला हूं। (अल-बक़रह 2:160)

लेकिन अगर वह इसी हालत में मर गए तो इन पर सब के सब लानत करेंगे।

निःसन्देह जिन लोगों ने 'कुफ़्र' किया, और काफ़िर ही रह कर मरे; उन पर अल्लाह की और 'फ़रिश्तों' की और सारे मनुष्यों की फिटकार हैं। (अल-बक़रह 2:161)

अल्लाह उनकी तरफ़ निगाह नहीं डालेगा:

रहे वे लोग, जो अल्लाह की प्रतिज्ञा और अपनी क़समों का थोड़े मूल्य पर सौदा करते हैं, उनके लिए 'आख़िरत' में कोई हिस्सा नहीं और उनसे न तो अल्लाह 'क़ियामत' के दिन बात करेगा और न उनकी ओर देखेगा, और न उन्हें शुद्धता एवं विकास प्रदान करेगा। (आल-इमरान 3:77)

अब, अपने आप पर नज़र डालिए, आज कल के मुसलमानों को देखिए। इस हक़ीक़त के बावजूद कि दिन रात लाखों लोग क़ुरआन की तिलावत करते हैं, इस से हमारे हालात में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। या तो इसे हम पढ़ते हैं और समझते नहीं हैं या अगर हम समझते हैं तो उसे मानते नहीं या उस पर अमल नहीं करते, या अगर हम उस

पर अमल करते हैं तो हम उसका एक हिस्सा मानते हैं और एक रद्द करते हैं, या जिस समय हम उसे पढ़ने में और उस के किसी एक हिस्से पर अमल करने में मसरूफ़ हैं तो हम उसे छुपाने का और उसकी रोशनी दुनिया तक न पहुंचाने का बदतरीन जुर्म कर रहें हैं।

> और उनमें बे-पढ़े हैं, जो किताब को केवल कामनाओं का संग्रह जानते हैं। जबकि वे निरे अटकल के तीर-तुक्के चलाते हैं।
>
> तो तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से 'किताब' (कर्म-काण्ड) रचते हैं फिर लोगों से कहते हैं: "यह अल्लाह की ओर से है" ताकि उसके द्वारा थोड़ा मूल्य प्राप्त कर लें।
>
> (अल-बक़रह 2:78-79)

> तो क्या तुम 'किताब' के एक हिस्से पर 'ईमान' रखते हो और दूसरे का इन्कार करते हो? तुममें से जो लोग ऐसा करते हैं उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि सांसारिक जीवन में रुसवाई हो, और 'क़ियामत' के दिन उन्हें कड़ी-से-कड़ी यातना की ओर भेज दिया जाएगा? अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है। जो कुछ तुम करते हो। (अल-बक़रह 2:85)

हमारे ज़हनों मे ज़र्रा बराबर भी शक नहीं होना चाहिए कि जब तक हम कुरआन के गवाह होने की सब से अहम ज़िम्मेदारी अदा नहीं करेंगे, जो हम पर इसका हामिल होने और इसे पढ़ने की वजह से आती है, हम कुरआन का हक़ हरगिज़ अदा नहीं कर सकते। बेइज़्ज़ती, ज़िल्लत व तहक़ीर और पिछड़ापन जो हमारे हिस्से में आई है सिर्फ़ उस व्यवहार के कारण आई है जो हम कुरआन के साथ और जो मिशन इस ने हमारे हवाले किया है उसके साथ रखे हुए हैं।

अल्लाह तआला उस कुरआन से बाज़ क़ौमों को ज़वाल अता करता है और बाज़ को उरूज (उत्थान)

> और यदि ये 'तौरात' और 'इंजील' को और जो-कुछ इनके 'रब' की ओर से इन पर उतारा गया है क़ायम रखते, तो उन्हें खाने को मिलता ऊपर से भी और पांव के नीचे से भी।
>
> (अल-मायदा 5:66)

हम कुरआन के बारे में कितना ही आला इल्मी मेयार हासिल कर लें, हम कुरआन के मुकम्मल और हक़ीक़ी अर्थ समझने और मालूम करने में उस वक़्त तक सफ़ल नहीं हो सकते जब तक हम कुरआन की इताअत न करें।

रसूल ﷺ ने अपने सहाबा (र०) से फ़रमाया: तुम लोगों में ऐसे लोग होंगे कि जब तुम अपनी नमाज़ों का उनकी नमाज़ों से, अपने रोज़ों का उनके रोज़ों से, अपने अच्छे आमाल का उनके अच्छे आमाल से मुक़ाबला करो तो तुम्हें अपने आमाल बहुत कमतर महसूस होंगे। वे कुरआन पढ़ते होंगे लेकिन यह उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। (बुख़ारी)

तसलीम व इताअत कुरआन के हक़ीक़ी मिशन को पूरा करने के लिए ही नहीं, इसका अर्थ समझने की भी यक़ीनी कुंजी है। पैरवी करने से ऐसे अर्थ सामने आते हैं जिन्हें आप सिर्फ़ ग़ौर व फ़िक्र से हरगिज़ नही पा सकते। फिर आप कुरआन का मुशाहदा करने लगते हैं। सैयद मौदूदी (रह०) की यादगार शब्द हैं जो भुलाए नहीं जा सकते:

> लेकिन कुरआन की इन सारी तदबीरों के बावजूद आदमी कुरआन की रूह से पूरी तरह परिचित नहीं होने पाता जब तक कि अमलन वह काम न करे जिस के लिए कुरआन आया है। यह सिर्फ़ दृष्टिकोण और ख़्यालात की किताब नहीं है कि आप आराम कुर्सी पर बैठ कर इसे पढ़ें और इसकी सारी बातें समझ जाएं। यह दुनिया के आम तसव्वुरे मज़हब के अनुसार एक निरी मज़हबी किताब भी नहीं है कि मदरसे और ख़ानक़ाह में इसके सारे रमूज़ हल कर लिए

जाएं। यह एक दावत और तेहरीक की किताब है। इसने आते ही एक ख़ामोश तबियत और नेक इन्सान को तनहाई से निकाल कर खुदा से फिरी हुई दुनिया के मुक़ाबले में ला खड़ा किया। झूट के ख़िलाफ़ इस से आवाज़ उठवाई और वक़्त के अलमबरदाराने कुफ़्र व फ़िस्क़ व ज़लालत का इसको लड़ा दिया। घर-घर से एक-एक नेक रूह और पाकीज़ा नफ़्स को खींच-खींच कर लाई और दायी-ए-हक़ के झण्डे तले उन सब को इकटठा किया। कोने-कोने से एक-एक फ़ितना और फ़साद करने वाले को भड़काकर उठाया और हक़ के हामियों से उनकी जंग कराई। एक अकेले इन्सान की पुकार से अपना काम शुरू करके ख़िलाफ़ते इलाहिया के क़याम तक पूरे 23 साल यही किताब इस महान तहरीक की रहनुमाई करती रहीं और हक़ और बातिल की इस लम्बी कशमकश के दौरान एक-एक मंज़िल और एक-एक मरहले पर इसी ने तख़रीब के ढंग और तामीर के नक़्शे बनाए।

अब भला यह कैसे मुमकिन है कि आप सिरे से कुफ़्र व दीन के झगड़े और इस्लाम व जाहिलिय्यत के जंग के मैदान में क़दम ही न रखें और इस कशमकश की किसी मंज़िल से गुज़रने का आपको इत्तिफ़ाक़ ही न हुआ हो और फिर सिर्फ़ क़ुरआन के शब्द पढ़-पढ़ कर इसकी सारी हक़ीक़तें आपके सामने बे नक़ाब हो जाएं। इसे तो पूरी तरह आप उसी वक़्त समझ सकते हैं जब उसे लेकर उठें और दावते इलल्लाह का काम शुरू करें और जिस-जिस तरह यह किताब हिदायत देती जाए उस तरह क़दम उठाते चले जाएं। तब वे सारे तजरबे आपको पेश आंएगे जो क़ुरआन नाज़िल होने के समय पेश आए थे। मक्का और हब्श और ताइफ़ की मंज़िलें भी आप देखेंगे और बदर व ओहद से लेकर हुनैन और तबूक तक के मरहले भी आपके सामने आएंगे।

अबू-जहल और अबू-लहब से भी आपको वास्ता पड़ेगा, मुनाफ़िक़ीन और यहूद भी आपको मिलेंगे और साबिक़ीने अव्वलीन से लेकर मुअल्लफ़तुल-कुलूब तक सभी तरह के इन्सानी नमूने आप देख भी लेंगे और बरत भी लेंगे। यह एक और ही क़िस्म का "सुलूक" है, जिसको में "सुलूके कुरआनी" कहता हूं। इस सुलूक की शान यह है कि इस की जिस-जिस मंज़िल से आप गुज़रते जाएंगे, कुरआन की कुछ आयतें और सूरतें ख़ुद सामने आकर आपको बताती चली जाएंगीं कि वे इसी मंज़िल में उतरी थीं और यह हिदायत लेकर आती थीं। उस वक़्त यह तो मुमकिन है कि लुग़त और नहु और मआनी और बयान के कुछ निकात सालिक की निगाह से छुपे रह जाएं, लेकिन यह मुमकिन नहीं है कि कुरआन अपनी रूह को उसके सामने बेनक़ाब करने से बुख़्ल (कन्जूसी) बरत जाए।

फिर उसी कुल्लिया (नियम) के मुताबिक़ कुरआन के अहकाम, इसकी अख़लाक़ी तालीमात उसकी मआशी (आर्थिक) और तमद्दुनी हिदायतें और ज़िन्दगी के अलग-अलग पहलूओं के बारे में इस के बताए हुए उसूल व क़ानून आदमी की समझ में उस वक़्त तक आ ही नहीं सकते जब तक कि वह अमलन उन को बरत कर न देखे। न वह आदमी इस किताब को समझ सकता है जिस ने अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी को इसकी पैरवी से आज़ाद कर रखा हो और न वह क़ौम इस से आशना (परिचित) हो सकती है जिस के सारे ही इजतिमाई इदारे इसकी बनाई हुई रविश के ख़िलाफ़ चल रहे हों (तफ़हीमुल कुरआन, जिल्द अव्वल, पृष्ठ 33 से 35)

परिशिष्ट-1 (ज़मीमा)

रसूलुल्लाह ﷺ ख़ास तौर पर कौन से हिस्से पढ़ते थे

कुरआन की कुछ आयतें और सूरतें ऐसी हैं जिनके बारे में रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ उन को ख़ास नमाज़ों में या ख़ास मौक़ों पर कसरत से पढ़ा करते थे या जिन के फ़ज़ाइल और अज्र बयान कर के आप ﷺ ने विशेष रूप से उनकी तिलावत पर उभारा।

जो हदीसें यहां लिखी जा रही हैं वे इस लिए नहीं हैं कि कुरआन के एक हिस्से की बरतरी दूसरे हिस्से पर साबित की जाए। आपको कुरआन के दूसरे हिस्सों को नज़रअन्दाज़ नहीं करना चाहिए कि उन्ही हिस्सों को पढ़ने और याद करने में लग जाएं। यह इंतिख़ाब इस लिए फ़ायदेमन्द है कि एक व्यक्ति हर चीज़ याद करके हर रोज़ नहीं पढ़ सकता और ज़रूरत होती है कि किसी ख़ास हिस्से को पढ़ने की आदत बना ले। इस से बेहतर बात क्या हो सकती है कि इस मुआमले में रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी की जाए और जिस अज्र का आपने वादा किया है उसकी उम्मीद रखी जाए। यह बात याद रखें कि अल्लाह के रसूल ﷺ रमज़ान के महीने में कम से कम एक बार मुकम्मल कुरआन की तिलावत करते थे। आप तहज्जुद में लम्बी क़िराअत करते थे, सूरह अल-बक़रह और आल-इमरान एक रकअत में पढ़ते थे।

विभिन्न नमाज़ों में आप ﷺ क्या पढ़ते थे

फ़ज्र में

☆ आप ﷺ सूरह क़ाफ़ (50) और ऐसी ही दूसरी सूरतें पढ़ते थे। (हज़रत जाबिर बिन समुरह (र०), मुस्लिम, बाब अल-क़िराअतु फ़िस्सुब्हा, जिल्द 1, पृष्ठ 187)

☆ आप ﷺ ने सूरह वाक़िआ (56) पढ़ी। (तिरमिज़ी)

☆ मैं ने आप ﷺ को सूरह तकवीर (81) पढ़ते सुना। (अम्र बिन हुरैस (र०), जिल्द 1, पृष्ठ 186, मुस्लिम)

☆ जब आप ﷺ मक्का में थे, आप ने सूरह मोमिनून (23) 45 से 50 आयतों तक पढ़ीं। (अब्दुल्लाह बिन अस्साइब (र०), मुस्लिम, जिल्द 1, पृष्ठ 186)

☆ आप ﷺ ने अल-काफ़िरून (109) और इख़्लास (112) पढ़ीं। (अबू-हुरैराह (र०), मुस्लिम)

☆ आप ﷺ ने अल-फ़लक़ (113) और अन-नास (114) पढ़ी। (उक़बा बिन आमिर (र०), अहमद, अबू दाऊद)

☆ आप ﷺ ने अल-बक़रह (2) और आले इमरान (3) से कुछ आयतें पढ़ीं।

☆ रिवायत है कि हज़रत अबू बकर (र०) ने सूरह अल-बक़रह पढ़ी। (मुअत्ता)

☆ हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान (र०) अकसर सूरह यूसुफ़ (12) पढ़ा करते थे। (मुअत्ता)

☆ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (र०) ने सूरह यूसुफ़ और हज पढ़ी। (मुअत्ता)

☆ हज़रत उमर (र०) ने अबू मूसा को लिखा कि तिवाले

मुफ़स्सल पढ़ा करो (सूरह मुहम्मद (47) से सूर बुरूज (85) तक।

☆ रसूल ﷺ ने सूरः अल-काफ़िरून (109) और अल-इख़्लास (112) नमाज़ें फ़ज्र से पहले की दो रकअतों में पढ़ी। (अबू हूरैरा (र०), इब्ने माजा)

जुमे के दिन फ़ज्र में

☆ आपने पहली रकअत में हा मीम अल-सजदा (32) और दूसरी में अद्-दहर (76) पढ़ी। (अबू हुरैरा (र०), बुख़ारी व मुस्लिम)

ज़ोहर और अस्र में

☆ आप ﷺ सूरह अल-लैल (92) और एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ अल-आला (87) पढ़ा करते थे, इसी तरह अस्र की नमाज़ में। (जाबिर बिन समुरह (र०), मुस्लिम)

☆ आप ﷺ सूरह अल-बुरूज, तारिक़ और ऐसी ही सूरतें पढ़ा करते थे। (जाबिर बिन समुरह, तिरमिज़ी)

☆ हज़रत उमर (र०) ने अबू मूसा को लिखा कि औसाते मुफ़स्सल (सूरह अल-बुरूज से सूरह अल-बय्यिनह) तक पढ़ा करो। (तिरमिज़ी)

मग़रिब में

☆ मैं ने आप ﷺ को अल-मुरसलात (77) पढ़ते हुए सुना (उमे अल-फ़ज़्ल बुख़ारी व मुस्लिम)

☆ मैं ने आप ﷺ को सूरह तूर (52) पढ़ते हुए सुना। (जुबैर बिन मोतइम, मुस्लिम)

☆ आप ﷺ सूरह अल-काफ़िरून और अल-इख़्लास पढ़ा करते थे। (रिवायत अब्दुल्लाह (र०) बिन उमर, इब्ने माजा) ख़ास तौर से जुमे की रातों में (जाबिर बिन समुरह(र०))

☆ आप ने सूरह दुख़ान (44) पढ़ी। (अब्दुल्लाह (र०) बिन उतबा, निसाई)

☆ आप ने अल-आराफ़ पढ़ी। (हज़रत आयशा, निसाई)

☆ आप ने मग़रिब के बाद की दो रकअत में सूरह अल-काफ़िरून और अल-इख़लास पढ़ी। (अब्दुल्लाह बिन मसऊद, तिरमिज़ी)

☆ हज़रत उमर (र०) ने अबू मूसा को लिखा कि क़िसारे मुफ़स्सल पढ़ा करो। (अल-बय्यिना से अन-नास तक)।

इशा में

☆ आप ﷺ ने मआज़ बिन जब्ल को हिदायत की सूरः अश-शम्स (91), अज़्-ज़ुहा (93), अल-लैल (92), और अल-आला (87) पढ़ो और अल-बक़रह जैसी लम्बी सूरतें न पढ़ो। (हज़रत जाबिर, बुख़ारी व मुस्लिम)। इतनी लम्बी सूरतें कि नमाज़ियों पर बोझ और वे नमाज़ से भाग खड़े हों, न पढ़ें।

☆ मैं ने आप ﷺ को सूरह अत्-तीन (95) पढ़ते हुए सुना (अल-बराअ बिन आज़िब, बुख़ारी व मुस्लिम)

जुमे और ईद की नमाज़ों में

☆ मैं ने आप ﷺ को जुमे की नमाज़ में पहली रकअत में सूरः अल-जुमा और दूसरी रकअत में सूर अल-मुनाफ़िक़ून पढ़ते हुए सुना। (अबु हुरैरा (र०), मुस्लिम)

☆ आप ﷺ जूमा और ईदैन की नमाज़ों में सूरः अल-आला और अल-ग़ाशिया पढ़ा करते थे और अगर जुमा और ईद एक ही दिन पड़ गए तो आप ﷺ ने दोनों नमाज़ों में एक ही सूरतें पढ़ी। (नोमान बिन बशीर (र०), मुस्लिम)

☆ आप ﷺ ईदुल अज़हा ओर ईदुल फ़ित्र में सूरः क़ाफ़ (50) और क़मर (54) पढ़ा करते थे। (रिवायत अबा वाक़िद अल-लैसी, मुस्लिम)

आप ﷺ ख़ास मौक़ों पर क्या पढ़ते थे

तहज्जुद में

☆ नींद से जाग कर आप ﷺ आसमान की तरफ़ देखते थे और "ان فی خلق السموات والارض" आख़िर सूरत तक पढ़ते थे। आले इमरान (3:90-200) (अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र०), बुख़ारी)

सुब्ह और शाम के समय

☆ सूरह इख़लास, अल-फ़लक़ और अन-नास, तीन-तीन बार। उन्हें सुब्ह शाम पढ़ो। ये तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी करेंगी। (अब्दुल्लाह बिन ख़बैब (र०), तिरमिज़ी, अबू-दाऊद)

☆ आयतुल कुरसी और हा मीम

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ (سورہ مومن ۴۰:۲-۴)

जो उनकी सुब्ह तिलावत करेगा उनकी वजह से शाम तक हिफ़ाज़त में रहेगा और जो शाम के समय तिलावत करेगा, इनकी वजह से सुबह तक हिफ़ाज़त में रहेगा। (अबू-हुरैरा (र०), तिरमिज़ी)

☆ सूरह अल-हश्र की आख़िरी तीन आयतें (59:22-24)। अगर कोई सुब्ह इन की तिलावत करे तो शाम तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं। और अगर वह शाम में करे तो वे सुबह तक इस तरह करते हैं। (मुअक़्क़ल बिन यसार (र०), तिरमिज़ी)

☆ सूरह अर-रूम की तीन आयतें (30:17-19) अगर कोई सुब्ह के समय इन की तिलावत करे तो दिन भर जो नेक काम वह नहीं कर सका उसका अज्र दिया जाता है और अगर शाम को तिलावत करता है तो रात के समय वह जो नेक काम न कर सका उसका अज्र दिया जाता है। (अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र०), अबू दाऊद)

सोने से पहले या रात के दौरान

रात को सोने से पहले आयतुल कुरसी की तिलावत करो। आप ﷺ ने तसदीक़ की है कि इस तरह अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मुहाफ़िज़ तुम्हारे साथ रहेगा और सुब्ह तक शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा। (बुख़ारी)

जब आप ﷺ बिस्तर पर जाते थे तो दोनों हाथ क़रीब लाकर सूरह इख़लास, अल-फ़लक़ और अन-नास पढ़कर इन में फूंकते थे। फिर आप ﷺ जहां तक मुमकिन होता था, अपना हाथ अपने जिस्म पर फेरते थे। सर, चेहरा और जिस्म के सामने के हिस्से। ऐसा तीन बार करते थे। (हज़रत आयशा (र०), बुख़ारी व मुस्लिम)

☆ सूरह अल-बक़रह की आख़िरी दो आयतें पढ़ो, जो रात को इन्हें पढ़ेगा वह उसके लिए काफ़ी होगा। (अब्दुल्लाह बिन मसऊद (र०), बुख़ारी व मुस्लिम)।

☆ आले इमरान का आख़िरी रूकू (3:190-200) इसका अज्र रात भर की हिफ़ाज़त है।

☆ अद्-दुख़ान (44)। सुब्ह को 70 हज़ार फ़रीश्ते उसके लिए मग़्फ़िरत करेंगे। (अबू हुरैरा (र०), तिरमिज़ी)

☆ मुसब्बिहात की तिलावत करो। बनी इस्राईल (17) अल-हदीद (57) अल-हश्र (59) अस-सफ़ (61) अल-जुमा (62) अत्-तग़ाबुन (64) अल-आला (87)। आप ﷺ की आदत थी कि सोने से पहले इन की तिलावत करते थे और फ़रमाते थे कि इन में एक आयत है जो हज़ार आयतों से बेहतर है। (अर्ज़ बाज़ सारिया (र०), अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

☆ अस-सजदा (32) अल-मुल्क (67) आप ﷺ जब तक इनको पढ़ नहीं लेते थे सोते न थे। (रिवायत जाबिर (र०), अहमद, तिरमिज़ी।

कुछ हिस्सों के फ़ज़ाइल के बारे में आप ﷺ ने क्या फ़रमाया

☆ सूरह अल-फ़ातिहा (1)

क्या तुम्हें कुरआन की सब से अज़ीम सूरत की शिक्षा न दूं? आप ने फ़रमाया और फिर सूरह फ़ातिहा की तालीम दी और कहा कि यह अज़ीम कुरआन है जो मुझे दिया गया है। (हज़रत अबू सईद बिन अल माअली (र०), बुख़ारी)।

एक फ़रिश्ते ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा, इन दो नूरों पर खुशियां मनाइए जो आपको दिए गए हैं और आप ﷺ से पहले किसी रसूल को नहीं दिए गए थे। सूरह अल-फ़ातिहा और अल-बक़रह की आख़िरी दो आयतें (अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र०), मुस्लिम)।

उस खुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है। इस तरह की कोई चीज़ न तौरात में, न इंजील में, न ज़बूर में और न कुरआन में नाज़िल की गई है। (अबू हुरैरा (र०), तिरमिज़ी)।

यह हर मर्ज़ की शिफ़ा है। (अब्दुल मलिक बिन उमैर, दारमी)

☆ सूरह अल-फ़लक और सूरह अन-नास (113,114)

इस जैसी चीज़ें कभी देखी नहीं गईं (उक़बा बिन आमिर, मुस्लिम)।

पनाह तलाश करने वाला इन जैसी दो चीज़ों से बेहतर चीज़ की पनाह तलाश नहीं कर सकता। (उक़बा बिन आमिर, अबू दाऊद)

☆ सूरह अल-इख़लास (112)

आप ﷺ ने पूछा क्या तुम में से कोई एक रात में एक तिहाई कुरआन नहीं पढ़ सकता। फिर फ़रमायाः सूरह अल-इख़लास पढ़ा करो। इस लिए कि उस हस्ती की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी

ज़िन्दगी है, यह एक तिहाई कुरआन पढ़ने के बराबर है। (हज़रत अबू सईद अल-खुदरी (र०)

आप ﷺ ने एक व्यक्ति के बारे में जो हर नमाज़ में सूरह इख़्लास इस लिए पढ़ता था कि इस में रहमान की शान का ज़िक्र है, फ़रमाया कि उसे बता दो अल्लाह उस से मोहब्बत करता है। (आयशा (र०), बुख़ारी व मुस्लिम)

आप ﷺ ने एक शख़्स से जो सूरह इख़्लास से मोहब्बत करता था फ़रमाया तुम्हारी इससे मोहब्बत तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर देगी।" (अनस (र०), तिरमिज़ी व बुख़ारी)

☆ **सूरह अल-काफ़िरून** (109)

यह कुरआन के एक चौथाई के बराबर है। (अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र०) व अनस बिन मालिक (र०), तिरमिज़ी)

सूरह अन-नस्र (110)

यह कुरआन के एक चौथाई के बराबर है। (अनस (र०), तिरमिज़ी)

☆ **सूरह अत्-तकासुर** (102)

क्या तुम में से कोई एक दिन में एक हज़ार आयतों की तिलावत नहीं कर सकता? आप ﷺ ने पूछा: फिर फ़रमाया: क्या तुम में से कोई सूरह अत्-तकासुर की तिलावत नहीं कर सकता?

☆ **सूरह अज़्-ज़िलज़ाल** (99)

यह आधे कुरआन के बराबर है। (रिवायत अब्दुल्लाह (र०) बिन अब्बास, अनस बिन मालिक, तिरमिज़ी)

☆ **आयतुल कुरसी, अल-बक़रह** (2:255)

आप ﷺ ने पूछा: क्या तुम जानते हो कि अल्लाह की किताब में

कौन सी आयत अज़ीमतरीन है और जब बताया गया कि आयतुल कुरसी है तो आप ने फ़रमाया: तुम्हें इल्म मुबारक हो, ऐ अबुल मुन्ज़िर। (उबई (बिन काअब की कुन्नियत, मुस्लिम)

☆ آمَنَ الرَّسُول......(अल-बक़रह: 285)

जिस घर में यह आयत तीन रात तिलावत की जाए, शैतान इसके क़रीब नहीं आता (नोमान बिन बशीर (र०), तिरमिज़ी)

यह अर्शे इलाही के नीचे अल्लाह की रहमत के ख़ज़ानों में से है जो अल्लाह ने उम्मत को दिया है। इस दुनिया में या उस दुनिया में कोई ऐसा ख़ैर नहीं जो इसमें शामिल न हो। (हज़रत ईफ़ा (र०) बिन अब्दुल कलाई, दारमी)

उन्हें सीखो और अपनी औरतों और बच्चों को सिखाओ इस लिए कि ये बरकत हैं और दुआएं हैं। (अबूज़र (र०), हाकिम)

☆ सूरह अल-बक़रह और आले इमरान (2,3)

दो नूर वाली सूरतों अल-बक़रह और आले इमरान की तिलावत करो इस लिए कि ये क़यामत के दिन दो बादलों, दो सायों या परिन्दों के दो ग़ौल की तरह अपने पढ़ने वालों की वकालत करते हुए आएंगी। (अबू उमामा (र०), मुस्लिम)

क़यामत के दिन कुरआन अपने उन पढ़ने वालों के साथ लाया जाएगा जो उस पर अमल करते थे। सब से आगे अल-बक़रह और आले इमरान दो सियाह बादल, चिराग़ या परिन्दों के ग़ौल की शक्ल में होंगी, जो अपने पढ़ने वालों की वकालत करती होंगी। (नवास इब्ने समआन (र०), मुस्लिम)

(तिलावते कुरआन छोड़ कर) अपने घरों को क़बरिस्तान में तबदील न करो। जिस घर में सूरह अल-बक़रह पढ़ी जाती है, शैतान वहां से भाग जाता है। (अबू हूरैरा, मुस्लिम)

सूरह बक़रह की तिलावत करो। इसका पढ़ना बरकत है और

इसका छोड़ना हसरत है। (अबू-उमामा (र०), मुस्लिम)

हर चीज़ का एक उभार होता है। कुरआन का उभार सूरः बक़रह है।

☆ **सूरह अल-अनआम** (6)

इसके नाज़िल होने के वक़्त इतने फ़रिश्ते थे कि उफ़क़ उन से छुप गया था। (जाबिर (र०), हाकिम)

☆ **सूरह अल-कहफ़** (18)

जो भी सूरह कहफ़ की पहली दस आयतों को याद करता है और उनपर अमल करता है वह दज्जाल से महफ़ूज़ रखा जाएगा। (अबू अद-दरदा (र०), मुस्लिम)

जो शख़्स जुमे के दिन सूरह कहफ़ की तिलावत करेगा, इस के लिए अगले जुमे तक रौशनी रहेगी।

☆ **सूरह यासीन**

हर चीज़ का दिल होता है, कुरआन का दिल यासीन है। जो इसे पढ़ता है अल्लाह तआला उसके लिए कुरआन की दस बार तिलावत लिख लेता है। (अनस (र०), तिरमिज़ी)

जो अल्लाह की रज़ा के लिए सूरह यासीन तिलावत करता है, उसके पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएंगे। इस लिए अपने मरने वालों पर इसकी तिलावत करो (मअक़िल बिन यसार (र०), बैहक़ी)

☆ **सूरह फ़तह** (48)

मैं सूरज के नीचे किसी चीज़ से भी ज़्यादा इसे पसन्द करता हूं। (उमर, बुख़ारी)

☆ **सूरह रहमान** (55)

हर चीज़ का एक ज़ेवर होता है कुरआन का ज़ेवर सूरह रहमान है। (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (र०), बैहक़ी)

☆ **सूरह वाक़िया** (56)

जो कोई हर रात सूरह वाक़िया की तिलावत करता है, कभी भूखा न रहेगा। (अब्दुल्लाह बिन मसऊद (र०), बेहक़ी)

☆ **सूरह मुल्क** (67)

तीस आयतों की यह सूरह एक आदमी के हक़ में मुदाख़लत करती है, यहां तक कि उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएं। (अबू हूरैरा, अहमद, तिरमिज़ी, अबू दाऊद)

मैं चाहता हूं कि यह हर साहिबे ईमान के दिल में हो। (अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र०), हाकिम)

परिशिष्ट-2 (ज़मीमा)

कुरआन के अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

व्यक्तिगत रूप से या हलक़े के अध्ययन के लिए कुरआनी हिस्सों का कोई निसाब (पाठ्यक्रम) तजवीज़ करने में बड़ी मुश्किलें आती हैं। पहली यह कि क्या शामिल किया जाए। मुकम्म्ल कुरआन से कम एक इत्मिनान बख़्श और काफ़ी इंतिख़ाब लगभग नामुमकिन है। कुरआन के हर हिस्से में कोई न कोई इज़ाफ़ा या नई बात होती है। जो हिस्से ज़ाहिरी तौरपर एक जैसे हो या जहां तकरार महसूस होती हो, वह भी अपनी कोई ख़ास बात पेश करते हैं। सीमित चुने हुए हिस्सों में सीमित विषय ही आ सकते हैं। इस लिए हर निसाब में यह संगीन ख़ामी रहेगी कि इस में इस से ज़्यादा तादाद में, इतने ही या इस से अधिक अहम विषयों को शामिल न किए गए हों। इसके अतिरिक्त कोई भी चुनाव एक तरफ़ा होगा और चुनाव करने वाले की प्राथमिकताओं का निशान होगा जो ज़रूरी नहीं कि कुरआन की भी हों। जो निसाब तजवीज़ किए जा रहें हैं, उनका अध्ययन करते हुए उन बातों का ज़हन में रखना बहुत अहमियत रखता है। बराबर ख़याल रहे कि जो कुछ शामिल नहीं किया गया है वह भी इतना ही क़ीमती है और यह कि एक ख़ताकार इंसान आपकी रहनुमाई कर रहा है।

दूसरी मुश्किल यह होती है कि कहां से शुरू किया जाए, कहां ख़त्म किया जाए और किस तरतीब से चला जाए। क़ाबिले इत्मिनान तरतीब तो कुरआन की अपनी तरतीब ही हो सकती है जो ख़ुद अल्लाह की तरफ़ से है मगर एक निसाब में तरतीब बदलने से बचा नहीं जा सकता। अब तरतीब बदली जाए तो किस लिहाज़ से बदली

जाए। फिर भी यह एक तरफ़ा ही होगी। कोई भी तरतीब एक जैसी मुताबादिल तरतीबों में से एक होगी। आप इस तरह शुरूआत कर सकते हैं कि कुरआन के अल्लाह की तरफ़ से होने की हैसियत को तय किया जाए और फिर कायनात में, तारीख़ में और अपने नफ़्स में जो शहादतें हैं, उनका परिचय करवाया जाए। अल्लाह, रिसालत और आख़िरत पर ईमान, व्यक्तिगत व सामूहिक अख़्लाकियात, मुसलमान की ज़िन्दगी का मक़सद, ईमान, जिहाद और अल्लाह से वादा पूरा करने की दावत। कोई बुनियादी ईमान से भी शुरूआत का सकता है। मैं ने यहां इस बात को प्राथमिकता दी है (और उसे हालात के लिहाज़ से बदला जा सकता है) कि पढ़ने वालों को इस्लाम की बरकतों से, उनकी ज़िन्दगी के मक़सद से और अल्लाह से उनके वादे को याद दिलाया जाए। इसकी बुनियाद सूरह बक़रह की आयात 40 से 47 के मेरी इस समझ पर है कि इस में अल्लाह ने रास्ते से भटके हुए मुसलमानों से किस तरह ख़िताब किया है।

हर हलक़ा-ए-अध्ययन में शुरूआत इस बहस से होना चाहिए कि कुरआन को किस तरह पढ़ा और समझा जाए। इस मक़सद के लिए यह किताब फ़ायदेमन्द हो सकती है।

सूरह फ़ातिहा ख़ास तवज्जह चाहती है। इसे कुरआन मे एक ख़ास स्थान प्राप्त है। इसमें बुनियादी मफ़ाहीम की पूरी दुनिया आ गई है आप इसे हर रोज़ कई बार पढ़ते हैं। इस लिए इसे हर निसाब का हिस्सा होना चाहिए। लेकिन एक शुरूआत करने वाले को किसी अच्छे उसताद या तफ़सीर की किताब से मदद लेने की ज़रूरत होगी ताकि इसके अध्ययन से ज़रूरी फ़ायदा हासिल कर सके। जब इस तरह की मदद उपलब्ध हो तो उसे निसाब में ज़रूर शामिल होना चाहिए, चाहे तजवीज़ किए हुए हिस्सों में से किसी को छोड़ना पड़े।

कुरआन के आख़िर में जो छोटी सूरतें हैं और जो आप रोज़ाना नमाज़ में पढ़ते हैं, वे भी अहम हैं। उनकी सही समझ के लिए

आपको मदद की ज़रूरत होगी। साधन उपलब्ध हों तो उनका अध्ययन ज़रूर करना चाहिए।

यहां दो निसाब दिए जा रहें हैं:

1. 12 चुने हुए हिस्सों का संक्षिप्त निसाबः यह स्टडी सर्किल के लिए एक साल के लिए निसाब के तौर पर लाभदायक हो सकता है या मुख़्तसर दौरानिए के तफ़सीली अध्ययन के लिए जैसे 12 हफ़्ते या 14 दिन का तालीमी व तरबीयती कोर्स। इस शर्त पर कि अध्ययन और तैयारी के लिए सही समय हो या एक उस्ताद मौजूद हो। इसकी बुनियाद पर पांच सात दिन के मुख़्तसर निसाब भी तैयार किए जा सकते हैं। हर इंतिख़ाब के साथ मैं ने कुछ – स्पष्ट रहे कि कुछ, सब नहीं – ख़ास बातें दीं हैं जिन पर आप ग़ौर कर सकते हैं। कुछ क़ुरआनी हवाले भी दिए गए हैं ताकि आप इनकी रौशनी में उन पर ग़ौर कर सकें। ये हवाले भी मुकम्मल इहाता नहीं करते और इनका रब्त मेरी समझ पर आधारित है। आगे चलकर हवाले कम दिए गए हैं इस लिए कि यह उम्मीद की गई है कि आप ज़्यादा आगे बढ़ चुके होंगे और ज़्यादा मानूस हो चुके होंगे।

2- चालीस चुने हुए हिस्सों का लम्बा निसाबः यह साप्ताहिक स्टडी सर्किल के लिए एक साल का निसाब है।

मुख़्तसर निसाबः 12 चुने हुए हिस्से

1-सूरह हज (22:77-78)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: इबादत व इताअत की ज़िन्दगी। इख़्तिताम और तकमील जिहाद में। शहादत के मिशन के गिर्द। मुसलमान होने का मक़सद। नमाज़, ज़कात और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ना।

1.1 रुकू व सुजूद पर इबादत व इताअत के कामों की हैसियत से। नमाज़, ख़ासतौर से रात की, दिल की हालत और निजी और अवामी दायरे में बरताव और व्यवहार के निशान के तौर पर। 2:125, 16:49, 2:43, 76:26, 39:9, 77:48, 5:55, 96:19, 9:112, 48:29, 2:58

1.2 इबादत पर, तख़लीक़ के मक़सद की हैसियत से। अल्लाह की तरफ़ से मर्कज़ी पैग़ाम। मुकम्मल इताअत और सुपुर्दगी। सारी ज़िन्दगी से सम्बंधित। झूटे ख़ुदाओं से मुंह फेरना। 51:56, 16:36, 21:25, 4:36, 39:11, 40:66, 12:40

1.3 ख़ैर पर, दिल से लेकर ज़िन्दगी के हर हिस्से पर। 8:70, 2:269, 2:280, 73:20, 99:7

1.4 जिहाद और उसके हक़ पर। 49:15, 8:74, 3:142, 9:19-22, 4:95-96, 61:11, 9:41-45, 9:24

1.5 शहादत के मिशन के लिए चुने जाने पर और हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) से ताअल्लुक़ पर। 2:128-129, 2:143, 6:161-164, 3:65-68

1.6 हज़रत इब्राहीम के तौहीद, इताअत और कुरबानी के नमूने

पर। 6:79, 60:4, 2:131

1.7 दीन पर कि इस में कोई मुश्किल नहीं। 5:3-6, 2:185, 4:26-28

1.8 शहादत के मिशन पर। 2:213, 33:45, 5:67, 48:8, 3:187, 4:41, 2:159-163, 174-176

1.9 नमाज़ और उसकी अहमियत पर, इसकी इक़ामत की बातनी व ज़ाहिरी शर्तें। 2:3, 19:59, 70:23,34, 2:238, 4:102-103, 2:239, 29:45, 7:29, 23:2, 4:43, 17:78, 4:142, 2:43, 7:31, 62:9-11, 19:55, 107:1-7, 22:41

1.10 ज़कात, उस की अहमियत और रूह पर। 41:6-7, 9:5, 30:39, 9:103

1.11 अल्लाह को मज़बूती से थामने पर। 3:101, 31:22, 36:77-82

2. सूरह बक़रह (2:40-47)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: हिदायत की बरकतों और दूसरी बातों के याद रखने पर, अल्लाह के साथ वादा पूरा करने पर, ईमान के एहया (जीवित करने) पर। मामूली फ़ायदों के लिए अल्लाह के पैग़ाम का सौदा करना, हक़ को झूट के साथ मिलाने और ख़त्म करने पर, हक़ को छुपाने पर, नमाज़ और ज़कात पर, नमाज़ में और इसके बाहर इजतिमाई ज़िन्दगी पर। निफ़ाक़ और दो रंगी पर। सब्र और नमाज़ पर अख़लाक़ी ताक़त के तौरपर, अल्लाह से मुलाक़ात के यक़ीन पर जब कोई चीज़ काम न आएगी।

2.1 हिदायत में नेमत पर, फ़ितरत में, तारीख़ में। 5:3, 2:150, 5:7, 16:18, 3:103, 8:26, 5:20

2.2 वादे पर। 9:111, 48: 8-10, 7:172, 36:60, 33:21-24, 5:12-13, 3:76-77

2.3. सौदे में अल्लाह के हिस्से पर, इस दुनिया में और आख़िरत

में। 3:139, 24:55, 5:66, 4:66-69

2.4 ईमान को ताज़ा करने की दावत पर। 4:136-139, 57:7-16, 4:60-61

2.5 दुनियावी फ़ायदे के लिए ईमान का सौदा करने पर। 5:44, 2:174-176

2.6 अक़ीदे और आमाल में हक़ को झूट से छुपाने पर। 2:75, 78, 79, 80, 88,91, 94, 102, 111, 113, 5:18

2.7 हक़ को छुपाने पर। 2:157-163, 174-176

2.8 नमाज़ और इस तरह जमात के साथ इजतिमाई ज़िन्दगी की अहमियत पर। मस्जिद की नमाज़ बा जमात, इस्लामी जमात के नमूने के तौरपर। 18:28, 9:16-17, 24:36, 2:114, 9:107-108

2.9 क़ौल व अमल के तज़ाद पर, ख़ासतौर से दावत में। 61:2-3, 63:1-4

2.10 सब्र और नमाज़ पर अल्लाह से वादा पूरा करने के ज़रूरी साधन के तौरपर। 2:153-157, 41:35, 46:35, 7:137, 8:46, 3:125, 8:65-66

2.11 अल्लाह की तरफ़ वापिस लौटने और उस से मिलने की आगही और यक़ीन, सब्र और नमाज़ की बुनियाद के तौरपर। 52:48

3. सूरह अल-मुज़्ज़म्मिल (73:1-10,20)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामना। रात की नमाज़ों में तिलावते क़ुरआन, ज़िक्र, तवक्कुल, सब्र, नमाज़, ज़कात, इनफ़ाक़, इस्तिग़फ़ार।

3.1 क़यामुल्लैल पर। 32:15-16, 39:9-23, 51:15-19, 17:78-82

3.2 दिन में तस्बीह पर, दावत की हैसियत से। 20:24-33

3.3 ज़िक्र पर तज़किये के लिए कुंजी की हैसियत से, हर समय,

अलग-अलग शकलों में, दिल से, ज़बान से, जिस्म से, आमाल से, दावत से, जिहाद से। 87:15, 3:191, 13:28, 39:22-23, 62:9, 2:150-155

3.4 तवक्कुल पर, तौहीद पर आधारित कलीदी दाख़ली ताक़त की हैसियत से, उसकी रूह और ज़रूरत। 8:2-4, 65:3, 11:123, 12:67, 25:58, 14:12

3.5 يقولون की अलग-अलग शकलों पर जो सब्र का तक़ाज़ा करती हैं। 34:8, 21:5, 25:4-5, 7, 68:8-15, 17:90-93, 10:15, 17:73

3.6 क़र्ज़े हसना पर और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने यानी इनफ़ाक़ पर। 57:11-16, 92:18-21, 23:60, 2:264-274, 3:92, 4:38, 57:10, 63:11, 35:29

3.7 इस्तिग़फ़ार पर, अल्लाह के पैग़ाम में मर्कज़ी अहमियत के तौर पर: निगरानी, जायज़ा, माफ़ी, रुजू, दुनिया और आख़िरत में इनामात। 4:110, 3:15-17, 3:133-136, 3:146-148, 71:7-12, 39:53, 64:17

4- **सूरह अल-हदीद** (57:1-7)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: हर चीज़ के अल्लाह की शान बयान करने पर, बादशाही उस के लिए है, ज़िन्दगी और मौत का इख़्तियार, हर चीज़ पर इख़्तियार, हर चीज़ का इल्म, जो कुछ दिलों में है, उसका इल्म। इस हवाले से इनफ़ाक़ और ईमान की दावत।

4.1 अल्लाह की सिफ़ात पर। 22:18, 17:44, 10:31-36, 6:59-61, 3:154, 28:70-72, 2:255, 59:22-24, 3:25-26

5-सूरह अल-नहल (16:1-22)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए। अनफुस व आफ़ाक़ में तौहीद, आख़िरत और रिसालत की निशानियों पर। बामक़सद तख़लीक़, ज़मीन व आसमान की, इंसान की, हैवान की। बारिश बरसाना, फ़सलों को

उगाना। रात और दिन, सूरज, चांद और सितारे। रंगों का अलग-अलग होना। समुद्रों में मौजूदा दौलत और खुराक, सितारों के द्वारा हिदायत।

5.1 निशानियों पर, एक जैसी आयतों में 30:17-27, 27:59-68, 10:1-10, 31-36

6- सूरह यासीन (36:50-65)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: जिन्दगी के सफ़र के बाद के अलग-अलग मराहिल पर। मौत के आने पर और आख़िरी लमहात, दोबारा ज़िन्दगी, हिसाब, फ़ैसला, इनाम, सज़ा।

6.1 आख़िरत पर। 50:16-35, 75: 20-30, 18:47-49, 20:100-112, 22:1-7, 23:99-118, 43:66-80, 44:40-59, 51:1-27

7- सूरह अल-हदीद (57: 20-25)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: मौजूदा ज़िन्दगी की हक़ीक़त और नौईयत पर। अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की मदद करने के लिए। जान व माल क़ुरबान करने पर आमादगी, इन्सानों के बीच इन्साफ़ क़ायम करने के लिए ताक़त इस्तेमाल करने पर।

7.1 इस दुनिया की जिन्दगी पर और आने वाली ज़िन्दगी पर। 3:14-15, 185, 10:24, 18:45, 4:134, 17:18-19, 42:19-20

7.2 इंसाफ़ और बराबरी क़ायम करने पर। 4:135, 61:9-14

8- सूरह अनकबूत (28: 1-20)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: ईमान की जांच और कामयाबी के हासिल करने के लिए आज़ाइश की ज़रूरत पर।

9-सूरह अनफ़ाल (8:72-75)

हिजरत, जिहाद और अल्लाह के कामों में मदद के ईमान के साथ ज़रूरी और लाज़मी ताअल्लुक़ पर ग़ौर करो। जिहाद के लिए इजतिमाइयत की ज़रूरत।

10- **सूरह तौबा** (9:19-24)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: ईमान और जिहाद मिल कर आलातरीन आमाल। अल्लाह, उसके रसूल ﷺ और उसके रास्ते में जिहाद की मोहब्बत के लिए रिश्तेदार, माल व दौलत, कैरियर, बिज़नेस, जायदाद, हर चीज़ क़ुरबान करने पर।

11- **सूरह नूर** (24:47-52, 62-64)

इन निकात पर ग़ौर कीजिए: अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करने के लिए जो इजतिमाई ज़िन्दगी क़ायम की जाए उस की बुनियाद रसूल ﷺ की इताअत और उसके इरशादात के अनुसार होने पर।

12- **सूरह आले इमरान** (3:190-200)

एक जामेअ ख़ुलासा: ज़मीन और आसमानों की तख़लीक़ में और दिन-रात के आने-जाने में, अल्लाह, आख़िरत और रिसालत की निशानियां, हर समय ज़िक्रे इलाही के साथ ज़िन्दगी गुज़ारना। आख़िरत की ज़िन्दगी असल मक़सद है। रसूल ﷺ पर ईमान और भरोसा, ईमान के तक़ाज़े: कोशिशें और आज़माइश, इजतिमाई ज़िन्दगी के लिए हिदायतें।

उम्मीद है कि यह निसाब किसी लम्बे निसाब के हिस्से के तौरपर अध्ययन किया जाएगा और इस लिए इस में एक मुसलमान की ज़िन्दगी की व्यक्तिगत व इजतिमाई विशेषताओं पर कोई चीज़ शामिल नहीं की गई है।

अगर ऐसा नहीं है तो इज़ाफ़ी तौर पर निम्नलिखित हिस्से शामिल कर लिए जाएं:

(i) बनी इस्राईल 17:9, 23,39, इसके साथ अल-फ़ुरक़ान 25:63-77 और लुक़मान 31:12-19 भी शामिल कर लिए जाएं।

(ii) अल-हुजुरात 49:10-14

लम्बे निसाबः 40 मुन्तख़ब हिस्से

हफ़्तावार स्टडी सर्किल के लिए एक साल का निसाब (पाठ्क्रम)

1-अल-हज	(22:77-78)	इबादत की जिन्दगी, जिहाद, शहादत का मिशन
2-अत-तौबा	(9:111-112)	ईमान का अहद, इबादत की ज़िन्दगी
3-अन-निसा	(4:131-137)	अदल व इनसाफ़ की गवाही, ईमान की दावत
4-आले इमरान	(3:102-110)	उम्मत का मक़सद
5-अल-फ़तह	(48:8-11)	रसूल ﷺ के मिशन को जारी रखने का अहद
6-अल-बक़रह	(2:40-46)	अहद पूरा करने की दावत
7-अल-मुज़्ज़म्मिल	(73:1-10)	अल्लाह से ताअल्लुक़ की तामीर
8-अल-इसरा	(17:23-39)	व्यक्तिगत व इजतिमाई अख़लाक़
9-अन-नहल	(16:1-11)	तौहीद, रिसालत व आख़िरत के लिए निशानियां
10-अन-नहल	(16:12-22)	तौहीद, रिसालत व आख़िरत के लिए निशानियां
11-यूनुस	(10:31-36)	तौहीद के लिए निशानियां, हिदायत
12-अल-हज	(22:1-7)	आख़िरत के लिए निशानियां
13-क़ाफ़	(50:1-18)	आख़ितर के लिए निशानियां

14-अल-मोमिनून	(23:99-118)	आख़िरत
15-यासीन	(36:50-65)	आख़िरत
16-क़ाफ़	(50:19-35)	आख़िरत
17-अज़्-ज़ुमर	(39:53-66)	आख़िरत के लिए तैयारी
18-अल-हश्र	(59:18-24)	आख़िरत के लिए तैयारी, अल्लाह के गुण
19-अल-हदीद	(57:1-7)	अल्लाह के गुण। ईमान व इंफ़ाक़ की दावत
20-अल-हदीद	(57:12-17)	ईमान और इंफ़ाक़
21-अल-हदीद	(57:20-25)	मौजूदा ज़िन्दगी, इंफ़ाक़, अद्ल क़ायम करना
22-अस-सफ़	(61:9-14)	रसूलुल्लाह ﷺ के मिशन को क़ुबूल करने की दावत, ईमान, जिहाद
23-अल-अनकबूत	(29:1-11)	ईमान की जांच
24-अल-अनफ़ाल	(8:72-75)	ईमान, हिजरत, जिहाद, जमाअत
25-अन-निसा	(4:95-100)	हिजरत, जिहाद
26-अत-तौबा	(9:19-24)	जिहाद सब से अफ़ज़ल अमल, हर चीज़ क़ुरबान कर देना
27-अत्-तौबा	(9:38-45)	जिहाद
28-आले इमरान	(3:169-175)	अल्लाह के रास्तें में जान देना
29-अल-बक़रह	(2:261-266)	इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह
30-अल-बक़रह	(2:267-272)	इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह

31-अल-अनफ़ाल	(8:20-29)	इजतिमाई ज़िन्दगी, इताअत
32-अन-निसा	(4:60-67)	इजतिमाई ज़िन्दगी, इताअत
33-अल-नूर	(24:47-52, 62-64)	इजतिमाई ज़िन्दगी, समा व ताअत
34-अल-हुजुरात	(49:1-9)	इजतिमाई ज़िन्दगी: क़ाईदीन से ताअल्लुक़
35-अल-मुजादिला	(58:7-13)	इजतिमाई ज़िन्दगी: हुकूक़ व फ़राइज़
36-अल-हुजुरात	(49:10-15)	इजतिमाई ज़िन्दगी: आपसी ताअल्लुक़ात
37-हामीम अल-सजदा	(41:30-36)	दावत और ज़रूरी सिफ़ात
38-अल-बक़रह	(2:150-163)	मिशन और उसके तक़ाज़े
39-आले इमरान	(3:185-192)	खुलासा
40-आले इमरान	(3:193-200)	खुलासा

बावन (52) हफ़्तों के लिए सिर्फ़ 40 इन्तिख़ाब दिए गए हैं। किसी हफ़्ते नाग़ा भी होगा और कुछ हिस्सों के अध्ययन में एक हफ़्ते से ज़्यादा लग सकता है।

अगर समय हो तो क़ुरआन में जो हिस्से तारीख़ से सम्बंधित हैं उनको भी अध्ययन करना चाहिए। मैं ने उनको शामिल नहीं किया है। इस हवाले से मेरा मश्वरा यह होगा कि हर हफ़्ते एक नबी का अध्ययन किया जाए, जैसे हज़रत नूह (अलैहि०) या हज़रत हूद (अलैहि०)। अध्ययन, सूरह आराफ़ से सम्बंधित हिस्सों की बुनियाद पर हो लेकिन क़ुरआन के दूसरे सम्बंधित हिस्से भी नज़र के सामने रहें।

1- अल-आराफ़, 7:59-64

2- अल-आराफ़, 7:65-72

3- अल-आराफ़, 7:73-79

4- अल-आराफ़, 7:80-84

5- अल-आराफ़, 7:85-93

6- अल-आराफ़, 7:94-102

7- हूद, 11:116-123

परिशिष्ट-3 (ज़मीमा)

अध्ययन में मददगार

अनुवाद

कुरआन का शायद कोई अनुवाद कभी भी संतोषजनक नहीं हो सकता। न कुरआन का कोई मुस्तनद (authorised) या मेयारी अनुवाद मुमकिन है। आप नीचे लिखे हुए में से कोई भी प्रयोग कर सकते हैं।

(असल किताब में अंग्रेज़ी अनुवाद दिए गए हैं। यहां अनुवादक की तरफ़ से कुरआन के सही हिन्दी अनुवाद की निशानदही की जा रही है।)

1-अनुवाद कुरआन मजीद — सैयद अबुलआला मौदूदी (रह०)

2-फ़तहुल हमीद — अनुवादः फ़तेह मुहम्मद जालंधरी (रह०)

3-तरजुमतुल कुरआन — शाह अब्दुल क़ादिर (रह०)

4-अल-कुरआनुल करीम — अनुवादः मौलाना महमूदुल हसन (रह०), तफ़सीर, मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी (रह०)

तफ़सीरें

इस विषय के तहत लेखक ने कुछ अंग्रेज़ी तफ़सीरों की तरफ़ इशारा किया है। यहां चन्द अहम और फ़ायदेमन्द हिन्दी तफ़सीरों की निशानदही की जा रही है।

तफ़हीमुल कुरआन	सैयद अबुलआला मौदूदी (रह०)
मआरिफ़ुल कुरआन	मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी (रह०)
तदब्बुरे कुरआन	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही (रह०)
तफ़सीरे माजिदी	अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

मोअजम

अल-मोअजम अल-मफ़हर्स लि अलफ़ाज़िल कुरआनिल करीम

मुहम्मद फुवादुल बाक़ी की इस मोअजम की मदद से, अगर आपको किसी आयत का एक शब्द भी मालूम हो तो आप आयत को कुरआन में तलाश कर सकते हैं। आप के अन्दर इस शब्द के मस्दर (बुनियाद) को मालूम करने की योग्यता होनी चाहिए।

उलूमुल कुरआन

अल-इत्क़ान फ़ी उलूमिल कुरआन   जलालुद्दीन सुयूति

इशारिया

कुरआन की आयतें

हज़रत
मुहम्मद
जीवन परिचय

क़ुरआन
मजीद

आसान तफ़सीर

क्या
क़ुरआन
ईश्वरीय
ग्रन्थ है?

विशेष धर्मों
में
ईश्वर
की
कल्पना

क़ुरआन
और
विज्ञान

ज़रूरी मसाईल
और दुआएं

बाइबल, क़ुरआन
और
नवीन विज्ञान